150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

यज्ञ

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अंक-12 वर्ष-2019

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली

झलकियाँ
2018-19

अंतरराष्ट्रीय
योग
दिवस
21 जून 2018
International
DAY of
YOGA
Yoga for Harmony & Peace

स्वच्छता अभियान
15 सितम्बर - 02 अक्टूबर, 2018
स्वच्छता ही सेवा
भारतीय विदेश व्यापार संस्थान

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
INDIAN INSTITUTE OF FOREIGN TRADE
(Deemed to be University)
Welcome To
Sixth IIFT Conference
On
EMPIRICAL ISSUES IN INTERNATIONAL TRADE & FINANCE
13-14 December 2018, New Delhi
CHIEF GUEST
SHRI SURESH PRABHU
Hon'ble Minister of Commerce & Industry
Government of India

निदेशक की कलम से

प्रिय साथियों,

संस्थान की हिंदी गृह–पत्रिका "यज्ञ" का 12वां वार्षिक अंक आपको समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है। "यज्ञ" पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ संस्थान के विभिन्न विभागों द्वारा निष्पादित बेहतरीन कार्यकलापों को उद्धृत करती है, जिनसे संस्थान को भारत के बिजनेस स्कूलों में उच्च स्थान प्राप्त है। गृह–पत्रिका "यज्ञ" की भूमिका एक ऐसे मंच के रूप में सराहनीय है, जिससे संस्थान के सदस्य अपने ज्ञान और अमूल्य विचारों को अभिव्यक्त कर सकते हैं और रचनात्मक चर्चा का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। संस्थान को राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए समय–समय पर पुरस्कृत किया जाता रहा है। इसके फलस्वरूप, संस्थान ने अपने समकक्षों में सर्वोपरि स्थान अर्जित किया है।

"यज्ञ" पत्रिका के माध्यम से मैं आप सभी को अवगत कराना चाहूंगा कि हम एक दूसरे स्तर पर भी राजभाषा हिंदी के प्रसार के लिए प्रयासरत हैं। हालांकि आईआईएफटी एक शैक्षिक संस्थान है जिसके द्वारा अंतरराष्ट्रीय बिजनेस से संबंधित अनुसंधान अध्ययन तथा डिग्री, डिप्लोमा व प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम विभिन्न माड्यूल्स में चलाए जाते हैं। इन कार्यक्रमों में संस्थान का मुख्य कार्यक्रम एमबीए (आईबी) ऑन कैंपस नियमित तथा सप्ताहांत रूप में चलाया जाता है, जबकि कुछ अन्य कार्यक्रम सप्ताहांत तथा ऑन–लाइन चलाए जाते हैं। इस प्रकार, जब हम अंतरराष्ट्रीय बिजनेस की बात करते हैं तो हमारे लिए अंग्रेजी के चयन की बाध्यता हो जाती है। इसके बावजूद, संस्थान संवैधानिक नियमों का अनुपालन करते हुए इन कार्यक्रमों में सहभागियों की मांग पर हिंदी–अंग्रेजी की मिली–जुली भाषा में शिक्षण–प्रशिक्षण भी प्रदान करता है।

मैं संकाय, छात्रों एवं प्रशासनिक स्टाफ को "यज्ञ" पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन में सहयोग देने तथा संस्थान को उच्चतर स्थान पर स्थापित करने के लिए आभार एवं धन्यवाद प्रकट करता हूँ। "यज्ञ" के प्रकाशन के लिए हिंदी कक्ष तथा संपादन मंडल विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी ऐसे बेहतर एवं सफल प्रयास लगातार किए जाते रहेंगे।

"यज्ञ" के विमोचन के शुभ अवसर पर, मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ तथा इसकी निरंतर उत्कृष्टता की कामना करता हूँ।

मनोज पंत

(प्रो. मनोज पंत)

संदेश

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान की गृह–पत्रिका "यज्ञ" के बारहवें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मुझे अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। संस्थान द्वारा पत्रिका का लगातार प्रकाशन राजभाषा हिंदी के उन्नयन क्रियान्वयन का परिचायक है। संस्थान वाणिज्य विभाग के अंतर्गत एक स्वायत्त शासी निकाय के साथ–साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के तहत मानित विश्वविद्यालय भी है। इस प्रकार, संस्थान की अधिकांश गतिविधियां शिक्षण व प्रशिक्षण से संबंधित हैं, तथापि यह भारत सरकार की राजभाषा नीति के बारे में जारी दिशा–निर्देशों एवं आदेशों के अनुपालन के प्रति वचनबद्धता को दर्शाता है। अपनी समग्र उत्कृष्ट गतिविधियों के फलस्वरूप, संस्थान भारत के अग्रणी बिजनेस स्कूलों में गिना जाता है।

गृह–पत्रिका ''यज्ञ'' का हिंदी भाषा में प्रकाशन, संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्रों का सामूहिक प्रयास इनकी प्रतिभा, हिंदी भाषा के प्रति लगाव तथा राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक है। यह वर्ष भारत सरकार द्वारा गाँधी जयंती के 150वें वर्ष के रूप में विशेष कार्यक्रमों के साथ मनाया जा रहा है। संस्थान ने अपनी गृह–पत्रिका ''यज्ञ'' के इस अंक में एक विशेष अध्याय राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी को समर्पित किया है जिसमें उनके जीवन से मिली अनेक शिक्षाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास, भारत सरकार के साथ एक कदम ताल को प्रमाणित करता है।

आईआईएफटी द्वारा हिंदी पत्रिका ''यज्ञ'' का श्रेष्ठ प्रकाशन अन्य संस्थाओं के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगा। मुझे विश्वास है कि संस्थान भविष्य में इस स्तर को और आगे ले जाएगा। मैं इसके लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

गृह–पत्रिका "यज्ञ" के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक बधाई।

(हरीश कुमार शर्मा)
अपर महानिदेशक (पूर्ति)
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

संदेश

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन को सर्वोपरि मानते हुए हमारा संस्थान हिंदी के प्रचार–प्रसार के प्रयासों की कड़ी में गत एक दशक से गृह–पत्रिका "यज्ञ" का प्रत्येक वर्ष नियमित तौर पर प्रकाशन कर रहा है। यह पत्रिका का 12वां अंक है। पूर्व वर्षों की भांति यह मेरे लिए एक सुखद एवं गर्व का अहसास है।

राजभाषा विभाग द्वारा केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी के क्रियान्वयन को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक वर्ष राजभाषा कार्यक्रम जारी किया जाता है, जिसमें हिंदी कार्यों की अनेक मदें तथा उनका लक्ष्य निर्धारित किया जाता है। आज हम, आप सभी के सहयोग से इन लक्ष्यों को लगभग पूरा करने के मुकाम पर हैं जिसे मैं आप सभी की अर्थात संस्थान की उपलब्धि के रूप में देखता हूँ।

गृह–पत्रिका "यज्ञ" गत वर्षों की भांति एक संक्षिप्त विवरणिका के रूप में प्रकाशित की जा रही है, जिसमें संस्थान के विजन तथा मिशन के अंतर्गत वर्ष 2018–19 के दौरान आयोजित कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक दर्शाया गया है। इसी क्रम में, राजभाषा हिंदी संबंधी गतिविधियों का संपूर्ण लेखा–जोखा भी प्रस्तुत किया गया है जो हमें इस क्षेत्र में और अधिक प्रयास करने हेतु सुझावों एवं उपायों का मार्ग प्रशस्त करेगा। "यज्ञ" में प्रकाशित संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों/कर्मचारियों तथा छात्रों द्वारा प्रस्तुत अनमोल मौलिक रचनाएं उनकी लेखन प्रतिभा एवं राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा को प्रदर्शित करती हैं। मैं हृदय से उन सभी का आभार प्रकट करता हूँ।

मैं "यज्ञ" के सफल प्रकाशन में आप सभी के महत्त्वपूर्ण योगदान तथा इसकी सुरूचिपूर्ण पठन सामग्री एवं सुंदर साज–सज्जा के लिए हिंदी कक्ष और संपादन मंडल को बधाई देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी "यज्ञ" के उत्कृष्ट प्रकाशन में आप सभी का सहयोग सदैव मिलता रहेगा।

धन्यवाद।

प्रमोद गुप्ता

(डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता)
कुलसचिव

संदेश

हमारे संस्थान ने एक लंबे अरसे से राजभाषा हिंदी को बढ़ावा दिया है, उसी कड़ी में गृह–पत्रिका "यज्ञ" के 12वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है जो हम सब के लिए बड़े गर्व और प्रसन्नता का विषय है। राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार हमारे लिए केवल संवैधानिक दायित्व ही नहीं है, अपितु देश की अर्थव्यवस्था के साथ–साथ जन–जीवन को समृद्ध बनाने में भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। अभी तक हम अंग्रेजी के वर्चस्व को देखते रहे हैं, जिसके आधार में देश और दुनिया का व्यवसाय तथा नौकरियां रही हैं। लेकिन आज परिस्थितियां बदली हैं और एक नया परिवेश सामने आया है, जिसमें भारत के बाजारों में विश्व के कॉर्पोरेट घरानों की पैठ भारतीय भाषाओं के माध्यम से ही संभव हो पा रही है। इन भारतीय भाषाओं में हिंदी अपना विशेष स्थान रखती है।

हिंदी भाषा में अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को आत्मसात करने की क्षमता इस भाषा के लिए वरदान सिद्ध हुई है, जबकि हमारे देश की विशुद्ध रूप से वैज्ञानिक कसौटी पर खरी उतरने वाली संस्कृत भाषा केवल कर्म–कांड तथा अध्ययन–अध्यापन तक सिमट कर रह गई है। आज हिंदी अपनी इस सहज प्रकृति के बल पर विश्व की मुख्य भाषाओं में अपना स्थान बनाने जा रही है।

संस्थान का कोलकाता केंद्र ''ग'' क्षेत्र में स्थित है, जहाँ हिंदीतर भाषा–भाषी सदस्य अपनी बोल–चाल तथा शासकीय कार्यों में हिंदी के उपयोग से कोई गुरेज नहीं करते हैं। राजभाषा नियमों के अनुसार,कोलकाता केंद्र नराकास की सभी बैठकों में अपनी सहभागिता दर्ज करता है। केंद्र पर मनाए गए हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं में सभी सदस्य बढ़–चढ़ कर भाग लेते हैं। राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत सभी कागजात द्विभाषी रूप में जारी किए जाते हैं। राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार हिंदी पत्राचार, टिप्पण आदि के लक्ष्य को लगभग शतप्रतिशत पूरा किए जाने का प्रयास किया जाता है। केंद्र के सदस्य "यज्ञ" में प्रकाशन हेतु हिंदी रचनाएं प्रस्तुत करते हैं, जो राजभाषा के प्रचार–प्रसार में उनकी वचनबद्धता को दर्शाता है।

मैं, "यज्ञ" के प्रकाशन को सार्थक बनाने हेतु संस्थान के संकाय, छात्रों एवं अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपने उद्गार व्यक्त करते हुए दिए गए लेखों, कविताओं, कहानियों एवं संस्मरणों के लिए धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। संस्थान का हिंदी अनुभाग इस उत्कृष्ट कार्य की मुख्य कड़ी है जो विशेष साधुवाद का पात्र है।

"यज्ञ" के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

धन्यवाद।

(डॉ. के. रंगराजन)
प्रमुख, कोलकाता केंद्र

संपादकीय

कोई भाषा कभी नहीं मरती। मरती है तो व्यक्ति की उस भाषा को सीखने और काम में लाने की क्षमता, स्वयं भाषा नहीं।

हिंदी का विकास भारत की लोक चेतना का विकास है तथा रूढ़ि–मुक्त भारतीय संस्कृति की मूल चेतना के संरक्षण का इतिहास भी है। हिंदी में वह 'पराक्रम' है, जिसके बलबूते वह वैश्विक नेतृत्व कर सकती है। भारतीय समाज की सम्पूर्ण ऊर्जा तथा सामाजिक संस्कृति की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति हिंदी में सर्वदा विद्यमान रही है। यह वृहत्तर भारत (भारत के बाहर फैले हुए भारतवंशियों को लेकर) की संस्कृति की व्यवहार भाषा है। हिंदी तो आम जन की आवश्यकताओं की भाषा के रूप में प्रकृति की कोख की अमूल्य भेंट है। यह प्रकृति और परिस्थिति दोनों रूपों में सामाजिक संस्कृति की संवाहिका रही है। यह आम जन, तीर्थ, बाज़ार, श्रमिक, क्रांतिकारी सहित हर समूह का नेतृत्व करती रही है।

पिछले एक हज़ार वर्ष से भी अधिक की इसकी यात्रा पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि यह अपनी भावनात्मक प्रकृति, भाषिक चेतना, सांस्कृतिक संतुलन, समृद्ध साहित्य परम्परा और सामाजिक समन्वय की विराट चेष्टा के चलते सम्पर्क भाषा का स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। सम्पर्क भाषा के रूप में इसने भारत की सभी भाषाओं एवं बोलियों को आत्मसात करते हुए एकता के सूत्र को मज़बूती प्रदान की है।

सैकड़ों वर्षों की गुलामी से लड़ते हुए हमने औपनिवेशिक दासता से तो मुक्ति पा ली है, किन्तु भाषाई दासता से मुक्ति प्राप्ति का संग्राम अभी और चलेगा क्योंकि भाषाई दासता से मुक्ति के मार्ग में सबसे बड़ा रोड़ा है अपनी भाषा के प्रति 'हीनताबोध' और उस हीनताबोध के पीछे उस दासता की विकृत सोच, जिसने सांस्कृतिक और नैतिक मेरुदण्ड को तोड़कर रख दिया, हमारी सोच पर ताला जड़ दिया। प्राचीन शिक्षा पद्धति एवं उदात्त सांस्कृतिक परम्पराओं को धूल में मिला दिया। शिक्षा के बड़े केंद्रों जहाँ क्रांति की वैचारिकी विकसित होती है, को हाशिए पर रख दिया गया। उन्हें नष्ट या निस्तेज कर दिया गया, क्योंकि विदेशी आक्रांताओं को यह भली–भाँति पता था कि दुनिया की कोई भी बड़ी क्रांति ऐसी नहीं रही है, जिसके मूल में विद्या के श्रेष्ठ केंद्र न रहे हों। तक्षशिला का एक आचार्य चाणक्य उठते हैं और यवन आक्रमणकारियों को राहें बदलने के लिए मजबूर कर देते हैं। गाँव के एक गड़रिया बालक को उठाते हैं और चक्रवर्ती सम्राट बना देते हैं, जिसने देश की सीमाओं को विस्तारित भी किया और सुरक्षित भी।

इस बात को लॉर्ड मैकाले भली–भाँति जानते थे। अतः उसने भारतीय शिक्षा नीति में आमूल–चूल परिवर्तन कर उपनिवेशवाद की मज़बूत आधारशिला रखी। उसने कहा था ''मैं नहीं कह सकता कि भारत राजनीतिक रूप से हमारे अधीन

रह पाएगा, लेकिन उतना मैं अवश्य कह रहा हूँ कि यह देश राजनीतिक आज़ादी पाने के बाद भी अंग्रेज़ी मानसिकता, सभ्यता और भाषा की दासता से कभी मुक्त न हो सकेगा।'' भाषाई दासता हमारी सोच को कुंठित कर देती है। स्वभाषा या निज भाषा में चिन्तन करना दूभर हो जाता है क्योंकि पराजित मन, पराजित राज्य और पराजित राष्ट्र तब तक पराजित नहीं होता जब तक वह सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखता है।

निज भाषा सिर्फ संवाद और कामकाज के लिए नहीं होती है, परंतु संस्कृति की संवाहिका भी होती है। यह परंपराओं और अपनी प्राचीन सभ्यता पर गर्व करना सिखाती है। ब्रिटिश उपनिवेश के दौरान कुछ गिने–चुने लोगों ने निज भाषा की पैरोकारी की जिसमें प्रथम नाम स्वामी दयानंद सरस्वती का आता है। उनकी मातृभाषा गुजराती थी, संस्कृत के प्रकाण्ड ज्ञाता थे, फिर भी उन्होंने हिंदी को आर्य भाषा घोषित किया और 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसी बहुमूल्य कृति का प्रणयन हिंदी में किया। आज भारत से बाहर यदि हिंदी का ध्वज दुनिया में कहीं भी दिखता है, तो श्रेय आर्य समाजियों को ही जाता है। स्वामी दयानंद सरस्वती का मानना था कि स्वभाषा के बिना स्वराज अधूरा रहेगा और हमारी पारंपरिक विरासत का संरक्षण और संवर्धन स्वभाषा में ही किया जा सकता है। स्वभाषा मौलिकता की जननी है और शिक्षा का माध्यम विदेशी नहीं स्वदेशी भाषा होना चाहिए।

स्वभाषा के दूसरे पक्षधर महात्मा गाँधी थे। वे भी गुजराती थे। वे तो अंग्रेज़ी के प्रयोग करने पर छः महीने के कारावास की सज़ा के पक्षधर थे। भाषा के सवाल पर आज़ादी के बाद सबसे ज़ोरदार ढंग से आवाज़ उठाने वालों में डॉ. राममनोहर लोहिया प्रमुख थे। लोहिया जानते थे कि आज़ादी के बाद सत्ता के संचालन की चाभी जिनके पास होगी, उन्हें आम जनता से कोई सरोकार नहीं होगा। यह उसी वर्ग का विस्तार पटल होगा जिसने ब्रिटिश हुकूमत के साथ सत्ता की साझीदारी की।

औपनिवेशिक मानसिकता संस्कृति की निरंतरता में अवरोध उत्पन्न करती है, इसीलिए विश्व ज्ञान से अवगत भारतीय मनीषियों ने उपनिवेश की भाषा का विरोध किया था, जिनमें अरविंद घोष, तिलक, गोखले, सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गाँधी, निजलिंगप्पा सहित अनेक हिंदीतर भाषी प्रमुख थे। इनका मत था कि अब 'शकुन्तला' और 'गौतम बुद्ध' के साथ 'दुष्यंत' भी पाली में बातचीत करें, ताकि सांस्कृतिक क्रांति का सूत्रपात हो। अन्यथा सत्ता और जनता की भाषा का भेद नकारात्मक लोकतंत्र की ओर इशारा करेगा। भाषा के दमनकारी हथियार का प्रयोग वर्जित हो। अतः आवश्यकता इस बात की है कि उपनिवेश की भाषा का तिलिस्म टूटे और स्वभाषा में प्रारंभिक से लेकर उच्च स्तर तक शिक्षा प्रदान की जाए, ताकि मानव मात्र की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो – ''सा विद्या या विमुक्तये'' का उद्घोष चरितार्थ हो। आत्माभिव्यक्ति का अधिकार मिले।

अपनी भाषा के प्रति 'हीनताबोध' और भाषाई दासता से मुक्ति के संग्राम में संस्थान की ओर से हर वर्ष हिंदी गृह–पत्रिका ''यज्ञ'' का उत्तरोत्तर व उन्नयन प्रकाशन एक सार्थक प्रयास है। राजभाषा हिंदी के इस ''यज्ञ'' में छात्रों सहित आईआईएफटी परिवार द्वारा दी गई एक–एक आहुति राष्ट्र निर्माण में सार्थक कदम साबित होगा।

भारत सरकार के आह्वान पर वर्ष 2019 को महात्मा गाँधी जी की 150वीं जयंती के रूप में मनाया जा रहा है। ''यज्ञ'' में आज के परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए गाँधी जी के सिद्धांतों, उनके आदर्शों की सार्थकता को विशेष स्थान दिया गया है, जो संस्थान की ओर से गाँधी जी को एक सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

मैं हिंदी गृह–पत्रिका ''यज्ञ'' अंक–12 के सफल प्रकाशन में सहभागिता व योगदान के लिए आप सभी का आभार प्रकट करता हूँ।

(राजेन्द्र प्रसाद)
हिंदी अधिकारी

विषय-सूची

अंक-12 **वर्ष 2019**

क्रमांक	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	निदेशक की कलम से		1
2	संदेश – अपर महानिदेशक (पूर्ति), वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय		2
3	संदेश – कुलसचिव		3
4	संदेश – प्रमुख, कोलकाता केंद्र		4
5	संपादकीय		5
6	संस्थान की गतिविधियां		9
7	संस्थान की उपलब्धियां		28
8	राष्ट्रीय कार्यक्रम		34
9	छात्र गतिविधियां		39
10	छात्र उपलब्धियां		44
11	मैं पत्थर में छेद करता हूँ, हिंसा से नहीं, बल्कि गिरने से	एस. बालासुब्रमणियन	47
12	ग्रामीण क्षेत्र ही वास्तविक बाजार है!	अतुल कुमार यादव	48
13	संचार कैसा हो? वाणी का तप	डॉ. राजेंद्र प्रसाद शर्मा	49
14	लघु कविताएं	अदिती शर्मा	50
15	मां का पत्र बच्चों के नाम	अमिता आनंद	51
16	समझौता	डॉ. प्रतीक माहेश्वरी	53
17	सस्टेनेबल लॉजिस्टिक्स	सुकृति महना	54
18	निर्यात बंधु मूक (MOOC) : नई राहें, नई मंजिलें	राकेश कुमार ओझा	55
19	एक भुला दिया गया पैगम्बरः प्रश्न गाँधी की प्रासंगिकता का	प्रदीप	58
20	वर्तमान समय में गाँधी विचारधारा की प्रासंगिकता	अम्बुज गुप्ता	60
21	गाँधीवादी दर्शन और आधुनिक व्यवसाय	मिलिंद कुमार झा	61
22	आधुनिक युग में गाँधी विचारधारा की प्रासंगिकता	दीपांशु राय सक्सेना	64
23	गाँधी जिन्दा है	राम सिंह मीना	66
24	आधुनिक युग में गाँधी विचारधारा की प्रासंगिकता	नीरू वर्मा	68

विषय-सूची

अंक-12 वर्ष 2019

क्रमांक	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
25	वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में गाँधीवादी आंदोलनों की प्रासंगिकता	सुश्री श्रावणी मंडल	70
26	यात्रा संस्मरण	आर.एस. पटवाल	71
27	एक परी की कहानी	दीपक यादव	75
28	राधा बोली		76
29	मरना तो पड़ेगा	अतुल कुमार	77
30	जीने की कला	राम सिंह मीना	78
31	संस्थान में राजभाषा हिंदी	संजय गाँधी	79
32	स्वागत		82
33	संस्थान में हिंदी सप्ताह		84
34	सेवानिवृत्ति पर संस्थान से विदाई		88
35	भारत के संविधान में राजभाषा से संबंधित प्रावधान		89
36	वि.रा.भा.का. समिति सदस्य		

संरक्षक
प्रो. मनोज पंत, निदेशक

संपादकीय मंडल
डॉ. रामसिंह
देशराज
प्रदीप कुमार खन्ना
राजेन्द्र प्रसाद

अनुवाद, प्रूफ शोधन व टाईपिंग
आर.एस.पटवाल

सहयोग
समस्त आई.आई.एफ.टी परिवार

प्रकाशक

हिंदी कक्ष
भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
बी-21, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया
नई दिल्ली-110016

पत्रिका में प्रकाशित लेखों और रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं। संस्थान का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

संस्थान की गतिविधियां

संस्थान के बारे में

भारत सरकार द्वारा विदेश व्यापार संबंधी अनुसंधान और प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करने के उद्देश्य से 2 मई 1963 को भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) की स्थापना की गई थी। संस्थान ने अपनी 56 वर्षों की यात्रा के दौरान शैक्षणिक गतिविधियों के आयाम को व्यापक रूप से विस्तृत किया है जिसमें अंतरराष्ट्रीय व्यापार का पूरा क्षेत्र शामिल है। आज, संस्थान अपने ज्ञान और संसाधन आधारित समृद्ध विरासत के साथ देश और विदेशों में अपने मजबूत पूर्व छात्र नेटवर्क के लिए जाना जाता है।

अपनी चहुँमुखी उपलब्धियों की पहचान के लिए, संस्थान को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा मई 2002 में **'मानित विश्वविद्यालय'** का दर्जा दिया गया और इसे डिग्री देने व अपने स्वयं के डॉक्टरेट कार्यक्रम प्रारंभ करने के लिए प्राधिकृत किया गया।

राष्ट्रीय आकलन और प्रत्यायन परिषद (एनएएसी) ने आईआईएफटी को 3.53 के समग्र सीजीपीए स्कोर के साथ उच्चतम ग्रेड 'ए' से प्रत्यायित किया है। आईआईएफटी एएसीएसबी से प्रत्यायन प्राप्त करने की प्रक्रिया में है और इस संबंध में एएसीएसबी द्वारा आईआईएफटी के आईएसईआर को स्वीकार कर लिया गया है।

वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार के साथ संस्थान का निकट और स्थायी संबंध है तथा यह भारत व विदेशों दोनों स्तर पर प्रमुख औद्योगिक एवं व्यापारिक घरानों और शैक्षिक संस्थानों के साथ संबंध स्थापित कर रहा है। इन संबंधों ने संस्थान को प्रशिक्षण तथा अनुसंधान से संबंधित अपनी गतिविधियों का विस्तार और समग्र रूप से अंतरराष्ट्रीय व्यापार के महत्त्वपूर्ण मुद्दों का समाधान करने में मदद की है।

प्रबंधन बोर्ड, संस्थान का प्रमुख कार्यकारी निकाय है। प्रबंधन बोर्ड में 11 सदस्य हैं और इसकी अध्यक्षता संस्थान के निदेशक करते हैं। सचिव, वाणिज्य विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, संस्थान के अध्यक्ष हैं। संस्थान के निदेशक संस्थान के प्रमुख कार्यकारी हैं और संस्थान के मामलों पर पर्यवेक्षण और नियंत्रण करते हैं।

विजन

आईआईएफटी अंतरराष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में एक उत्कृष्ट अकादमिक केंद्र एवं सुप्रसारित संस्थान है जो व्यक्तिगत, कॉर्पोरेट निकायों, सरकारी संगठनों व समाज को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी व्यावसायिक शिक्षा, प्रशिक्षण तथा अनुसंधान प्रदान करने की दिशा में प्रतिबद्ध है।

मिशन

रचनात्मक अनुसंधान एवं शिक्षण के माध्यम से व्यावसायिक ज्ञान को मजबूत करना, बनाए रखना और पेशेवर बनाना, राष्ट्रीय सीमाओं से परे और देश के भीतर दोनों स्तरों पर संगठनों, संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग स्थापित करके, सीखने के महत्त्व को उजागर करना है।

विभिन्न सर्वेक्षणों में आईआईएफटी रैंकिंग

- **'ए' ग्रेड रैंक 3.53 सीजीपीए** स्कोर के साथ – राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (एनएएसी)।
- **तृतीय स्थान** बिजनेस टुडे–एमडीआरए उत्तर क्षेत्र – बी–स्कूल सर्वेक्षण 2018
- **8वां रैंक** बिजनेस टुडे–एमडीआरए प्लेसमेंट प्रदर्शन – बी–स्कूल सर्वेक्षण 2018
- **10वां रैंक** बिजनेस टुडे–एमडीआरए ओवरऑल रैंकिंग – बी–स्कूल सर्वेक्षण 2018
- **11वां रैंक** वीक–हंसा नेशनल बी–स्कूल सर्वेक्षण 2018

अंतरराष्ट्रीय व्यापार में शिक्षा, अनुसंधान एवं सहयोग को संवर्धित करने और उसमें वृद्धि के लिए आईआईएफटी में निम्नलिखित विभाग एवं केंद्र हैं:–

संस्थान के विभिन्न विभाग व केंद्र

कार्यपालक प्रबंधन कार्यक्रम विभाग (ईएमपीडी)

संस्थान के कार्यपालक प्रबंधन कार्यक्रम विभाग (ईएमपीडी) की कल्पना अंतरराष्ट्रीय बिजनेस से संबंधित मुद्दों तथा व्यापार नीति पर इसके प्रभावों की व्यापक समझ विकसित करने के उद्देश्य से सरकारी अधिकारियों, राजनयिक, उद्यमियों,

निर्यातकों, कॉर्पोरेट क्षेत्र तथा सिविल सोसाइटी के सदस्यों को प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु की गई है। विभाग प्रमुख के रूप में डॉ. सतिन्द्र भाटिया, प्रोफेसर की देख–रेख में ईएमपीडी विभाग ने शुरूआती तौर पर अनेक समकालीन व्यापार तथा आर्थिक मुद्दों जो विभिन्न देशों, विशेष रूप से विकासशील देशों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए एक दृष्टिकोण, विचार व विश्लेषण पैदा करने के लिए कार्यक्रम तैयार किए हैं। विभाग का मुख्य कार्यक्रम अंतरराष्ट्रीय बिजनेस में कार्यपालक स्नातकोत्तर डिप्लोमा (ईपीजीडीआईबी) कार्यक्रम है। अभी तक 13 कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं। यह कार्यक्रम निम्न दो प्रकार से चलाया जाता है:

- **ऑन कैम्पस**
- **हाइब्रिड (ऑन कैम्पस व ऑनलाइन)**

ईपीजीडीआईबी कार्यक्रम 01 अगस्त 2018 से प्रारंभ किया गया जिसमें 106 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य वरिष्ठ व मध्य स्तर के कार्यपालकों को अंतरराष्ट्रीय बिजनेस संबंधी सभी पहलुओं में व्यवस्थित जानकारी देते हुए उनकी प्रबंधकीय क्षमता को बढ़ाना है। इस कार्यक्रम का उद्घाटन वरिष्ठ अल्यूमनी व विभाग की चेयरपर्सन डॉ. (श्रीमती) सतिन्द्र भाटिया तथा आईआईएफटी के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत की उपस्थिति में किया गया।

1 अगस्त 2018 को ईपीजीडीआईबी ऑन कैम्पस कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में संस्थान के गणमान्य सदस्य

अंतरराष्ट्रीय बिजनेस में कार्यपालक स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम – हाइब्रिड 2018–19 की शुरूआत ह्यूजेस के सहयोग से 03 अप्रैल 2018 को की गई। यह कार्यक्रम विशेष रूप से उन अधिकारियों के लिए डिजाइन किया गया है, जिनके लिए नौकरी एवं शहर छोड़ना एक संभव विकल्प नहीं है। यह पाठ्यक्रम 15 महीनों की अवधि में तीन सत्रों में पेश किया जाता है। प्रत्येक सत्र आईआईएफटी दिल्ली कैंपस में एक सप्ताह के कक्षा अध्ययन के साथ प्रारंभ किया जाता है। इस कार्यक्रम में 62 सहभागियों ने भाग लिया।

ईपीजीडीआईबी ऑनलाइन हाइब्रिड कार्यक्रम का समूह फोटो

वर्ष 2008 में आयोजित इंडिया–अफ्रीका फोरम समिट (आईएएफएस–I) में लिए गए निर्णय के अनुसार, अफ्रीकी देशों के लिए अंतरराष्ट्रीय बिजनेस पर क्षमता विकास कार्यक्रमों के आयोजन हेतु भारत सरकार द्वारा संस्थान का चयन किया गया था। वर्ष 2009–2015 के दौरान विभाग द्वारा 36 अफ्रीकी देशों में 40 कार्यपालक क्षमता विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आईएएफएस–III के तहत, वर्ष 2018 में आईआईएफटी द्वारा कार्यपालक क्षमता विकास कार्यक्रमों की श्रृंखला में मेडागास्कर, ट्यूनीशिया, अंगोला व इजिप्ट में कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

मेडागास्कर कार्यक्रम: यह कार्यक्रम में 16–20 अप्रैल 2018 को भारतीय मिशन की सहायता से अंटानानारिवो, मेडागास्कर में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मेडागास्कर सरकार के विभिन्न मंत्रालयों के प्रतिनिधियों, मिस्र में छोटे और मध्यम उद्यमों के विकास को बढ़ाने वाले उद्यमियों और गैर–सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों की एक बड़ी संख्या को एक साथ लाया गया। कार्यक्रम में उक्त विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले 41 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

मेडागास्कर में भारत के राजदूत श्री सुबीर दत्ता और मेडागास्कर सरकार के विदेश मामलों के राज्य सचिव श्री बेरी इमैनुएल रफतारोलाजा द्वारा स्वागत संबोधन दिए गए। दोनों ने मार्च 2018 में भारत के राष्ट्रपति डॉ. राम नाथ कोविंद की ऐतिहासिक यात्रा का उल्लेख किया। डॉ. (श्रीमती) सतिंदर भाटिया, चेयरपर्सन ने महामहिम को संस्थान द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न

प्रकार के ऑन–कैंपस और ऑनलाइन कार्यक्रमों के बारे में अवगत कराया।

समापन समारोह की अध्यक्षता चांसरी के प्रमुख श्री दिग्विजय नाथ, भारत के दूतावास, अंटानानारिवो, मेडागास्कर और विदेश मामलों के मंत्रालय के समन्वयक जनरल (एमएमएफए) श्री मोमीनजतोवो ने की, जिन्होंने भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, नई दिल्ली के प्रोफेसरों के प्रति अत्यधिक संतुष्टि और प्रशंसा व्यक्त की। अधिकतम 5 अंक के पैमाने पर, कार्यक्रम की समग्र प्रभावशीलता 4.46 पर रेटेड थी।

16–20 अप्रैल 2018 के दौरान मेडागास्कर में आयोजित क्षमता विकास कार्यक्रम के सहभागियों के साथ समूह फोटो

ट्यूनीशिया कार्यक्रमः उपर्युक्त निर्णय के क्रम में अंतरराष्ट्रीय बिजनेस पर क्षमता विकास कार्यक्रमों की श्रृंखला में संस्थान के कार्यपालक प्रबंधन कार्यक्रम विभाग (ईएमपीडी) ने ट्यूनीशिया में भारतीय मिशन की सहायता से 24 से 28 सितंबर 2018 के दौरान क्षमता विकास कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में निर्यातकों, व्यापार और उद्योग मंत्रालय, वित्त मंत्रालय, विदेश मंत्रालय के सरकारी अधिकारियों और उभरते उद्यमियों का प्रतिनिधित्व करने वाले 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। 24 सितंबर 2018 को शुरू हुए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में स्वागत भाषण ट्यूनीशिया में भारत के राजदूत श्री प्रशांत पाइस, राज्य सचिव श्री हेटम फेरजानी और सीईपीईएक्स के महाप्रबंधक श्री समीर अज्जी द्वारा दिया गया। गणमान्य लोगों ने पर्यटक आगमन सहित भारत और ट्यूनीशिया के बीच व्यापार और निवेश की संभावनाओं पर जोर दिया। ट्यूनीशिया में भारत के लिए जबरदस्त सद्भावना है और यह दोनों देशों के संबंधों को मजबूत करने में अपनी भूमिका निभा रहा है।

24–28 सितंबर 2018 के दौरान ट्यूनीशिया में आयोजित क्षमता विकास कार्यक्रम के सहभागियों के साथ समूह फोटो

डॉ. (श्रीमती) सतिंदर भाटिया, अध्यक्ष, कार्यकारी प्रबंधन कार्यक्रम विभाग, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान ने डब्ल्यूटीओ मुद्दों पर संस्थान में समृद्ध शोध और विभिन्न ऑन–कैंपस एवं ऑनलाइन पेश किए जा रहे विविध विषयों के बारे में महामहिम को अवगत कराया।

सीएलएमवी देशों के लिए 'अंतरराष्ट्रीय व्यापार' में डिप्लोमा कार्यक्रम

अफ्रीकी देशों में चलाए जा कार्यक्रमों के अतिरिक्त, अप्रैल 2017 में संस्थान के दिल्ली परिसर में कंबोडिया, लाओस, म्यांमार और वियतनाम (सीएलएमवी देश) के प्रतिनिधियों के लिए इंटरनेशनल ट्रेड (पीजीडीआईटी) में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा प्रोग्राम प्रारंभ किया गया। इसी कार्यक्रम के द्वितीय बैच का उद्घाटन म्यांमार व वियतनाम से आए 19 सहभागियों के साथ 20 जून 2018 को किया गया। उद्घाटन के अवसर पर वियतनाम से भारत, नेपाल व भूटान के राजदूत श्री टॉन सिन्ह थान तथा भारत में म्यांमार के राजदूतावास से मिनिस्टर काउन्सलर श्री आंग आंग मायो थीन उपस्थित थे।

20 जून 2018 को सीएलएमवी प्रतिनिधियों के लिए चलाए जा रहे इंटरनेशनल ट्रेड कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह

सीएलएमवी प्रतिनिधियों के साथ समूह फोटो

प्रबंधन में स्नातक अध्ययन विभाग (जीएसएमडी)

प्रबंधन में स्नातक अध्ययन विभाग (जीएसएमडी) संस्थान के प्रमुख कार्यक्रम एमबीए (आईबी) पूर्णकालिक एवं सप्ताहंत के संचालन हेतु एक नोडल विभाग है। एमबीए (आईबी) सप्ताहंत डिग्री कार्यक्रम विशुद्ध रूप से कार्यपालकों को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। विभाग द्वारा उपर्युक्त मुख्य कार्यक्रमों के साथ–साथ सप्ताहंत 'आयात–निर्यात में प्रमाण–पत्र कार्यक्रम' भी चलाया जाता है। यह विभाग प्रशासनिक और शैक्षिक सहयोग भी प्रदान करता है। संस्थान ने अपने प्रमुख कार्यक्रम एमबीए (आईबी) 2019–21 के लिए आवेदन आमंत्रित किए थे, जिसके लिए कोलकाता सहित दिल्ली परिसर में 420 सीटों के लिए 61,969 आवेदन प्राप्त हुए। इस कार्यक्रम के लिए संस्थान द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर 20 शहरों में एक कॉमन परीक्षा आयोजित की जाती है। ये सभी कार्यक्रम जीएसएम विभाग की चेयरपर्सन डॉ. सुनीथा राजू की देख–रेख में सुचारू रूप से संचालित किए जा रहे हैं।

आईआईएफटी के प्रमुख कार्यक्रम एमबीए (आईबी) 2018–20 का उद्घाटन समारोह

प्रबंधन विकास कार्यक्रम विभाग

प्रबंधन विकास कार्यक्रम विभाग संस्थान के प्रमुख विभागों में से एक है जो उद्योग, सरकारी क्षेत्र के कार्यालयों एवं निर्यात संवर्धन निकायों के लिए विभिन्न दीर्घ एवं लघु अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है। संस्थान का यह विभाग सरकार, सार्वजनिक क्षेत्र तथा कॉर्पोरेट से लेकर देश तथा विदेश के सभी स्तरों पर प्रबंधकों एवं अधिकारियों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक ज्ञान संसाधन विभाग के रूप में उभरा है। प्रोफेसर डॉ. राम सिंह, विभागाध्यक्ष के मार्गदर्शन में विभाग की सभी गतिविधियों का संचालन किया जाता है। मुख्य तौर पर, एमडीपी विभाग निम्नलिखित श्रेणियों में कार्यक्रम आयोजित करता है जैसे :–

- **खुले कार्यक्रम**
- **प्रायोजित कार्यक्रम**
  - क) कॉर्पोरेट / सार्वजनिक उपक्रमों के लिए
  - ख) आईएएस, आईपीएस, आईएफएस, आईआरएस, आईटीएस, आदि सरकारी अधिकारियों के लिए
  - ग) निजी कंपनियों के लिए
- **सहयोगात्मक कार्यक्रम**
- **हाइब्रिड प्रोग्राम**

विभाग द्वारा उद्योग के कार्यपालकों, सरकार में अधिकारियों और नीति निर्माताओं के लिए अंतरराष्ट्रीय व्यापार के विभिन्न क्षेत्रों यथा अंतरराष्ट्रीय विपणन एवं व्यापार संचालन, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय प्रबंधन, डॉलर / रुपया मूल्यांकन, अंतरराष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स तथा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला, अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं वार्ता, डब्ल्यूटीओ तथा भारत और विदेश में व्यापार नीतियों के कार्यक्रमों का एक विस्तृत स्पेक्ट्रम प्रदान किया जाता है। इन कार्यक्रमों को बदलते वैश्विक कारोबारी माहौल और अंतरराष्ट्रीय मानकों को ध्यान में रखते हुए बनाया जाता है, जो प्रतिभागियों के कौशल तथा दक्षता को विकसित करने में मदद करते हैं। इसके अतिरिक्त, एमडीपी विभाग विभिन्न संगठनों के लिए नेतृत्व, संचार कौशल, ग्राहक संबंध प्रबंधन, आदि जैसे कौशल के क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करता है।

यह विभाग अखिल भारतीय सेवाओं और केंद्रीय सरकार की अन्य सेवाओं यथा भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय वन सेवाएं,

भारतीय विदेश सेवाएं, भारतीय पुलिस सेवाएं, भारतीय राजस्व सेवाएं, भारतीय आर्थिक सेवाएं और भारतीय सांख्यिकीय सेवाएं, आदि से संबंधित वरिष्ठ और मध्य स्तर के सरकारी अधिकारियों के लिए आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आयोजन करता है।

14–18 जनवरी 2019 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भारतीय सांख्यिकीय सेवा अधिकारियों के साथ आईआईएफटी के संकाय सदस्य

एमडीपी विभाग भारतीय ट्रेड सर्विसेज प्रोबेशनर्स के लिए बुनियादी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एक नोडल संस्थान है। उनके प्रशिक्षण के सफल समापन के पश्चात, आईटीएस प्रोबेशनर्स को डीजीएफटी के विभिन्न कार्यालयों में सहायक डीजीएफटी के रूप में तैनात किया जाता है जो भारत की विदेश व्यापार नीति के निर्माण और कार्यान्वयन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारतीय व्यापार सेवा वर्ष 2018–19 के परिवीक्षार्थियों के साथ माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद व आईआईएफटी के संकाय सदस्य व वरिष्ठ अधिकारी

इसके अतिरिक्त, भारत सरकार के डीजीएफटी के निर्देश पर, एमडीपी विभाग ने निर्यात बंधु योजना के तहत देश भर में उभरते निर्यातकों और उद्यमियों के लिए निर्यात–आयात व्यवसाय पर – "निर्यात बंधु आपके डेस्कटॉप पर" ऑनलाइन प्रमाणपत्र कार्यक्रमों की एक श्रृंखला शुरू की है। अब तक, लगभग 1200 निर्यातकों और उद्यमियों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

इसी क्रम में भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय, डीजीआर के निर्देश पर, एमडीपी विभाग पिछले 2 वर्षों से, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन के क्षेत्रों में सशस्त्र बलों के कर्मियों के पुनर्वास के उद्देश्य से पेशेवर पाठ्यक्रमों का संचालन कर रहा है।

रक्षा मंत्रालय, डीजीआर के अधिकारीगण व आईआईएफटी निदेशक प्रो. मनोज पंत सहित वरिष्ठ संकाय सदस्यगण

अंतरराष्ट्रीय सहयोग एवं क्षमता विकास (आईसीसीडी) विभाग

आईआईएफटी का अंतरराष्ट्रीय सहयोग एवं क्षमता विकास (आईसीसीडी) विभाग देशज और अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों व संस्थानों के साथ शैक्षिक गठबंधन कायम करके संस्थान में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे संयुक्त प्रशिक्षण और अनुसंधान कार्यक्रम आयोजित किए जा सकें।

आईआईएफटी का दुनिया भर के 25 विश्वविद्यालयों/बी–स्कूलों के साथ सहयोग है। भागीदार संस्थानों के साथ सहयोग के प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं:–

- छात्र विनिमय (नियमित एमबीए–आईबी)।
- संकाय विकास कार्यक्रम
- प्रशिक्षण कार्यक्रम/अध्ययन भ्रमण
- संयुक्त अनुसंधान

आईआईएफटी के प्रमुख भागीदारों में निम्नलिखित संस्थान/विश्वविद्यालय शामिल हैं:–		
यूएसए		फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी
कनाडा		ब्रॉक यूनिवर्सिटी
यूके		स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रॉडफोर्ड
फ्रांस		स्केमा बिजनेस स्कूल आईईएसईजी स्कूल ऑफ मैनेजमेंट रेन्नेस स्कूल ऑफ बिजनेस ग्रेनोबल स्कूल ऑफ मैनेजमेंट ईएम–स्ट्रासबर्ग ग्रेजुएट स्कूल ऑफ मैनेजमेंट
इटली		यूनिवर्सिटी ऑफ इनसुब्रिया यूनिवर्सिटा कमर्शियल एल बोकोनी
जर्मनी		यूनिवर्सिटेट डेस सारलैंड्स फौर्जाइम यूनिवर्सिटी
फिनलैंड		हनकेन स्वीडिश स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन
स्पेन		यूनिवर्सिटी ऑफ मैड्रिड यूनिवर्सिटी ऑफ बार्सिलोना

सदस्यता

आईआईएफटी निम्नलिखित अंतरराष्ट्रीय/राष्ट्रीय संगठनों का सदस्य है:–

- एकेडमी ऑफ इंटरनेशनल बिजनेस (एआईबी)।
- द एसोसिएशन टु एडवांस कॉलेजिएट स्कूल्स ऑफ बिजनेस (एएसीएसबी इंटरनेशनल)।
- इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ ट्रेड ट्रेनिंग ऑर्गेनाइजेशन्स (आईएटीटीओ)।
- द यूरोपियन फाउंडेशन फॉर मैनेजमेंट डेवलपमेंट (ईएफएमडी)।
- द ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क इंडिया (आजीवन सदस्यता)।
- द असोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज (एआईयू)।
- ऑल इंडिया मैनेजमेंट असोसिएशन (एआईएमए)।

अध्ययन दौरा: आईसीसीडी विभाग द्वारा इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस नेटवर्किंग, सेंट पीटर्सबर्ग, रूस के साथ 24 से 30 जून 2018 के दौरान ''रूस में बिजनेस करने'' पर छह दिन का प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस संस्थान के साथ आईआईएफटी का अकादमिक सहयोग है। यह पाठ्यक्रम 25 घंटे का था जिसमें राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और रूसी व्यापार के अन्य कारक, रूसी बाजार प्रविष्टि रणनीतियां, एक–दूसरे के सांस्कृतिक मुद्दों के अलावा रूसी बाजार में प्रवेश परियोजना को शामिल किया गया था। कार्यक्रम में आईआईएफटी के एमबीए (आईबी) 2016–19, एमबीए (आईबी) 2017–19, ईपीजीडीआईएम 2017–19 और ईपीजीडीआईबी (एच) 2018–19 कार्यक्रमों के छः छात्रों ने भाग लिया।

24–30 जून 2018 के दौरान ''रूस में बिजनेस करने'' पर आयोजित छः दिन के प्रमाण–पत्र पाठ्क्रम का समूह फोटो

उद्घाटन समारोह में संस्थान के निदेशक प्रो. मनोज पंत, चेयरपर्सन (आईसीसीडी) डॉ. रवि शंकर, सीईओ (आईआईबीएन) डॉ. ततियाना वलासोवा और रूसी संघ के विदेश मंत्रालय के काउंसलर श्री निकोलाई लुचिचेव ने भाग लिया। यह कार्यक्रम कक्षा में व्याख्यान और उद्योग एवं सेंट पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय के प्रमुख वक्ताओं के साथ विचार–विमर्श, कंपनियों के भ्रमण और शहर एवं संग्रहालयों के सांस्कृतिक दौरों का एक मिश्रण था। कार्यक्रम की उच्च गुणवत्ता सामग्री तथा उत्कृष्ट आतिथ्य की छात्रों द्वारा बहुत सराहाना की गई।

अनुसंधान विभाग

अनुसंधान और प्रशिक्षण के बीच एक मजबूत और व्यापक इंटरफेस पर संस्थागत रूप से विशेष बल दिए जाने के कारण, आईआईएफटी की गतिविधियों के क्रम में अनुसंधान एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। संस्थान अब तक 700 से अधिक शोध अध्ययन और सर्वेक्षण कर चुका है। इसके अतिरिक्त, विभाग ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार स्थितियों का विश्लेषण करने और उचित कॉर्पोरेट रणनीतियों के विकास में पर्याप्त परामर्श क्षमता विकसित की है। संस्थान के अनुसंधान विभाग द्वारा एक व्यावसायिक पीएच.डी. कार्यक्रम भी चलाया जाता है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत पीएच.डी. में डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किए गए छात्रों को शैक्षणिक संस्थानों, सरकारी विभागों एवं प्रमुख कॉर्पोरेट घरानों में उच्च पदों पर नियुक्त किया जाता है। आईआईएफटी में चलाए जा रहे पीएच.डी. कार्यक्रम के माध्यम से व्यापार तथा अन्य सम्मेलन एवं संकाय द्वारा संचालित अंतर–विभागीय अनुसंधान और परामर्शी परियोजनाओं पर फोकस किया जा रहा है।

अनुसंधान गतिविधियों को अपने स्वयं के अनुसंधान कार्यक्रमों के रूप में तथा अपने ग्राहकों के आग्रह पर किया जाता है जिसमें केंद्र एवं राज्य सरकारें, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम और विश्व बैंक, एफएओ, अंतरराष्ट्रीय व्यापार केंद्र, यूएनसीटीएडी, डब्ल्यूटीओ, यूएनआईडीओ, ईएससीएपी, जर्मन डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट आदि जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठन शामिल हैं। शोध के वर्तमान पोर्टफोलियो में शामिल हैं: व्यापार नीति अनुसंधान, कार्यात्मक अनुसंधान, अधिमान्य और विदेश व्यापार समझौते, सर्वेक्षण अनुसंधान और डेटाबेस विकास।

पीएच.डी. कार्यक्रम

पीएच.डी. कार्यक्रमों की श्रृंखला में दिनांक 10 सितंबर 2018 को प्रारंभ किए गए कार्यक्रम में 25 छात्र (19 अंशकालिक और 6 पूर्णकालिक) शामिल हुए हैं। अक्टूबर 2018 तक पीएच.डी. के कुल 132 पंजीकृत छात्र अर्थात पूर्णकालिक पीएच.डी. छात्र – 13 (यूजीसी जेआरएफ–04) और अंशकालिक पीएच.डी. छात्र – 119 हैं। अब तक संस्थान 33 पीएच.डी. डिग्री प्रदान कर चुका है।

10 सितंबर 2018 को पीएच.डी. कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में संबोधित करते हुए आईआईएफटी के निदेशक प्रो. मनोज पंत

पीएच.डी. कार्यक्रम के सहभागी

सम्मेलन

अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वित्त में अनुभवजन्य मुद्दों पर छठा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन (ईआईआईटीएफ)

संस्थान ने अपने दिल्ली परिसर में 13–14 दिसंबर 2018 के दौरान अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वित्त (ईआईआईटीएफ) में अनुभवजन्य मुद्दों पर अपने छठे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन का उद्घाटन प्रो. एलन एल. विंटर्स, यूनाइटेड किंगडम के ससेक्स विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र के प्रतिष्ठित प्रोफेसर एवं अंतरराष्ट्रीय व्यापार के एक अनुभवजन्य तथा नीति विश्लेषण के प्रमुख विशेषज्ञ तथा प्रो. जोशुआ

ऐज़ेन्मैन, दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय संबंधों एवं अर्थशास्त्र के एक विशिष्ट प्रोफेसर, राष्ट्रीय आर्थिक अनुसंधान ब्यूरो के लिए अनुसंधान सहयोगी तथा जर्नल ऑफ इंटरनेशनल मनी एंड फाइनेंस के सह–संपादक ने किया।

13–14 दिसंबर 2018 के दौरान छठे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर स्वागत भाषण देते हुए आईआईएफटी के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत

भारत सरकार के वाणिज्य सचिव, डॉ. अनूप वधावन द्वारा संबोधित किया गया। इस कार्यक्रम में प्रो. मनोज पंत, निदेशक आईआईएफटी और प्रो. राकेश मोहन जोशी, अध्यक्ष (अनुसंधान) उद्घाटन समारोह में उपस्थित थे। सम्मेलन को शिक्षा एवं नीति अनुसंधान समुदाय से व्यापक प्रतिक्रिया मिली और भारत तथा विदेशों के विश्वविद्यालयों व अनुसंधान संस्थानों से कुल 198 पत्र प्रस्तुत किए गए, जिनमें से कुल 150 पत्रों का चयन किया गया।

सुश्री अनीशा चिटगुपी, इंस्टीट्यूट फॉर सोशल एंड इकोनॉमिक चेंज (आईएसईसी), बैंगलोर को ''भारत के चालू खाता घाटे की स्थिरता: प्रेषण प्रवाह और सॉफ्टवेयर सेवा निर्यात की भूमिका'' पर उनके पेपर के लिए ''बेस्ट डॉक्टोरल पेपर अवार्ड'' प्रदान किया गया।

13–14 दिसंबर 2018 के दौरान छठे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में सुश्री अनीशा चिटगुपी को ''बेस्ट डॉक्टोरल पेपर अवार्ड'' प्रदान करते हुए भारत सरकार के वाणिज्य सचिव व संस्थान के अध्यक्ष, डॉ. अनूप वधावन

पूर्व छात्र कार्य विभाग

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) द्वारा अपने पूर्व छात्रों की गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2018 में एक समन्वयक के रूप में ''पूर्व छात्र कार्य विभाग'' की स्थापना की गई है। संस्थान के प्रोफेसर डॉ. संजय रस्तोगी को विभाग के प्रमुख तथा सहायक प्रोफेसर डॉ. हिमानी गुप्ता व डॉ. प्रतीक माहेश्वरी को संकाय समन्वयक के रूप में दायित्व सौंपा गया है। आज आईआईएफटी के 50,000 से अधिक पूर्व छात्र विश्व के लगभग 30 देशों में विख्यात संस्थाओं/संगठनों के संचालन में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं जो संस्थान के लिए गौरव व सम्मान का विषय है। आईआईएफटी के पूर्व छात्र, संस्थान का देश के अग्रणी बी–स्कूलों में स्थान बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। पूर्व छात्र व संस्थान के बीच एक गहरा भावनात्मक संबंध है जिसे व्यावहारिक रूप प्रदान करने के उद्देश्य से समय–समय पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

पूर्व छात्र कार्य विभाग के लक्ष्य एवं उद्देश्य निम्न प्रकार हैं:

- पूर्व छात्रों और आईआईएफटी के बीच एक आजीवन बौद्धिक और भावनात्मक संबंध को बढ़ावा देना।
- न केवल पूर्व छात्रों और आईआईएफटी के बीच, अपितु पूर्व छात्रों के बीच भी पारस्परिक लाभकारी बातचीत व सहयोग को स्थापित करना।
- आईआईएफटी की सामाजिक उपयोगिता बढ़ाने के लिए संस्थान की गतिविधियों और विकास में समर्पित पूर्व छात्रों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना।
- संस्थागत विकास तथा इस संबंध में विचारों के आदान–प्रदान के लिए पूर्व छात्रों को एक मंच प्रदान करना।
- आईआईएफटी को और अधिक सफलता की ओर अग्रसर करने के लिए प्रतिष्ठित पूर्व छात्रों से जानकारी प्राप्त करना।
- विश्व भर में कार्यरत सभी पूर्व छात्रों की अद्यतन और विस्तृत जानकारी रखना।

एमए अर्थशास्त्र में डिग्री कार्यक्रम

अर्थशास्त्र में उन्नत ज्ञान प्रदान करने के लिए वर्ष 2018 से आईआईएफटी में एमए अर्थशास्त्र (व्यापार और वित्त में

विशेषज्ञता) में डिग्री कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। आईआईएफटी द्वारा पेश एमए अर्थशास्त्र डिग्री कार्यक्रम को भारत में सबसे पसंदीदा मास्टर प्रोग्राम बनने की संभावना देखी गई है। पाठ्यक्रम में पहले दो सेमेस्टर अर्थशास्त्र के सबसे प्रमुख स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के बराबर होंगे। इन सेमेस्टर के दौरान सूक्ष्मअर्थशास्त्र, मैक्रोइकॉनॉमिक्स, गणित अर्थशास्त्र और अर्थमिति में प्रमुख सैद्धांतिक मॉडल पढ़ाए जाएंगे। अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र और कॉर्पोरेट वित्त पर दो परिचयात्मक पाठ्यक्रम भी व्यापार और वित्त विशेषज्ञता की प्रस्तावना के रूप में पढ़ाए जाएंगे। अंतिम दो सेमेस्टर पूरी तरह से अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र और वित्त पर केंद्रित होंगे। इसी क्रम में सैद्धांतिक मॉडल निर्माण के साथ–साथ अनुभवजन्य विश्लेषण पर उन्नत विषयों को इन पाठ्यक्रमों के दौरान प्रस्तुत किया जाएगा।

एमए अर्थशास्त्र डिग्री कार्यक्रम का उद्घाटन

शिक्षाविदों और कॉर्पोरेट के लिए व्यापार और वित्त रोमांचक क्षेत्र बन गए हैं। यह पाठ्यक्रम छात्रों को अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वित्तीय लेनदेन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शामिल कॉर्पोरेट क्षेत्र में व्यापार के मुद्दों पर उत्कृष्ट व्यापार नीति निर्माता और प्रमुख रणनीतिकार बनने के लिए तैयार करेगा। छात्रों को उपकरणों के एक सेट के साथ सुसज्जित करना, जो उन्हें वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने में मदद करेगा। छात्रों को अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र में विशेष ज्ञान के साथ पूर्णकालिक शिक्षाविद बनने के लिए तैयार करना है।

डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र

संस्थान में डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र, डब्ल्यूटीओ बातचीत–सम्बद्ध ज्ञान और प्रलेखन के एक स्थाई संग्रहस्थल के रूप में कार्य करने के अतिरिक्त, सामान्यतः व्यापार में और विशेष रूप से डब्ल्यूटीओ के मामले में एक अनुसंधान इकाई है, जिसकी स्थापना वर्ष 1999 में की गई थी। भारत सरकार द्वारा इसकी स्थापना डब्ल्यूटीओ व अन्य मंचों यथा मुक्त तथा प्राथमिकतापूर्ण व्यापार करार (एफटीए/पीटीए) और विस्तृत आर्थिक सहयोग करार (सीईसीए), विभिन्न व्यापार वार्ताओं में अपनी स्थिति विकसित करने के उद्देश्य से की गई थी। यह केंद्र नियमित रूप से भारत सरकार के लिए अनुसंधान और स्वतंत्र विश्लेषणात्मक इनपुट उपलब्ध कराता है। यह केंद्र डब्ल्यूटीओ क्षेत्र में एक स्वतंत्र थिंक टैंक के रूप में विकसित हुआ है। केंद्र ने अपने व्यापार संसाधन केंद्र में, विशेष रूप से भारत से संबंधित महत्वपूर्ण डब्ल्यूटीओ दस्तावेजों का एक विशेष ई–भंडार भी तैयार किया है।

इसके अतिरिक्त, यह केंद्र सक्रिय रूप से उद्योग और सरकारी इकाइयों के साथ–साथ अन्य हितधारकों के साथ अपने आउटरीच और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के माध्यम से संगोष्ठी, कार्यशालाओं, विषय विशिष्ट बैठकों, आदि का आयोजन कर रहा है। केंद्र अपने शीर्ष अधिकारियों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए कुछ व्यावसायिक घरानों के साथ काम कर रहा है, ताकि वे भारत सरकार की नीति निर्माण प्रक्रिया में प्रभावी रूप से भाग ले सकें और इसमें योगदान कर सकें। श्री अभिजीत दास, केंद्र प्रमुख की देख–रेख में सभी कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

संस्थानों व एजेंसियों के साथ नेटवर्क

केंद्र ने यूनिस्केप, बैंकॉक, यूएनडीपी, आरसीसी, बैंकॉक, राष्ट्रमंडल सचिवालय लंदन, आईसीटीएसडी आदि के साथ नेटवर्क स्थापित किया है। इसी क्रम में श्रीलंका इंस्टीट्यूट ऑफ पॉलिसी स्टडीज (IPS), साउथ एशिया वॉच ऑन ट्रेड, इकोनॉमिक्स एंड एनवायरनमेंट (SAWTEE), नेपाल और साउथ एशियन नेटवर्क ऑन इकोनॉमिक मॉडलिंग (SANEM), बांग्लादेश के साथ संस्थागत टाईअप के साथ दक्षिण एशियाई क्षेत्र में कुछ पहलें की हैं।

वर्ष 2018–19 के दौरान डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में मुख्य रूप से निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए:–

डब्ल्यूटीओ के चुनिंदा मुद्दों यथा कृषि, सेवाएं, ट्रिप्स एवं आरटीए पर विशेष प्रशिक्षण कार्यकम

केंद्र ने 14–23 जनवरी 2019 के दौरान अंतराष्ट्रीय व्यापार पर अनुसंधान केंद्र, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान के साथ भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) के सहयोग से डब्ल्यूटीओ के चुनिंदा मुद्दों यथा कृषि, सेवाएं, ट्रिप्स एवं आरटीए पर एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में आईआईएफटी की ओर से निदेशक, प्रोफेसर मनोज पंत ने भाग लिया।

''डब्ल्यूटीओ के चुनिंदा मुद्दों यथा कृषि, सेवाएं, ट्रिप्स एवं आरटीए'' पर एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम 14–23 जनवरी 2019 में आईआईएफटी निदेशक, प्रोफेसर मनोज पंत, केंद्र प्रमुख श्री अभिजीत दास व प्रो. डॉ. मुरली कल्लुमल

इस कार्यक्रम का उद्देश्य अल्जीरिया, बारबाडोस, क्यूबा, इरिट्रिया, इथियोपिया, केन्या, किर्गिस्तान, मॉरीशस, पेरू, श्रीलंका, सूडान, सीरिया, ताजिकिस्तान, थाईलैंड, ट्यूनीशिया और तुर्की आदि विकासशील और विकसित देशों के वाणिज्य एवं व्यापार मंत्रालयों के अधिकारियों का ज्ञानवर्धन करना था। कार्यक्रम में इन देशों के 24 अधिकारियों ने भाग लिया।

आईटीसी–सीडब्ल्यूएस प्रोजेक्ट के अंतर्गत अफगानिस्तान के व्यापार क्षमता निर्माण हेतु परिचयात्मक प्रशिक्षण (द्वितीय बैच) पर रिपोर्ट कार्यक्रम

डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र ने 27–31 अगस्त 2018 के दौरान आईटीसी द्वारा वित्त पोषित द्वि–वर्षीय परियोजना के हिस्से के रूप में अफगानिस्तान से 20 प्रतिभागियों के द्वितीय बैच के लिए परिचयात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। अफगानिस्तान के प्रतिभागियों के अतिरिक्त, श्री डोरजी पेल्ज़ोर, रॉयल इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, भूटान ने भी इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। इनके अतिरिक्त, अफगानिस्तान से भाग लेने वालों में अफगानिस्तान स्थित दानिश किफायतुल्लाह, कार्यक्रम सहायक, आईटीसी और भारत में अफगानिस्तान दूतावास के मोहम्मद मंसूर सहक, वाणिज्यिक अताशे भी शामिल थे। कार्यक्रम का उद्घाटन भारत सरकार के वाणिज्य सचिव डॉ. अनूप वधावन ने किया। भारत में अफगानिस्तान के राजदूत शैदा मोहम्मद अब्दाली और डॉ. मनोज पंत, निदेशक आईआईएफटी ने इस अवसर पर अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज की।

''परिचयात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम 27–31 अगस्त 2018 में वाणिज्य सचिव डॉ. अनूप वधावन, आईआईएफटी निदेशक, प्रोफेसर मनोज पंत, केंद्र प्रमुख श्री अभिजीत दास, वरिष्ठ संकाय सदस्य तथा सहभागियों का समूह फोटो

जिनेवा में 7–8 जून को ट्रिप्स–सीबीडी लिंकेज पर आयोजित सम्मेलन में भारत का नेतृत्व

डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान और दक्षिण केंद्र (जिनेवा स्थित एक अंतर–सरकारी संगठन) के साथ 7–8 जून को जिनेवा में ट्रिप्स–सीबीडी (बौद्धिक संपदा अधिकारों का व्यापार–संबंधी पक्ष – जैविक विविधता पर सम्मेलन) लिंकेज पर एक दो–दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन में भारत ने एक प्रमुख भूमिका निभाई। इस दौरान भारत ने पारंपरिक ज्ञान की चोरी रोकने संबंधी मुद्दों पर डब्ल्यूटीओ से चर्चा को फिर से सक्रिय करने की मांग की। ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका आदि कुछ अन्य देश भी इस महत्वपूर्ण पहल पर भारत के साथ जुड़े रहे। इस विषय पर कार्यरत अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रशंसित शिक्षाविदों, जिनेवा–आधारित वार्ताकारों और पूंजी आधारित विशेषज्ञों को एक साथ लाया गया, जिसमें ब्राजील, चीन, भारत, इंडोनेशिया, पेरू, फिलीपींस, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, स्विट्जरलैंड और अमेरिका सहित बड़ी संख्या में देशों के संसाधित व्यक्तियों, हितधारकों एवं विशेषज्ञों ने भाग लिया।

जिनेवा में ''ट्रिप्स–सीबीडी लिंकेज'' पर आयोजित कार्यक्रम (7–8 जून 2018)

ट्रिप्स सीबीडी लिंकेज भारत और अन्य विकासशील देशों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जैव–चोरी का समाधान करना चाहता है। यह लंबे समय से चली आ रही मांग है कि मौजूदा पारंपरिक ज्ञान और संबद्ध आनुवंशिक संसाधनों के लिए पेटेंट नहीं दिया जाना चाहिए।

भारतीय व्यापार और निवेश कानून केंद्र (सीटीआईएल)

यह केंद्र वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा भारतीय विदेश व्यापार संस्थान में स्थापित किया गया है। केंद्र का प्राथमिक उद्देश्य भारत सरकार व अन्य एजेंसियों को अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश कानून से संबंधित कानूनी मुद्दों का ठोस और गहन विश्लेषण प्रदान करना है। केंद्र का कार्य अंतरराष्ट्रीय आर्थिक कानून के विभिन्न क्षेत्रों जैसे डब्ल्यूटीओ कानून, निवेश कानून और आर्थिक एकीकरण से संबंधित कानूनी मुद्दों में एक अग्रणी की भूमिका का निर्वहन करना है। सीटीआईएल का मिशन अंतरराष्ट्रीय आर्थिक कानून के व्यापक पहलुओं पर अंतरराष्ट्रीय बातचीत को प्रभावित करने हेतु रचनात्मक विचारों, विश्लेषण और दृष्टिकोणों की पहचान प्रदान करना है। यह केंद्रीय तथा राज्य सरकारों, विचार मंडलों, शोध केंद्रों, राष्ट्रीय कानून विद्यालयों व कानूनी शिक्षा प्रदान करने वाले अन्य संस्थानों, कानूनी शिक्षा, अंतरराष्ट्रीय आर्थिक कानून, स्वतंत्र कानूनी पेशेवरों, उद्योग और निजी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वालों सहित विभिन्न हितधारकों के साथ जुड़ना है। केंद्र को व्यापार और निवेश से संबंधित जानकारी के तैयार भंडार के रूप में भी माना जाता है जिसमें चालू व्यापार वार्ता और विवादों पर अद्यतन जानकारी शामिल हैं।

केंद्र ने 27 जुलाई 2018 को अपनी प्रथम वर्षगांठ मनाई। इस शुभ अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में तत्कालीन वाणिज्य सचिव श्रीमती रीता तेवतिया जी को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में वाणिज्य मंत्रालय से तत्कालीन अपर सचिव डॉ. अनूप वधावन, आईआईएफटी निदेशक प्रो. मनोज पंत सहित अन्य अतिथिगण तथा समस्त सीटीआईएल, सीआरटी, डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र के सदस्य उपस्थित रहे।

सीटीआईएल केंद्र की प्रथम वर्षगांठ पर कार्यक्रम (27 जुलाई 2018)

सीटीआईएल कानून के छात्रों को इंटर्नशिप के अवसर प्रदान करता है जो वर्तमान में अपने बीए, एलएलबी या एलएलबी/एलएलएम कार्यक्रमों के उन्नत चरण में हैं तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश के मुद्दों का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करना चाहते हैं। नियमित इंटर्नशिप कार्यक्रम के अलावा, सीटीआईएल डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र के साथ मिलकर वाणिज्य विभाग का प्रमुख इंटर्नशिप कार्यक्रम भी चलाता है। केंद्र प्रमुख प्रोफेसर डॉ. जे. नेदुम्परा की देख–रेख में समग्र गतिविधियां आयोजित की जाती हैं।

पैनल चर्चा: केन्द्र ने आईएलआई वाशिंगटन डी.सी. के साथ 10–12 जनवरी 2019 के दौरान क्रिट सम्मेलन कक्ष, नेफेड, नई दिल्ली में एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। इस चर्चा में विषय के रूप में ''डब्ल्यूटीओ को और अधिक सशक्त बनाना'' था। इस कार्यक्रम के आयोजन का उद्देश्य भारत की ओर से जताई गई इच्छा के अनुसार विश्व व्यापार संगठन अपीलीय निकाय में न्यायाधीशों की नियुक्ति/पुनर्नियुक्ति में वर्तमान गतिरोध से संबंधित मुद्दों को हल करने में संगठन के सदस्यों से मौजूदा संकट को हल करने के लिए एक साथ आने का आग्रह था। पैनल में भारत के पूर्व वाणिज्य सचिव श्री राजीव खेर के अलावा, डब्ल्यूटीओ के पूर्व उप महानिदेशक श्री डेविड शार्क, प्रो. अनवरुल होदा और डॉ. हर्षवर्धन सिंह शामिल थे।

केंद्र द्वारा आईएलआई वाशिंगटन डी.सी. के साथ आयोजित पैनल चर्चा (10–12 जनवरी 2019)

चर्चा के दौरान डब्ल्यूटीओ के पूर्व उपमहानिदेशक डॉ. हर्षवर्धन सिंह ने वर्तमान चुनौतियों को ''एक बड़ी चुनौती'' बताते हुए सदस्य देशों से आग्रह किया कि वे आपस में उलझने की बजाय ध्यानपूर्वक पदार्थ और प्रक्रिया का चुनाव करें। डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र के प्रमुख प्रो. अभिजीत दास ने एक ''अनुक्रमिक दृष्टिकोण'' के महत्त्व को रेखांकित किया। कार्यक्रम में स्वागत भाषण डॉ. जेम्स जे. नेदुम्परा, प्रमुख और प्रोफेसर, व्यापार और निवेश कानून केंद्र ने प्रस्तुत किया। जबकि मुख्य संबोधन डॉ. अनूप वधावन, वाणिज्य सचिव, भारत सरकार ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री राजीव खेर, पूर्व वाणिज्य सचिव, भारत सरकार द्वारा की गई।

''ग्लोबल ट्रेडिंग सिस्टम में गैर–बाजार अर्थव्यवस्थाएं: चीन का विशेष मामला''

15 दिसंबर 2018 को इंडिया हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में केन्द्र द्वारा ''व्यापार उपाय और गैर–बाजार अर्थव्यवस्था'' पर संगोष्ठी आयोजित की गई। इस अवसर पर केंद्र प्रमुख जेम्स जे. नेदुम्परा और वीहुआन झोउ द्वारा संपादित पुस्तक ''ग्लोबल ट्रेडिंग सिस्टम में गैर–बाजार अर्थव्यवस्थाएं: चीन का विशेष मामला'' का विमोचन किया गया। इस कार्यक्रम में भारत सरकार के वाणिज्य सचिव डॉ. अनूप वधावन मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे।

''ग्लोबल ट्रेडिंग सिस्टम में गैर–बाजार अर्थव्यवस्थाएं: चीन का विशेष मामला'' पुस्तक का विमोचन (15 दिसंबर 2018)

पुस्तक एंटी–डंपिंग मामलों में चीन की गैर–बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार की जांच करती है और डब्ल्यूटीओ को चीन के प्रोटोकॉल के एक्सेसन की धारा 15 और गैट के अनुच्छेद–6 का सेकेंड एड नोट की व्याख्या पर कई दृष्टिकोणों को उजागर करती है। यह पुस्तक व्यापार उपायों के मामलों में गैर–बाजार अर्थव्यवस्थाओं में लागत और मूल्य विकृतियों से निपटने के लिए विभिन्न न्यायालयों में अपनाए गए दृष्टिकोणों की अनूठी अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। पुस्तक स्प्रिंगर नेचर सिंगापुर द्वारा प्रकाशित की गई।

क्षेत्रीय व्यापार केंद्र (सीआरटी)

क्षेत्रीय व्यापार केंद्र (सीआरटी), एक स्वायत्त थिंक–टैंक है, जिसे वाणिज्य विभाग, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापित किया गया है। क्षेत्रीयता की दृष्टि के माध्यम से वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ भारत के आर्थिक संबंधों को देखते हुए सीआरटी द्वारा नीति उन्मुख शोध पर ध्यान केंद्रित करना अनिवार्य है। अनुसंधान, क्षमता निर्माण एवं आउटरीच कार्यक्रमों के व्यापक क्षेत्रों में माल में व्यापार, सेवाओं में व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी और विकास संबंधी मुद्दों को शामिल किया गया है। सीआरटी का उद्देश्य साक्ष्य–आधारित नीति अनुसंधान पर केंद्रित उच्च गुणवत्ता वाले प्रकाशनों को सामने लाना है जो सिद्धांत, अनुभववाद और नीति को जोड़ते हैं।

इसके अलावा, सीआरटी का उद्देश्य एक व्यापार–विकास पटकथा का निर्माण करना है जो नीति निर्माण प्रक्रियाओं और अन्य क्षेत्रों, जैसे कि निजी क्षेत्र, अकादमिया और दुनिया भर में मीडिया जैसे अन्य हितधारकों के लिए प्रासंगिक है। केंद्र प्रमुख के रूप में डॉ. राम उपेन्द्र दास द्वारा सभी गतिविधियों का संचालन किया जाता है।

दिल्ली परिसर का कंप्यूटर केंद्र

संस्थान में अत्याधुनिक बुनियादी ढांचा सुविधा के अंतर्गत सुसज्जित कंप्यूटर सेंटर है जो छात्रों व संकाय सदस्यों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करता है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों व शोध गतिविधियों के लिए अधिकांशतः सूचना एवं प्रौद्योगिकी संबंधी सुविधाओं की आवश्यकता होती है। कंप्यूटर लैब छात्रों के लिए 24 घंटे खुली होती है, जिसमें पर्याप्त संख्या में कंप्यूटर उपलब्ध हैं। इस सुविधा के अंतर्गत संकाय सदस्यों द्वारा ऑन–लाइन मूल्यांकन करने का प्रावधान भी किया गया है।

इसके अतिरिक्त, विंडो ओएस व कलर मोनिटर के साथ 350 से अधिक डेस्कटॉप कंप्यूटर (कोर2 डूओ व आई5) लगाए गए हैं। इन सभी कंप्यूटरों में नोवेल ग्रुपवाईज, माइक्रोसॉफ्ट लाईनिक कॉम्यूनिकेशन, ओरेक्ल, वीबी, माइक्रोसॉफ्ट प्रोजेक्ट, जावा, एसपीएसएस, ई–विऊज, एसएएस, आदि एपलिकेशन सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं। संस्थान के कंप्यूटर नेटवर्क में सीएमआईई से भारत व्यापार व प्रोवेस डेटाबेस भी उपलब्ध हैं।
संस्थान में यूनिफाइड स्टोरेज, वर्चुअलाइज्ड सर्वर एनवायरनमेंट, वेब सर्वर्स, ई–मेल सर्वर्स आदि के साथ डाटा सेंटर उपलब्ध है। संस्थान के सर्वर ढांचे में ईएमसी यूनीफाईड स्टोरेज प्रणाली, तीन एच.पी. सर्वर तथा दो डेल सर्वर के साथ तीन सिस्को सर्वर सम्मिलित हैं।

इसके अतिरिक्त, आईआईएफटी दिल्ली और कोलकाता परिसर की आंतरिक बैठकों आदि सहित नियोजन, प्रशिक्षण, अनुसंधान गतिविधियों के लिए वीडियो कांफ्रेसिंग की सुविधा का भी उपयोग किया जाता है।

आईआईएफटी का समय के साथ हाल ही में ऑनलाइन शिक्षा की शुरूआत में ऑनलाइन कार्यक्रमों के आयोजन हेतु ब्राडबैंड सुविधाओं का उपयोग करते हुए ऑनलाइन सत्र चलाना संभव हुआ है।

संस्थान में बहुस्तरीय नेटवर्क सुविधाएं उपलब्ध हैं। परिसर की इमारतें पूरी तरह ऑपटिकल नेटवर्क से जुड़ी हैं। नेटवर्क सुविधा लेयर 3 स्वीचिंग स्तर की है जो सभी उपकरणों को एक मंच पर जोड़ने में मदद करती है। 1500 से अधिक उपयोगकर्ता इस नेटवर्क का उपयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त, कक्षाओं में पर्याप्त रूप से एलसीडी प्रोजेक्टर और पीसी लगाए गए हैं।

निर्यात बंधु योजना के तहत निर्यात तथा आयात प्रबंधन में ऑन–लाइन प्रमाण–पत्र कार्यक्रम

सितम्बर 2015 में, डीजीएफटी के साथ निर्यात बंधु योजना के अंतर्गत निर्यात एवं आयात प्रबंधन में ऑन–लाइन प्रमाण–पत्र कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। यह कार्यक्रम दो उद्देश्यों "डिजिटल इंडिया" तथा "स्किल इंडिया" को पूरा करता है। मार्च 2019 तक इस कार्यक्रम के तहत उनतीस बैच चलाए गए, जिनमें लगभग 1200 सहभागियों को प्रशिक्षित किया गया।

संकाय सदस्यों एवं पीएचडी शोधकर्ताओं के लिए वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क (वीपीएन) तथा एंटी–प्लेगिरिस्म का चैक उपकरण:

लाईब्रेरी डेटा एक्सेस करने के लिए वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क (वीपीएन) तथा संकाय सदस्यों व पीएच.डी. छात्रों के लिए प्लेगिरिस्म चैक करने हेतु टर्निटिन, एंटी–प्लेगिरिस्म चैक उपकरण उपलब्ध हैं।

आईआईएफटी द्वारा नेट, एएसपी, ओरेकल और एसक्यूएल मंच का उपयोग करते हुए अनेक इन हाउस इंटरप्राईज एप्लीकेशंस विकसित किए गए। इन एप्लीकेशनों का उपयोग संस्थान परिसर में व परिसर के बाहर होने वाले कार्यक्रमों में किया जाता है। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

(क) कैम्पस 360 सोल्यूशन: यह एक पूर्णरूप से समन्वित मंच है जो कार्यालय कार्यक्रमों व छात्रों के साथ–साथ संकाय सदस्यों के लिए कनवर्जेंस सुविधा प्रदान करता है। कैम्पस 360 ऑनलाइन उपस्थिति, कोर्सवेयर को जोड़ने, परिणाम प्रक्रिया, ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी, ओपिनियन पोल्स, असाइनमेंट प्रस्तुतिकरण, शोध परियोजनाओं के प्रस्तुतिकरण, वैकल्पिक चयन, बंदरगाह दौरा विकल्प, भाषा चयन तथा अन्य संबंधित गतिविधियों में सहायक होता है।

(ख) प्लेसमेंट पोर्टल: यह पोर्टल नियोजन के दौरान छात्रों के लिए मोड्यूल्स जैसे सीवी अपलोडर, कंपनियों में आवेदन के लिए, सीसी टेमप्लेट बनाने तथा प्रशासनिक मोड्यूल्स जैसे सीवी तलाशने, उत्कृष्ट सीवी बनाने, सीवी डाउनलोड, सीवी बंडल बनाने एवं कंपनियों के साथ सीवी जोड़ने के काम आता है।

(ग) परिणाम प्रक्रिया एवं ग्रेडिंग: यह सोल्यूशन जो संस्थान के परिणाम प्रक्रिया के लिए जैसे छात्रों का परिवर्तन, लेटर ग्रेड में प्राप्त अंक, जीपीए तथा सीजीपीए विवरण, मार्कशीट मुद्रण, आंतरिक मार्क अपलोड करने, आदि के लिए उपयोग किया जाता है।

(घ) विभिन्न कार्यक्रमों के लिए वर्चुअल कक्षाएं: इसके अंतर्गत पाठ्यक्रम अपलोड, कार्यक्रम सारणी, प्लानर्स, फीडबैक, प्रश्नोत्तरी आदि कार्य किए जाते हैं।

(ड.)ऑन–लाइन मनोमितीय परीक्षणः यह सॉफ्टवेयर ऑन–लाइन मनोमितीय परीक्षण के लिए तैयार किया गया है। इसके द्वारा विभिन्न एमडीपी के सहभागियों व 11050 ऑन–लाइन प्रोफाइल परीक्षण सहित 3131 से अधिक सहभागियों का ऑन–लाइन मनोमितीय परीक्षण किया गया।

(च) सीडब्ल्यूएस के डब्ल्यूटीआई हेतु वर्चुअल क्लासरूम पोर्टलः यह पोर्टल डब्ल्यूटीओ अध्ययन केन्द्र के रीजनल डब्ल्यूटीआई के पाठ्यक्रम सामग्री, प्लानर्स, संवाद, चुनाव, डब्ल्यूटीओ संसाधनों, आदि के लिए उपयोग में लाया जाता है।

संस्थान का दिल्ली परिसर स्थित कंप्यूटर केंद

जो शिक्षा आम लोगों को जीवन के संघर्ष के लिए खुद को तैयार करने में मदद नहीं करती है, जो चरित्र की ताकत, परोपकार की भावना और एक शेर की हिम्मत नहीं लाती है - क्या वह शिक्षा कहलाने योग्य है? वास्तविक शिक्षा वह है, जो किसी को अपने पैरों पर खड़े होने में सक्षम बनाती है।

- स्वामी विवेकानंद

संस्थान का पुस्तकालय

पूरी तरह से स्वचालित विदेश व्यापार पुस्तकालय 1,03,840 संसाधनों के एक प्रभावशाली संग्रह के साथ एक विशाल ज्ञान बैंक है, जिसमें लगभग 76,805 पुस्तकें/सीडी–वॉल्यूम, 17,631 सजिल्दआवधिक और 255 सिद्धांत जैसे सांख्यिकीय सिद्धांत, बैंकिंग, उद्योग शामिल हैं। प्रबंधन, विपणन, अर्थशास्त्र, लॉजिस्टिक्स, उपभोक्तावाद, भूराजनीतिक आर्थिक प्रणाली, आदि पुस्तकालय के रूप में अच्छी तरह से ब्लूमबर्ग डेटाबेस तक पहुँच है।

ऑनलाइन पहुंच की सुविधा के लिए, आईआईएफटी लाइब्रेरी ने 27 ऑनलाइन संबंधित और ऑफलाइन डेटाबेस से संबंधित सदस्यता ली है, जैसे ईबीएससीओ, प्रोक्यस्ट, इमराल्ड, ब्लैकवल, सीएमआईई, जेएसटीओआर, इंडियास्टाट, वर्ड ट्रेड ऑनलाइन, आईएमएफ डेटाबेस, ओईसीडी ऑनलाइन, वर्ल्ड ट्रेड एटलस और 'ब्लूमबर्ग टर्मिनल्स' आदि इसकी सूची में शामिल हैं।

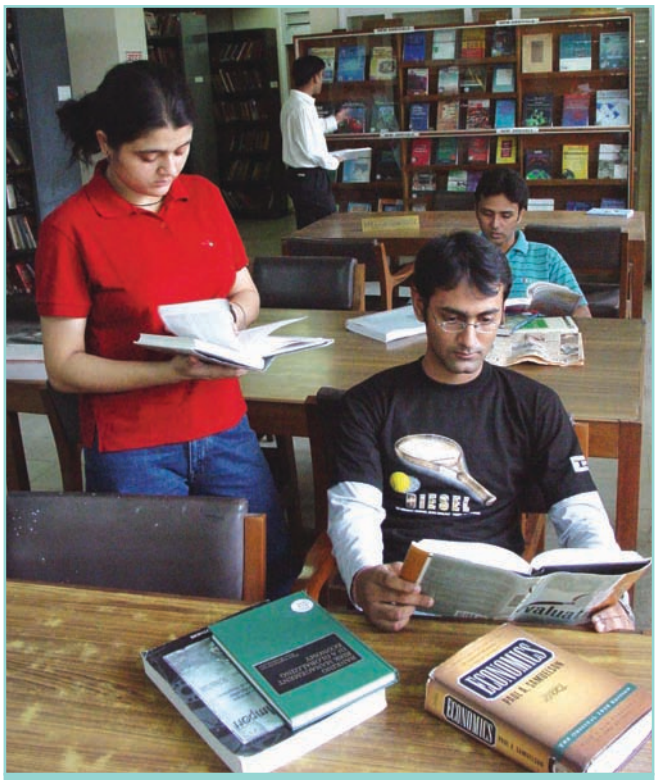

संस्थान दिल्ली परिसर स्थित विदेश व्यापार पुस्तकालय

आईआईएफटी कोलकाता केंद्र

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान की उन्नयन यात्रा के क्रम में वर्ष 2002 में कोलकाता केंद्र की स्थापना हुई थी, जिसका प्रारंभिक सफर एक किराए की इमारत से हुआ था। वर्तमान में, कोलकाता केंद्र का अपना एक भव्य भवन है जो मदुरदाहा क्षेत्र में रूबी जनरल हास्पिटल के पीछे स्थित है। इसका परिसर 7 एकड़ जमीन में फैला हुआ है। इसके डिजाइन की जादुई सुंदरता हो या शरद ऋतु में परिसर में पसरी हरियाली और फूलों की सुंदरता, यहाँ आए आगंतुकों को अत्यंत प्रभावित करती है। कोलकाता केंद्र, डिजाइन किए गए अपने भवनों व उत्कृष्ट रखरखाव किए गए बगीचों तथा जलस्थलों के कारण बहुत सुंदर दिखाई देता है।

कोलकाता केंद्र का भव्य भवन सभी आधुनिक सुविधाओं अर्थात श्रवण–दृश्य उपकरणों सहित पूर्णतया वातानुकूलित लेक्चर हॉल, 500 लोगों के बैठने की क्षमता का एक सभागार, एमडीपी केंद्र, कंप्यूटर केंद्र, पुस्तकालय, इनडोर खेलों, खेल–कूद के मैदान के साथ विद्यार्थियों के लिए उत्कृष्ट आवासीय सुविधाओं से परिपूर्ण है।

दिल्ली परिसर की तर्ज पर कोलकाता केंद्र में सभी शिक्षण, प्रशिक्षण व अनुसंधान गतिविधियां आयोजित की जाती हैं, अर्थात दो–वर्षीय एमबीए (आईबी) तथा विशुद्ध रूप से कार्यपालकों को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया 2 वर्ष 6 माह का सप्ताहान्त एमबीए डिग्री कार्यक्रम व अनुसंधान परियोजनाएं आयोजित की जाती हैं। इसके अतिरिक्त, कार्यपालक स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम व प्रमाण–पत्र कार्यक्रम, आदि भी चलाए जाते हैं। कोलकाता केंद्र प्रमुख प्रोफेसर डॉ. के. रंगराजन की देख–रेख में ये सभी कार्यक्रम सुचारू रूप से संचालित किए जा रहे हैं।

कोलकाता केंद्र द्वारा वर्ष 2018–19 के दौरान आयोजित मुख्य गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण :

सेंटर फॉर नॉर्थ ईस्टर्न स्टडीज (सीनेस्ट) :– आईआईएफटी के कोलकाता केंद्र द्वारा हाल ही में पूर्वोत्तर परिषद (एनईसी) के सहयोग से भारत के उत्तर–पूर्वी क्षेत्रों के विशेष विकास के लिए एक समर्पित केंद्र के रूप में सेंटर फॉर नॉर्थ ईस्टर्न स्टडीज (सीनेस्ट) की शुरुआत की गई है। यह केंद्र उत्तर–पूर्वी राज्यों के उद्यमियों को अंतरराष्ट्रीय समर्थन और विभिन्न उत्तर–पूर्वी राज्यों के व्यापार एवं व्यापार से जुड़े विकास संबंधी मुद्दों पर अनुसंधान करने तथा उत्तर–पूर्वी राज्यों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने में सहायता प्रदान करेगा। भारत सरकार के विकास एवं रोजगार संबंधी आह्वान को ध्यान में रखते हुए आईआईएफटी अपने कोलकाता केंद्र द्वारा एनईसी के साथ बड़े पैमाने पर सहयोग करना चाहता है और अपनी

डोमेन विशेषज्ञता का उपयोग करके भारत के उत्तर–पूर्वी (एनई) राज्यों को उनकी विकास योजनाओं विशेष रूप से निर्यात उन्मुख उद्यमिता, उद्यम निधि, स्टार्ट–अप तथा कौशल विकास में सहायता करेगा जिससे उस क्षेत्र में रोजगार पैदा करने में मदद मिलेगी।

एमबीए (आईबी) कार्यक्रम 2018–20 :– कोलकाता केंद्र द्वारा दिल्ली परिसर की तर्ज पर संस्थान का प्रमुख कार्यक्रम एमबीए (आईबी) 2018–20 पूर्णकालिक का संचालन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रवेश हेतु छात्रों का चयन आईआईएफटी द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर 20 शहरों में एक कॉमन परीक्षा के माध्यम से किया जाता है। दोनों स्थानों अर्थात दिल्ली व कोलकाता केंद्र पर इस कार्यक्रम के छात्रों का अध्ययन–अध्यापन भी आईआईएफटी के संकाय सदस्यों द्वारा समय–समय पर वीडियो कांफ्रेंसिंग अथवा व्यक्तिगत दौरों के माध्यम से कराया जाता है। इस कार्यक्रम के छात्रों का प्लेसमेंट भी आईआईएफटी द्वारा एक कॉमन मंच से कराया जाता है।

कोलकाता केंद्र पर एमबीए (आईबी) कार्यक्रम 2018–20 का उद्घाटन समारोह

अंतरराष्ट्रीय व्यापार में विशिष्ट पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा (ईपीजीडीआईबी)

कोलकाता केंद्र द्वारा चलाया जाने वाला यह अंतरराष्ट्रीय व्यापार में कार्यकारी पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा (ईपीजीडीआईबी) कार्यक्रम, कार्यकारी अधिकारियों के लिए डिजाइन किया गया है, जो अंतरराष्ट्रीय व्यापार में एक सम्मानित कार्यक्रम है। कार्यक्रम अंतरराष्ट्रीय बाजार तथा परिचालन की पूरी समझ के साथ, अंतरराष्ट्रीय व्यापार में पर्याप्त कौशल और ज्ञान विकसित करता है।

मिशनः रचनात्मक अनुसंधान और शिक्षण के माध्यम से व्यावसायिक ज्ञान को मजबूत करना, उसे बनाए रखना तथा पेशेवर बनाना, राष्ट्रीय सीमाओं से परे और भीतर दोनों संगठनों, संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग करके, सीखने के महत्त्व को उजागर करना है।

ईपीजीडीआईबी (2017–18) बैच में गत वर्ष कोलकाता में 18 सहभागियों ने भाग लिया तथा अपने पाठ्यक्रम के दौरान उन्होंने अंतरराष्ट्रीय व्यापार और इसके संबंधित पहलुओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। अंतरराष्ट्रीय पोर्ट विजिट इस कार्यक्रम की एक अनूठी विशेषता है जो छात्रों को पोर्ट परिचालन में सक्षम बनाता है।

कोलकाता केंद्र पर ईपीजीडीआईबी (2017–18) बैच का समूह फोटो

एमए अर्थशास्त्र में डिग्री कार्यक्रम

आईआईएफटी में एमए अर्थशास्त्र (व्यापार और वित्त में विशेषज्ञता) में डिग्री कार्यक्रम का प्रारंभ वर्ष 2018 में किया गया था। इस कार्यक्रम को दिल्ली परिसर व कोलकाता केंद्र पर साझा रूप में चलाया जा रहा था। कार्यक्रम की सफलता व माँग को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2019 से यह कार्यक्रम कोलकाता केंद्र पर भी अलग से प्रारंभ किया जा रहा है, जिसमें 30 सीटों का प्रावधान किया गया है।

आईआईएफटी द्वारा प्रस्तुत एमए अर्थशास्त्र डिग्री कार्यक्रम की भारत में अर्थशास्त्र में सबसे पसंदीदा मास्टर प्रोग्राम बनने की संभावना देखी गई है। पाठ्यक्रम में पहले दो सेमेस्टर अर्थशास्त्र के सबसे प्रमुख स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के बराबर होंगे। इन सेमेस्टर के दौरान सूक्ष्मअर्थशास्त्र, मैक्रोइकोनॉमिक्स, गणित अर्थशास्त्र और अर्थमिति में प्रमुख सैद्धांतिक मॉडल पढ़ाए जाएंगे। अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र और कॉर्पोरेट वित्त पर दो परिचयात्मक पाठ्यक्रम भी व्यापार एवं वित्त विशेषज्ञता की प्रस्तावना के रूप में पढ़ाए जाएंगे। अंतिम दो सेमेस्टर पूरी तरह से अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र और वित्त पर केंद्रित होंगे। इसी क्रम में सैद्धांतिक मॉडल निर्माण के साथ–साथ अनुभवजन्य विश्लेषण पर उन्नत विषयों को इन पाठ्यक्रमों के दौरान प्रस्तुत किया जाएगा।

कोलकाता केंद्र द्वारा उत्तर–पूर्वी राज्यों की निर्यात क्षमता एवं प्रक्रिया पर आयोजित मुख्य प्रशिक्षण कार्यक्रम।

निर्यात एवं प्रशिक्षण कार्यशाला :– केंद्र द्वारा अखिल भारतीय रबर उद्योग संघ, पूर्वी क्षेत्र (AIRIA, ER) के सहयोग से 19 मार्च 2019 को निर्यात पर एक–दिवसीय कार्यशाला सह संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम रबर उद्योग संघ के सदस्यों तथा रबड़ कारोबार से जुड़ी गैर–सदस्यीय फर्मों के लिए किया गया था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य उत्पाद विशिष्ट

ऑफशोर बाजारों पर तकनीक एकत्रित करना तथा यह सुनिश्चित करना था कि पूरे उद्योग जगत को इसका लाभ मिले। इस जागरूकता कार्यक्रम के निदेशक डॉ. गौतम दत्ता ने बातचीत के आदान–प्रदान के साथ–साथ व्यापार के मुद्दों पर फर्मों को सलाह के रूप में अपने अनुभव साझा किए। कार्यशाला में विभिन्न उद्योगों से कुल 33 (तैंतीस) प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान संबोधित करते हुए कोलकाता केंद्र प्रमुख, प्रोफेसर डॉ. के. रंगराजन (19 मार्च 2019)

निर्यात एवं प्रशिक्षण कार्यशाला का दृश्य (19 मार्च 2019)

निर्यात क्षमता एवं प्रक्रिया प्रशिक्षण कार्यक्रम–IV :– पूर्वोत्तर राज्यों (अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम और सिक्किम) के लिए यह कार्यक्रम 11–15 मार्च 2019 के दौरान पूर्वोत्तर परिषद शिलांग द्वारा प्रायोजित किया गया था। इस कार्यक्रम के केंद्र में पूर्वोत्तर राज्यों में निर्यात अधोसंरचना और कृषि, व्यापार एवं वाणिज्य और बागवानी जैसे क्षेत्र थे, जो ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्र के निवासियों के एक बड़े हिस्से को रोजगार प्रदान करते हैं तथा राज्य के लिए राजस्व पैदा करते हैं। इस दौरान पूर्वोत्तर राज्य के अधिकारियों को राज्य के उत्पादों की क्षमता और विदेशों की मांग के बीच मिलान करने से संबंधित तकनीकों की गहरी समझ तथा पूरक निर्यात प्रक्रिया की बारीकियों से अवगत कराना था। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में पूर्वोत्तर राज्यों के विभिन्न विभागों के कुल 15 सरकारी अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन कोलकाता केंद्र से कार्यक्रम निदेशक प्रोफेसर डॉ. गौतम दत्ता के निर्देशन में किया गया। पूर्वोत्तर क्षेत्र के निर्यात विकास प्रयोजन के लिए और अधिक योगदान देने के लिए प्रशिक्षण अत्यधिक उपयोगी था।

11–15 मार्च 2019 के दौरान आयोजित कार्यक्रम में आईआईएफटी के वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ सहभागियों का समूह फोटो

प्रशिक्षण कार्यक्रम बैच–III :– उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रशिक्षणों की श्रृंखला में कोलकाता केंद्र ने 18–22 फरवरी 2019 के दौरान पूर्वोत्तर परिषद शिलांग द्वारा प्रायोजित यह प्रशिक्षण कार्यक्रम भारत के छः पूर्वोत्तर राज्यों (अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम और सिक्किम) के लिए आयोजित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में पूर्वोत्तर राज्यों के विभिन्न विभागों के कुल 22 सरकारी अधिकारियों ने भाग लिया।

18–22 फरवरी 2019 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह

18–22 फरवरी 2019 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में आईआईएफटी के वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ सहभागियों का समूह फोटो

प्रशिक्षण कार्यक्रम बैच–II :– कोलकाता केंद्र द्वारा पूर्वोत्तर परिषद शिलांग के सहयोग 4–8 फरवरी, 2019 के दौरान छः पूर्वोत्तर राज्यों (अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम और सिक्किम) के लिए यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। निर्यात बढ़ाने के लिए पूर्वोत्तर राज्यों में निर्यात अधोसंरचना का विकास महत्त्वपूर्ण है। उत्तर पूर्वी राज्यों में, वर्तमान सरकार की आकांक्षाओं के अनुरूप, एक नए और बेहतर भारत के निर्माण में योगदान करते हुए देश को एक आत्मनिर्भर आर्थिक इकाई के रूप में विकसित करने की क्षमता है। संक्षेप में, इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य, पूर्वोत्तर राज्य के अधिकारियों के बीच राज्य के उत्पादों की क्षमता एवं पूरक निर्यात प्रक्रिया की समझ पैदा करना था। कार्यक्रम उत्तर पूर्वी राज्यों के उद्योगों तथा वाणिज्य, बागवानी, कृषि, आदि क्षेत्रों पर आधारित था। इस पांच–दिवसीय आवासीय क्षमता विकास कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के कुल 18 सरकारी अधिकारियों ने भाग लिया।

4–8 फरवरी 2019 के दौरान आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह

4–8 फरवरी 2019 के दौरान आयोजित कार्यक्रम में आईआईएफटी के वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ सहभागियों का समूह फोटो

प्रशिक्षण कार्यक्रम बैच–I :– नगालैंड में 8–12 मई 2018 के दौरान पांच–दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास मंत्रालय द्वारा प्रायोजित किया गया था, जिसका उद्देश्य नगालैंड के सेवारत अधिकारियों को ''नगालैंड की निर्यात क्षमता और प्रक्रियाओं'' से अवगत कराना था। इस दौरान नगालैंड की निर्यात क्षमता, निर्यात उत्पादों की पहचान तकनीकें, विशेष रूप से और पूरे क्षेत्र में राज्य की उपज के लिए विदेशी बाजार की पहचान, प्रक्रिया, विदेशी बाजारों के अनुसार संभावित उत्पादों का निर्माण, निर्यात बाधाओं तथा साथ ही अवसरों से प्रभावी निपटान, निर्यात प्रलेखन से संबंधित प्रक्रियाएं और कार्य की एक संरचित योजना में परिणत करने के बारे में जानकारी दी गई। इस प्रबंधन विकास कार्यक्रम में नगालैंड के उद्योग और वाणिज्य विभाग के 15 सरकारी कर्मियों ने भाग लिया।

8–12 मई 2018 के दौरान आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह

8–12 मई 2018 के दौरान आयोजित कार्यक्रम में आईआईएफटी के वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ सहभागियों का समूह फोटो

कोलकाता केंद्र पर कंप्यूटर सेंटर – आईआईएफटी कोलकाता केंद्र में छात्रों के लिए सभी उपकरणों से सुसज्जित कंप्यूटर लैब है। केंद्र में छात्रों के लिए वाई–फाई सेवाएं उपलब्ध कराई गई हैं। यहाँ क्षेत्रीय लिबसिस, प्रोवेस, इंडिया ट्रेड्स सेवाएं दी गई हैं तथा आईआईएफटी दिल्ली में उपलब्ध आईटी सेवाओं को एनएलडी लाइनों के माध्यम से कोलकाता केंद्र में दिया जा रहा है।

संस्थान का कोलकाता केंद्र स्थित कंप्यूटर सेंटर

पुस्तकालय

कोलकाता केंद्र का पुस्तकालय, परंपरागत संसाधनों के साथ–साथ इलेक्ट्रॉनिक तथा वास्तविक जानकारी सहित धीरे–धीरे विकसित हो रहा है। पुस्तकालय में प्रबंधन एवं इससे संबंधित मुद्दों पर पुस्तकें/सीडी तथा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाएं उपलब्ध हैं। लगभग सभी व्यावसायिक दैनिक समाचार–पत्र भी इसके आवधिक अनुभाग में उपलब्ध हैं। यहाँ प्रबंधन, सांख्यिकी, अर्थशास्त्र, गणित, विपणन, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, मनोविज्ञान, अनुसंधान परिचालन, कारोबारी संचार, विज्ञापन तथा सामान्य पठनीय, आदि दस्तावेजों का संग्रह किया गया है। पुस्तकालय में संसाधन, मुख्य रूप से अंग्रेजी सहित अन्य भाषाओं जैसे – बांग्ला, हिंदी, स्पेनिश, जर्मन, इटेलियन, फ्रेंच में उपलब्ध हैं। यह संग्रह, ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस सूची तथा प्रसारण बार कोडिड प्रणाली की सुविधा के साथ पूरी तरह से स्वचालित है। पुस्तकालय अपने ई–ब्रेरी नामक डेटाबेस से सुसज्जित है जो अपने उपयोगकर्ताओं को सरकारी अवकाशों को छोड़कर वर्ष भर अपनी सेवाएं प्रदान करता है।

8–12 मई 2018 के दौरान आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह

हिंदी का काम देश का काम है,
समूचे राष्ट्र निर्माण का प्रश्न है।

– बाबूराम सक्सेना

संस्थान की उपलब्धियां

स्थापना दिवस

संस्थान ने हर वर्ष की भांति बड़े उत्साह के साथ 2 मई 2018 को अपना 55वां ''स्थापना दिवस'' मनाया। इस दिन संस्थान अपने क्रमबद्ध इतिहास को दोहराता है, जिसने जमीनी स्तर से अपनी शुरूआत कर भारत के प्रमुख बी–स्कूलों में अपनी जगह बनाई है, जो कि संस्थान सदस्यों के लिए सम्मान और गर्व का विषय है। इस अवसर पर संस्थान के सेवानिवृत्त व कार्यरत सदस्यों के योगदान को याद किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत, चेयरपर्सन प्रो. डॉ. विजया कट्टी तथा कुलसचिव डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। प्रोफेसर मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी द्वारा कार्यक्रम की अध्यक्षता की गई।

55वें स्थापना दिवस के अवसर पर
आईआईएफटी, निदेशक, प्रोफेसर मनोज पंत,
प्रो. डॉ. विजय कट्टी व कुलसचिव डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता

राजभाषा के प्रचार–प्रसार के अंतर्गत संस्थान द्वारा गत एक दशक से हिंदी गृह–पत्रिका ''यज्ञ'' का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर संस्थान की हिंदी गृह–पत्रिका ''यज्ञ'' के 11वें अंक का विमोचन किया गया।

संस्थान के 55वें स्थापना दिवस के अवसर पर
हिंदी गृह–पत्रिका 'यज्ञ' के 11वें अंक का विमोचन
करते हुए संस्थान के गणमान्य सदस्य

इस खुशी के अवसर पर उत्सवधर्मिता के निर्वहन को ध्यान में रखते हुए शास्त्रीय नृत्य कार्यक्रम का आयोजन कराया गया। सभागार में एकत्रित संस्थान सदस्यों व मेहमानों ने नृत्य का भरपूर आनंद लिया।

स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित
शास्त्रीय नृत्य कार्यक्रम का दृश्य

52वां दीक्षांत समारोह

संस्थान द्वारा 4 मई 2018 को नई दिल्ली में अपने 52वें दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री सुरेश प्रभु, माननीय वाणिज्य एवं उद्योग तथा नागरिक उड्डयन मंत्री की गरिमामयी उपस्थिति रही। माननीय मंत्री महोदय ने दीक्षांत भाषण दिया एवं संस्थान द्वारा गत वर्ष के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले मेधावी छात्रों को पदक/पुरस्कार द्वारा सम्मानित करते हुए डिग्री प्रदान कीं।

52वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर स्वागत भाषण
देते हुए आईआईएफटी निदेशक प्रो. मनोज पंत

इस अवसर पर संस्थान की तत्कालीन चेयरमैन तथा वाणिज्य सचिव, भारत सरकार, श्रीमती रीता तेवतिया व आईआईएफटी के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत सहित चेयरपर्सन प्रोफेसर डॉ. सुनीथा राजू व कोलकाता सेंटर प्रमुख प्रोफेसर डॉ. के. रंगराजन उपस्थित थे। श्रीमती रीता तेवतिया व प्रोफेसर मनोज पंत ने 633 छात्रों को डिग्री, डिप्लोमा व प्रमाण–पत्र प्रदान किए तथा उपस्थित सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

आईआईएफटी तथा ईसीजीसी लि. के बीच समझौता ज्ञापन

यह समझौता ज्ञापन (एमओयू) 25 अप्रैल 2018 को भारतीय विदेश व्यापार संस्थान तथा ईसीजीसी लिमिटेड के बीच किया गया। इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं रणनीति पर विस्तृत आधार पर अनुसंधान करने के लिए किया गया, जिसमें भारत से निर्यात के विकास को प्रभावित करने वाली भारत सरकार की सभी नीतियों का अध्ययन शामिल है। यह अध्ययन न केवल निवेश नीतियों, व्यापार नीतियों और अन्य मैक्रो नीतियों तक सीमित होगा, अपितु इस उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा स्थापित विभिन्न संस्थानों को सम्मिलित किया जाएगा। इस शोध विषय का दायरा पांच साल की अवधि के लिए होगा तथा इसमें निर्यात प्रोत्साहन से संबंधित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल किया जाएगा। इस कार्यक्रम के माध्यम से ईसीजीसी के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण मॉड्यूल विकसित करना भी है, ताकि वे अपने युवा अधिकारियों को प्रशिक्षित कर सकें।

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान तथा ईसीजीसी लिमिटेड के बीच समझौता ज्ञापन (25 अप्रैल 2018)

मैसिव–ओपन–ऑनलाइन–कोर्स (मूक) कार्यक्रम

माननीय वाणिज्य एवं उद्योग तथा नागरिक उड्डयन मंत्री श्री सुरेश प्रभु ने 15 फरवरी 2019 को एक नया ऑनलाइन ''एनीटाइम–एनीवेयर'' निर्यात जागरूकता पाठ्यक्रम लाँच किया, ताकि ट्रेनर, मेंटर और हैंड–होल्ड संभावित निर्यातकों को अंतरराष्ट्रीय व्यापार के अवसरों का दोहन करने के लिए मदद मिल सके। यह कार्यक्रम डीजीएफटी की 'निर्यात बंधु' योजना के तहत वित्त पोषित किया गया है। संस्थान का यह प्रथम मैसिव–ओपन–ऑनलाइन–कोर्स (एमओओसी – मूक) कार्यक्रम है जो एक इन–हाउस डेवलप्ड एमओओसी प्लेटफॉर्म है जिसमें जल्द ही अन्य अल्पकालिक पाठ्यक्रम जोड़ने की योजना है।

मैसिव–ओपन–ऑनलाइन–कोर्स (एमओओसी) प्लेटफॉर्म के माध्यम से पूरी तरह से ऑनलाइन कार्यक्रम में मॉड्यूलों की श्रृंखला शामिल है जिसे संस्थान द्वारा विकसित किया गया है ताकि निर्यातकों और उद्यमियों को उनके डेस्कटॉप पर मॉड्यूल के समक्ष लाइव ट्रांसमिशन वेब के माध्यम से अपने घर बैठे निर्यात–आयात व्यवसाय की आवश्यक चीजें सीखने में मदद मिल सके।

एक ऑनलाइन चर्चा मंच की सुविधा भी प्रदान की गई है। अपनी शिक्षा को प्रमाणीकरण में बदलने वाले उम्मीदवार एक ऑनलाइन परीक्षा में उपस्थित हो सकते हैं। इसे सफलतापूर्वक पूरा करने पर प्रतिभागियों को निर्यात–आयात प्रबंधन में प्रमाण–पत्र दिया जाएगा।

15 फरवरी 2019 को एमओओसी कार्यक्रम के उद्घाटन के अवसर पर संबोधित करते हुए माननीय वाणिज्य एवं उद्योग तथा नागरिक उड्डयन मंत्री श्री सुरेश प्रभु तथा वाणिज्य मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारीगण

आईआईएफटी के एक और नए परिसर (मैदान गढ़ी) का शिलान्यास एवं आईआईएफटी कोलकाता केंद्र का राष्ट्र को समर्पित

नई दिल्ली में 22 फरवरी 2019 को माननीय केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग और नागरिक उड्डयन मंत्री श्री सुरेश प्रभु द्वारा भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (मैदान गढ़ी) के नए परिसर का शिलान्यास तथा आईआईएफटी कोलकाता केंद्र राष्ट्र को समर्पित किया गया। श्री सुरेश प्रभु ने राष्ट्र की प्रगति के लिए आईआईएफटी के महत्त्व पर जोर देते हुए कहा कि आईआईएफटी न केवल विदेशी व्यापार को बढ़ावा देगा, बल्कि एमएसएमई क्षेत्र के विकास के लिए नीति निर्माण और अनुसंधान में भी सहायता करेगा। इससे देश के व्यापार क्षेत्र में कुशल श्रम बल का विकास एवं इसकी छवि में वृद्धि होगी। इस अवसर पर समस्त आईआईएफटी परिवार के बीच आईआईएफटी के निदेशक प्रो. मनोज पंत, डीन – प्रशासन (अकादमिक), डॉ. विजया कट्टी, कोलकाता केंद्र प्रमुख, प्रोफेसर डॉ. के. रंगराजन व कुलसचिव, डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता उपस्थित थे।

22 फरवरी 2019 को माननीय वाणिज्य एवं उद्योग और नागरिक उड्डयन मंत्री श्री सुरेश प्रभु द्वारा संस्थान के परिसर (मैदान गढ़ी) का शिलान्यास

संस्थान के परिसर (मैदान गढ़ी) के शिलान्यास के अवसर पर संस्थान के गणमान्य सदस्य

आईआईएफटी का मैदान गढ़ी स्थित परिसर 5.6 एकड़ (22669 वर्गमीटर) के क्षेत्रफल में विकसित किया जाएगा जिसका निर्माण एनबीसीसी इंडिया लिमिटेड द्वारा किया जा रहा है। परिसर में अत्याधुनिक ऑडियो–वीडियो सिस्टम, स्मार्ट क्लासरूम, भवन प्रबंधन प्रणाली (बीएमएस), मैकेनाइज्ड बेसमेंट कार पार्किंग और 250 किलोवाट के सौर ऊर्जा संयंत्र सहित सभी आवश्यक टिकाऊ/ग्रीन बिल्डिंग विशेषताएं होंगी। इसमें 1000 व्यक्तियों की क्षमता वाला अत्याधुनिक ऑडिटोरियम, स्विमिंग पूल और अन्य इनडोर खेलों की सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएंगी।

संस्थान के परिसर (मैदान गढ़ी) की रूपरेखा

आईआईएफटी कोलकाता केंद्र का परिचालन दिल्ली परिसर से ही किया जाता है। नियमित कार्यक्रमों के अतिरिक्त, यह केंद्र भारत सरकार की पूर्व नीति अधिनियम को आगे बढ़ाने के लिए पहल कर रहा है। अपने सेंटर फॉर नॉर्थ ईस्टर्न स्टडीज (सीनेस्ट) के माध्यम से, यह उत्तर पूर्वी राज्यों, पश्चिम बंगाल, बिहार और उड़ीसा के अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय में प्रशिक्षण एवं अनुसंधान आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहा है। इसने विश्व स्तर पर अच्छा प्रदर्शन करने तथा सहस्राब्दी के लिए देश को तैयार करने हेतु अपनी बुनियादी संरचना के साथ–साथ जनशक्ति संसाधनों को बढ़ाया है।

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वित्त में अनुभवजन्य मुद्दों पर छठा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन (ईआईआईटीएफ)

संस्थान ने अपने दिल्ली परिसर में 13–14 दिसंबर 2018 के दौरान अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वित्त (ईआईआईटीएफ) में अनुभवजन्य मुद्दों पर अपने छठे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन का उद्घाटन प्रो. एलन एल. विंटर्स, यूनाइटेड किंगडम के ससेक्स विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र के प्रतिष्ठित प्रोफेसर एवं

13–14 दिसंबर 2018 के दौरान अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वित्त (ईआईआईटीएफ) में अनुभवजन्य मुद्दों पर छठा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

अंतरराष्ट्रीय व्यापार के एक अनुभवजन्य तथा नीति विश्लेषण के प्रमुख विशेषज्ञ और प्रो. जोशुआ ऐज़ेन्मैन, दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय संबंधों एवं अर्थशास्त्र के एक विशिष्ट प्रोफेसर, राष्ट्रीय आर्थिक अनुसंधान ब्यूरो के लिए अनुसंधान सहयोगी तथा जर्नल ऑफ इंटरनेशनल मनी एंड फाइनेंस के सह–संपादक ने किया। इस कार्यक्रम में वाणिज्य सचिव डॉ. अनूप वधावन, प्रो. मनोज पंत, निदेशक आईआईएफटी और प्रो. राकेश मोहन जोशी, अध्यक्ष (अनुसंधान) तथा मुख्य अतिथि उद्घाटन समारोह में उपस्थित थे।

भारत सरकार के वाणिज्य सचिव, डॉ. अनूप वधावन द्वारा संबोधन प्रस्तुत किया गया तथा इंस्टीट्यूट फॉर सोशल एंड इकोनॉमिक चेंज (आईएसईसी), बैंगलोर की सुश्री अनीशा चिटगुपी को ''भारत के चालू खाता घाटे की स्थिरता: प्रेषण प्रवाह और सॉफ्टवेयर सेवा निर्यात की भूमिका'' पर उनके पेपर के लिए ''बेस्ट डॉक्टोरल पेपर अवार्ड'' प्रदान किया गया।

व्यापार सरलीकरण एवं लॉजिस्टिक्स (सीटीएफएल) केंद्र

वाणिज्य मंत्रालय के लॉजिस्टिक्स विभाग ने 30 जुलाई 2018 को भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) के साथ संस्थान में व्यापार सरलीकरण एवं लॉजिस्टिक्स उत्कृष्टता (सीटीएफएल) केंद्र की स्थापना के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। यह केंद्र भारत की व्यापार तथा लॉजिस्टिक्स विशेषज्ञता में मदद करेगा और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा हासिल करने के लिए घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय मोर्चों पर विभिन्न संबंधित पक्षों के साथ सहयोग के लिए एक मंच के रूप में कार्य करेगा। सीटीएफएल एक लॉजिस्टिक्स डाटा रिपॉजिटरी विकसित करेगा और नियमित रूप से डाटा एकत्र, विश्लेषण और निगरानी करेगा। सीटीएफएल विभिन्न संबंधित पक्षों को नीति संबंधी इनपुट भी प्रदान करेगा।

सीटीएफएल गुणवत्ता अनुसंधान, विभिन्न संबंधित पक्षों (नीति निकायों, उद्योग, नियामकों, सेवा प्रदाताओं और संघों, आदि) के

साथ बातचीत करके तथा घटकों के भीतर एवं उन में व्यापार और लॉजिस्टिक्स के विभिन्न पहलुओं में व्यावसायिक समुदाय को प्रशिक्षण/मार्गदर्शन एवं परामर्श प्रदान करके एक महत्त्वपूर्ण ज्ञान तथा सूचना संसाधन केंद्र के रूप में कार्य करेगा।

30 जुलाई 2018 को माननीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री सुरेश प्रभु की उपस्थिति में वाणिज्य मंत्रालय के लॉजिस्टिक्स विभाग तथा आईआईएफटी के बीच व्यापार सरलीकरण एवं लॉजिस्टिक्स उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना हेतु समझौता ज्ञापन

आईआईएफटी सबसे पहले प्लेसमेंट सम्पन्न करने वाला प्रमुख बी–स्कूल

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान अपने प्रमुख एमबीए (इंटरनेशनल बिजनेस) 2017–19 कार्यक्रम के बैच का 100 प्रतिशत प्लेसमेंट पूरा करने वाला देश का प्रमुख प्रीमियर बी–स्कूल बना है। इस बैच के 279 छात्रों की 98 कंपनियों में नियुक्ति करवाई गई। प्लेसमेंट ड्राइव में 32 नए नियोक्ताओं ने भाग लिया।

पिछले साल ₹19.23 लाख प्रति वर्ष के समग्र औसत वेतन की तुलना में इस वर्ष ₹20.07 लाख प्रति वर्ष के वेतन की पेशकश की गई थी, जबकि पिछले साल के ₹18.27 लाख प्रति वर्ष औसत घरेलू वेतन की तुलना में बढ़कर ₹18.89 लाख प्रति वर्ष रहा है। वर्ष का औसत वेतन भी ₹17 लाख प्रति वर्ष से बढ़कर ₹18 लाख प्रति वर्ष रहा। प्रस्तावित समग्र उच्चतम वेतन ₹1 करोड़ से अधिक रहा है, जिसमें कई छात्र ₹75 लाख प्रति वर्ष का वेतन प्राप्त करेंगे।

आईआईएफटी के प्लेसमेंट सीजन को एबीएफआरएल, एयरटेल, एमेजॉन, एक्सिस बैंक, बजाज ऑटो, बेन केपेबिलिटी नेटवर्क, ब्रिटानिया, सिटीबैंक, जीई, जीईपी, गोदरेज, गोल्डमैन सॅक्स, एचपी, एचटी मीडिया, आईवीपी, आईसीआईसीआई, इनफोज, आईटीसी, जेपीएमसी, केपीएमजी, लुइस ड्रेफस, मर्सक लाइन, मैरिको, ऑफबिजनेस, पिरामल, पीपीजी एशियन पेंट्स, रॉयल इनफील्ड आरपीजी, शैल, सिनर्जी कंसल्टिंग, टाटा मेटालिक्स, टाटा स्टील, टाटा मोटर्स, विप्रो टेक्नोलॉजीज और यस बैंक जैसे प्रमुख रिक्रूटर्स द्वारा गरिमामयी बनाया गया।

पहली बार भर्ती कर रहे 32 नियोक्ताओं में एजिस रिसोर्सेज, अक्सट्रिया, बाटा, डीई शॉ ग्रुप, एपिक इनडीफाई, एन्हांस ग्रुप, एक्सपोर्ट ट्रेडिंग ग्रुप, फेरमेंटा बायोटेक, फील्ड फ्रेश फूड्स, गो–एमएमटी, होमक्रेडिट, लेन्सकार्ट, यूनाइटेड हेल्थ ग्रुप, पेटीएम, पॉलीकैब, रिविगो, रोलैंड बर्जर, समुनती फाइनेंस, टाटा ग्लोबल बेवरेजेज, ट्रेसविस्टा फाइनेंशियल सर्विसेज और जोमेटो शामिल थे। जीई हेल्थकेयर ने पहली बार अपना प्रतिष्ठित वाणिज्यिक नेतृत्व कार्यक्रम शुरू किया।

संस्थान के संकाय सदस्यों की महत्त्वपूर्ण सहभागिता

आईआईएफटी के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत ने वर्ष के दौरान विभिन्न महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों में अपनी सहभागिता दर्ज की। इन कार्यक्रमों की कड़ी में निदेशक महोदय ने 9 जुलाई 2018 को इंडिया हेबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में विश्व बैंक के निदेशक कैरोलिन फ्रायंड के साथ एक संवादमूलक सत्र में भाग लिया। 30 अगस्त 2018 को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा विदेशी मामलों के अध्यक्ष हेतु चयन प्रक्रिया में साक्षात्कार हेतु गठित चयन समिति के सदस्य के रूप में अपनी सहभागिता दर्ज की। इसके अतिरिक्त, 5 सितम्बर 2018 को 'अध्यापक दिवस' के अवसर पर आईसीएफएआई बिजनेस स्कूल, गुरूग्राम द्वारा प्रोफेसर मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने चयनित छात्रों को पुरस्कार प्रदान किए।

प्रोफेसर मनोज पंत ने डॉ. गुयेन जुआन ट्रुंग, महानिदेशक, वियतनाम इंस्टीट्यूट फॉर इंडियन एंड साउथवेस्ट एशियन स्टडीज के साथ एक बैठक की और उनके साथ 28 जुलाई 2018 को एक एमओयू पर हस्ताक्षर किए।

प्रोफेसर पंत ने आईआईएफटी अल्युमनी चैप्टर मीट और लेहमन कालेज, न्यू यॉर्क, यूएसए के संबंध में यूएसए का दौरा (15–23

सितम्बर 2018) किया जहाँ आईआईएफटी और यूएसए के लेहमन कालेज के बीच एक एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए।

कोलकाता केंद्र के प्रमुख प्रोफेसर डॉ. के. रंगराजन ने दिनांक 5 जुलाई 2018 को सीआईआई द्वारा 'संशोधित एक्जिम पॉलिसी 2018' पर आयोजित पैनल चर्चा में अपनी सहभागिता दर्ज की। महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों की श्रृंखला में 21 अगस्त 2018 को पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा डॉ. के. रंगराजन को 'बंगाल एसएमईज हेतु निर्यात उन्मुखता' पर आयोजित एमएसएमई कॉनक्लेव (SYNERGY 2018) में विषय–वस्तु पर संबोधन हेतु आमंत्रित किया गया।

21 अगस्त 2018 को एमएसएमई कॉनक्लेव में वक्तव्य देते हुए कोलकाता केंद्र के प्रमुख प्रोफेसर डॉ. के. रंगराजन

अप्रैल 2018 में डॉ. के. रंगराजन को भारत में चमड़े के निर्यात के बाजार अवसरों की तकनीकी प्रस्तुति में एक आउटरीच कार्यक्रम में वक्ता के तौर पर आमंत्रित किया गया था। यह कार्यक्रम सीएसआईआर–सीएलआरआई द्वारा चमड़ा निर्यात परिषद और कोलकाता क्लस्टर में चमड़ा कारोबारियों के सहयोग से आयोजित किया गया था।

उपर्युक्त मुख्य कार्यक्रमों के क्रम में डॉ. के. रंगराजन क्षेत्रीय एमएसएमई केंद्र, शिमला में एकेडमी ऑफ इंटरनेशनल बिजनेस द्वारा आईआईएफटी के सहयोग से अप्रैल 2018 में आयोजित ''मेक इन इंडिया'' परिप्रेक्ष्य भारत चैप्टर सम्मेलन तथा ईंड–आईबी कार्यशाला मॉड्यूल–2 के संयोजक रहे।

डॉ. के. रंगराजन को डब्ल्यूटीसी भुवनेश्वर द्वारा मई 2018 में भुवनेश्वर में आयोजित विश्व व्यापार दिवस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। डॉ. के. रंगराजन को सीआईआई के सहयोग से कोयम्बटूर में अप्रैल 2018 को एक–दिवसीय निर्यात क्लिनिक वर्कशॉप में रिसोर्स पर्सन के रूप में भी आमंत्रित किया गया था।

प्रोफेसर डॉ. सैकत बैनर्जी ने 7–8 सितम्बर 2018 के दौरान पश्चिमी बंगाल में एमडीआई–मुर्शिदाबाद द्वारा आयोजित ''स्थिरता विकास और मूल्य श्रृंखला परिप्रेक्ष्य'' पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में कांफ्रेंस मार्केटिंग ट्रैक चेयर के रूप में भाग लिया।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना
देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।

– महात्मा गाँधी

राष्ट्रीय कार्यक्रम

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी), वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में एक स्वायत्त शासी संस्था तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तहत मानित विश्वविद्यालय है। संस्थान अपने शिक्षण–प्रशिक्षण व अनुसंधान कार्यों के साथ–साथ राष्ट्रीय कार्यक्रमों को एक अनुष्ठान के रूप में आयोजित करते हुए राष्ट्र धर्म का निर्वहन करता है। वर्ष 2018–19 के दौरान कोलकाता केंद्र सहित दिल्ली परिसर में इस श्रृंखला में आयोजित कार्यक्रमों का विवरण निम्न प्रकार है:–

आतंकवाद–विरोधी दिवस

संस्थान में 21 मई 2018 को ''आतंकवाद–विरोधी दिवस'' मनाया गया जिसका उद्देश्य देश के सभी वर्गों के लोगों के बीच आतंकवाद और हिंसा के भारी नुकसान और लोगों, समाज व पूरे राष्ट्र पर इसके दुष्प्रभाव के प्रति जागरूकता पैदा करना था। इसके साथ ही, हिंसा के कारण आम लोगों की पीड़ा को दर्शाते हुए देश के लोगों को इससे दूर रखना है। इस अवसर पर, संस्थान परिसर में एकत्रित संस्थान के सभी सदस्यों को निदेशक, आईआईएफटी द्वारा शपथ दिलाई गई।

''आतंकवाद–विरोधी दिवस'' शपथ ग्रहण समारोह

योग दिवस

भारत के साथ–साथ संपूर्ण विश्व में 21 जून 2018 को ''योग दिवस'' मनाया गया। साथ ही हमारे संस्थान में भी इस दिन ''योग दिवस'' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अतिथि वक्ता के रूप में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान से आमंत्रित मनोविज्ञान विशेषज्ञ डॉ. अंजु धवन, एमबीबीएस, एमडी ने रोजमर्रा के जीवन में योग तथा ध्यान के लाभ बताते हुए इसके व्यावहारिक पक्ष को प्रस्तुत किया। इसी क्रम में, विख्यात योग विशेषज्ञ डॉ. अजय शास्त्री द्वारा योग के व्यावहारिक व सिद्धांत पक्ष की जानकारी दी गई।

योग दिवस के अवसर पर योग तथा ध्यान के लाभ बताती हुई डॉ. अंजु धवन, एमबीबीएस, एमडी अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान से आमंत्रित मनोविज्ञान विशेषज्ञ

योग के महत्त्व को समझते हुए शास्त्री जी की देख–रेख में संस्थान के कर्मचारियों व छात्रों के लिए एकांतर दिवसों में योग कक्षाएं भी चलाई जाती हैं। कार्यक्रम के अंत में, संस्थान से प्रोफेसर डॉ. आर. एम. जोशी ने उपस्थित सभी संस्थान सदस्यों को साधुवाद दिया और अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

संस्थान, दिल्ली परिसर में योग दिवस के अवसर पर सभागार में योग करते संस्थान सदस्य

स्वतंत्रता दिवस–2018 का आयोजन

भारत विदेश व्यापार संस्थान में गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी 15 अगस्त 2018 को 'स्वतंत्रता दिवस' का आयोजन धूमधाम से किया गया। आईआईएफटी निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने संकाय के सदस्यों, छात्रों, अधिकारियों तथा कर्मचारियों की उपस्थिति में झंडारोहण किया। इस अवसर पर उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने अमूल्य जीवन की आहुति देने वाले वीर शहीदों का स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। इसके साथ ही, स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े देश के महान नेताओं का भी नमन एवं स्मरण किया। उन्होंने देश की स्वतंत्रता को बनाए रखने और देश के विकास कार्यों में भारत सरकार का हर संभव समर्थन एवं सहयोग करने का अनुरोध किया। उन्होंने 'स्वतंत्रता दिवस–2018 के अवसर पर सभी को शुभकामनाएँ एवं बधाई प्रेषित की। तत्पश्चात उन्होंने उपस्थित संकाय के सदस्यों को भी अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया।

'स्वतंत्रता दिवस' के अवसर पर संबोधित करते हुए आईआईएफटी निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत

संस्थान के छात्रों की ओर से एक छात्र प्रतिनिधि ने अपने विचार प्रस्तुत किए। इसमें उन्होंने संस्थान की बेहतर शिक्षा संस्कृति, शैक्षिक वातावरण और उच्च प्लेसमेंट के बारे में चर्चा की। अंत में मुख्य अतिथि को धन्यवाद ज्ञापित करने के साथ यह समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभी को जलपान के लिए भी आमंत्रित किया गया।

सद्भावना दिवस

प्रत्येक वर्ष देश में स्वर्गीय श्री राजीव गांधी के जन्म दिवस अर्थात 20 अगस्त को राष्ट्रीय स्तर पर सद्भावना दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्वर्गीय श्री राजीव गांधी देश के एक युवा नेता एवं प्रधानमंत्री थे। इस दिन उनके द्वारा किए गए अविस्मरणीय प्रयास, राष्ट्रीय प्रगति के कार्य, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय परियोजनाओं में उनके योगदान को याद किया जाता है। सद्भावना की विषय–वस्तु सभी धर्मों, भाषाओं और क्षेत्रों के लोगों में राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव बढ़ाती है। 18 अगस्त 2018 को शपथ समारोह का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के सभी सदस्यों ने भाग लिया।

यह दिन राष्ट्रीय प्रगति में साम्प्रदायिक सद्भाव एवं एकता को बढ़ाने में उनके योगदान के संबंध में मनाया जाता है। संस्थान में 18 अगस्त 2018 को शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें सभी सदस्यों ने भाग लिया।

शोक सभा

20 अगस्त 2018 को पूर्व प्रधान मंत्री 'भारत रत्न' स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए संस्थान के प्रांगण में एक शोक सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के सभी सदस्यों ने श्री वाजपेयी जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए तथा आईआईएफटी निदेशक प्रो. मनोज पंत जी ने सभी सदस्यों के सन्मुख देश के प्रति उनके योगदान को याद किया। तदोपरांत, सभी ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए दो मिनट का मौन धारण किया।

पूर्व प्रधान मंत्री भारत रत्न स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के लिए देश के प्रति उनके योगदान को याद करते शोक सभा का आयोजन

स्वच्छता पखवाड़ा

आईआईएफटी परिसर में 15 सितम्बर से 2 अक्तूबर 2018 के दौरान ''स्वच्छता पखवाड़ा'' मनाया गया। इसका उद्देश्य

स्वच्छता का संदेश न केवल विधार्थियों में वरन् आस–पास के क्षेत्रों में फैलाना था। कार्यक्रम को सुनियोजित तरीके से सफल बनाने के लिए छात्रों व कर्मचारियों के बीच समितियों का गठन किया गया। इस दौरान आईआईएफटी निदेशक प्रो. मनोज पंत सहित संस्थान के वरिष्ठ अधिकारियों/संकाय सदस्यों ने न केवल संस्थान के अंदर, अपितु आस–पास के क्षेत्र में सफाई अभियान के अंतर्गत श्रमदान किया।

''स्वच्छता पखवाड़ा'' के दौरान श्रमदान करते हुए आईआईएफटी निदेशक प्रो. मनोज पंत सहित संस्थान के समस्त सदस्यगण

आईआईएफटी छात्रों द्वारा भी इस दौरान सफाई करते हुए श्रमदान किया गया तथा कैंटीन/छात्रावास व भोजनालय को सुव्यवस्थित व साफ करने के लिए विशेष अभियान चलाया गया।

''स्वच्छता पखवाड़ा'' के दौरान श्रमदान करते हुए संस्थान के छात्रगण

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

संस्थान में 29 अक्तूबर से 03 नवम्बर 2018 के दौरान ''सतर्कता जागरूकता सप्ताह'' ''भ्रष्टाचार उन्मूलन – एक नया भारत बनाएं'' विषय के साथ मनाया गया। इसका उद्देश्य भ्रष्टाचार मुक्त भारत था जिसके अंतर्गत ईमानदारी को बढ़ावा देने और भ्रष्टाचार से लड़ाई में जन भागीदारी था। भारत जैसे विशाल देश में हम जन भागीदारी के बिना ईमानदारी को न तो प्रोत्साहित कर सकते हैं और ना ही भ्रष्टाचार से लड़ाई लड़ सकते हैं। इस अवसर पर संस्थान में आईआईएफटी के कुलसचिव डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता द्वारा संस्थान के एट्रियम में सभी सदस्यों को शपथ दिलाई गई।

29 अक्तूबर 2018 को ''सतर्कता जागरूकता सप्ताह'' के अवसर पर शपथ लेते हुए संस्थान के सदस्य

राष्ट्रीय एकता दिवस

संस्थान में 31 अक्तूबर 2018 को ''राष्ट्रीय एकता दिवस'' के रूप में मनाया गया। इसे भारत के 'लौह पुरूष' कहे जाने वाले स्वतंत्रता सेनानी व पूर्व गृह मंत्री स्व. सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा देश को एकजुट करने के लिए अनेक प्रयास किए गए थे तथा उनके इन कार्यों को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के उद्देश्य से इस दिन को ''राष्ट्रीय एकता दिवस'' के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर सरदार वल्लभ भाई पटेल को याद करते हुए संस्थान के एट्रियम में सभी सदस्यों को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई गई।

स्वच्छ भारत अभियान

1–15 नवम्बर 2018 के दौरान संस्थान में स्वच्छता अभियान चलाया गया। इसका उद्देश्य पूरे देश में पर्यावरण को स्वच्छ बनाने का संदेश देने के लिए राष्ट्रीय भावना के साथ एक जन आंदोलन खड़ा करना था। इस अभियान के अंतर्गत कार्यालयों के अंदर व आस–पास सफाई को ध्यान में रखते कुछ बिंदु निर्धारित किए गए थे जैसे – कमरे, बाथरूम, कॉरीडोर,

मैस/कैंटीन आदि की सफाई करना, फाइलों का रख–रखाव, रद्दी फाइलों, उपयोग में न आने वाले सामान को हटाना, कर्मचारियों व छात्रों द्वारा श्रमदान, स्वच्छ भारत अभियान के मध्यनजर निबंध/वाद–विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन, आदि। संस्थान में उक्त सभी बिंदुओं का पालन किया गया।

1–15 नवम्बर 2018 के दौरान संस्थान में ''स्वच्छता अभियान''

दिवाली की पूर्व संध्या

5 नवम्बर 2018 को पवित्र दिवाली पर्व की पूर्व संध्या पर संस्थान के प्रांगण में शुभ दिवाली मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पावन पर्व की पूर्व वेला पर संस्थान के सभी सदस्यों ने मिलकर दीप प्रज्जवलित किए एवं पूजा–अर्चना की। निदेशक महोदय ने सभी सदस्यों को दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएं दीं तथा सभी के सहयोग से सभी के हित में संस्थान में कुछ नया व अच्छा करने का आह्वान किया। तदोपरांत, सभी ने मिलकर जलपान किया और एक–दूसरे को दीपावली की शुभकामनाएं आदान–प्रदान कीं।

कौमी एकता सप्ताह

19 से 25 नवम्बर 2018 के दौरान संस्थान में सांप्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय एकता की भावना पर जोर देने के उद्देश्य से 'कौमी एकता सप्ताह' का आयोजन किया गया। यह आयोजन हमें एक बहु–सांस्कृतिक और बहु–धार्मिक समाज में सहनशीलता, सह–अस्तित्त्व और भाईचारे के जीवन मूल्यों के प्रति सदियों पुरानी परंपराओं और विश्वास की पुष्टि करने का अवसर प्रदान करता है। इस अवसर पर, अन्य कार्यक्रमों के अलावा 24 नवम्बर, 2018 'झंडा दिवस' के रूप में मनाया गया जिसमें संस्थान के सदस्यों को सांप्रदायिक सद्भाव का स्टिकर भेंट किया गया और सदस्यों ने स्वेच्छा से सांप्रदायिक सद्भाव की राष्ट्रीय बुनियाद की गतिविधियों के समर्थन के लिए धनराशि दान में दी।

संविधान दिवस

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2015 में, 26 नवम्बर को 'भारत रत्न' डॉ. भीम राव अम्बेडकर की 125वीं जन्म शती को ''संविधान दिवस'' के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया था। तब से, प्रत्येक वर्ष देश में 26 नवम्बर, ''संविधान दिवस'' के रूप में मनाया जाता है। डॉ. अम्बेडकर जी ने भारत के महान संविधान को 2 वर्ष 11 माह 18 दिन में पूरा कर 26 नवम्बर 1949 को राष्ट्र को समर्पित किया था। गणतंत्र भारत में 26 जनवरी 1950 से संविधान अमल में लाया गया था। संस्थान के प्रांगण में 27 नवम्बर 2018 को आईआईएफटी निदेशक, प्रोफेसर मनोज पंत द्वारा संविधान उद्देशियका पढ़ी गई।

नव वर्ष समारोह

वर्ष 2019 के आगमन पर संस्थान में 1 जनवरी 2019 को नव वर्ष मंगल–मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इस शुभ अवसर पर प्रोफेसर मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी सहित संस्थान के वरिष्ठ संकाय सदस्यों व अधिकारियों ने संस्थान के प्रांगण में एकत्रित आईआईएफटी परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं दी तथा सभी सदस्यों ने एक–दूसरे को नव वर्ष की शुभकामनाएं दीं व एक साथ जलपान किया।

01 जनवरी 2019 को नव वर्ष मंगल–मिलन समारोह पर हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता, कुलसचिव, आईआईएफटी

राष्ट्रीय मतदाता दिवस

देश में मतदान को प्रजातंत्र के पावन एवं महान पर्व का रूप दिया गया है। मतदान में मतदाताओं की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए 25 जनवरी को ''राष्ट्रीय मतदाता दिवस'' के तौर पर मनाया जाता है। संस्थान में 25 जनवरी 2019 को प्रातः 11 बजे अट्रियम में मतदान में भागीदारी एवं बिना किसी प्रभाव के मतदान करने के संबंध में सभी सदस्यों को आईआईएफटी के कुलसचिव डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता ने शपथ दिलवाई।

25 जनवरी 2019 को ''राष्ट्रीय मतदाता दिवस'' के अवसर पर शपथ लेते हुए संस्थान के सदस्य

गणतंत्र दिवस समारोह

आईआईएफटी कोलकाता केंद्र में 26 जनवरी 2019 को गणतंत्र दिवस समारोह शानदार ढंग से मनाया गया। केंद्र प्रमुख डॉ. के. रंगराजन ने समारोह का शुभारंभ ध्वजारोहण कर राष्ट्रगान के साथ किया। तदोपरांत, केंद्र के सदस्य व छात्र एक सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए ओपन एयर थिएटर में एकत्रित हुए, जो कि भावी–प्रबंधकों की बहुमुखी प्रतिभा को चित्रित करता है। छात्रों द्वारा एकल गान और समूह गीतों के बाद मधुर बांसुरी वादन और सिंथेसाइजर इंस्ट्रूमेंटल का कार्यक्रम हुआ।

आईआईएफटी के कोलकाता केंद्र में गणतंत्र दिवस–समारोह

बलिदान दिवस

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की पुण्य तिथि 30 जनवरी को भारत की आजादी के संघर्ष में अपने प्राणों का बलिदान करने वाले भारत माता के वीर सपूतों के बलिदान को स्मरण एवं नमन करने के लिए प्रति वर्ष 'बलिदान दिवस' के रूप में मनाया जाता है। अतः भारतीय स्वतंत्रता के महान सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए उनके सम्मान में 30 जनवरी 2019 को प्रातः 11 बजे संस्थान के सदस्यों द्वारा दो मिनट का मौन धारण किया गया।

सरस्वती पूजा

कोलकाता केंद्र पर हर वर्ष की भांति बसंत पंचमी के अवसर पर 10 फरवरी 2019 को सरस्वती पूजा का आयोजन किया गया। सरस्वती पूजा पूर्वी भारत, पश्चिमोत्तर बांग्लादेश, नेपाल और कई राष्ट्रों में बड़े उल्लास से मनाई जाती है। हिंदू कैलेंडर के अनुसार यह पर्व माघ माह के पांचवें दिन पर हर साल मनाया जाता है। माँ सरस्वती को विद्या अर्थात ज्ञान की देवी माना जाता है। सरस्वती पूजा का आयोजन उन्हीं के सम्मान में किया जाता है। केंद्र पर छात्रों ने माँ सरस्वती की पूजा की और आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त, केंद्र द्वारा सांस्कृतिक एवं मनोरंजक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

कोलकाता केंद्र पर सरस्वती पूजा – कार्यक्रम

छात्र गतिविधियां

संस्थान में अध्ययन–अध्यापन के दौरान, छात्र विविध शैक्षणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक व खेल–कूद संबंधी गतिविधियों का आयोजन करते हैं, जिनका उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में छात्रों की प्रतिभा को निखारने के लिए अवसर पैदा करना है। इन कार्यक्रमों में संस्थान के अल्युमनाई भी अपनी भूमिका निभाते हैं। वर्ष 2018–19 के दौरान छात्रों द्वारा आयोजित गतिविधियों का विवरण निम्न प्रकार है:

ट्रेड विंड्सः वार्षिक व्यापार सम्मेलन 2018

ट्रेड विंड्स, आईआईएफटी का वार्षिक बिजनेस शिखर सम्मेलन है जो आईआईएफटी के छात्रों को उद्योग के प्रतिष्ठित पेशेवरों के साथ–साथ विभिन्न सम्मानित अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ बातचीत करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। गत वर्ष यह कार्यक्रम 31 जुलाई से 2 अगस्त 2018 के दौरान आयोजित किया गया जिसके उद्घाटन सत्र का विषय – ''मनुष्य बनाम मशीन'' या ''मनुष्य और मशीन'' था। इस कॉन्क्लेव का उद्देश्य मशीनों और मनुष्यों के लिए विकास और प्रगति के पैटर्न का विश्लेषण करना और पूर्वानुमान लगाना था जो अलग–अलग होंगे। हालांकि, दोनों एक–दूसरे के साथ बहुत अंतर–संबंध रखते हैं, क्योंकि दोनों भविष्य की दुनिया में सह–अस्तित्व में होंगे।

ट्रेड विंड्सः वार्षिक व्यापार सम्मेलन का उद्घाटन समारोह

राष्ट्रीय विपणन शिखर सम्मेलन

उपरोक्त विषय पर छात्रों के इस कार्यक्रम का आयोजन आईआईएफटी, नई दिल्ली में 31 जुलाई 2018 को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का विषय "मशीनें उपभोक्ता खरीद व्यवहार को मजबूत बनाती हैं'' लिया गया था। इस कार्यक्रम के दौरान प्रतिष्ठित वक्ताओं अर्थात श्री योगेश बेलानी, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, फील्डफ्रेश फूड्स प्राइवेट लिमिटेड, सुश्री जैकलीन मुंदकुर, कंज्यूमर सर्विस एट द फ्यूचर ग्रुप, श्री हितेश मल्होत्रा, मुख्य विपणन अधिकारी, नायिका.कॉम आदि ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज की।

राष्ट्रीय विपणन शिखर सम्मेलन

राष्ट्रीय नेतृत्व शिखर सम्मेलन

राष्ट्रीय नेतृत्व शिखर सम्मेलन 31 जुलाई 2018 को आईआईएफटी, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। इस आयोजन का विषय था – ''बुद्धिमान मशीनों के युग में नेताओं को तैयार करना''। इस कार्यक्रम में प्रतिष्ठित वक्ताओं जैसे श्री नितिन सेठी, उपाध्यक्ष – डिजिटल, इंडिगो, श्री सुभाशिष मजूमदार, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, हिंदुजा मीडिया, श्री जयदीप अग्रवाल, प्रबंध निदेशक (एचआर शेयर्ड सर्विसेज, डेलोइट इंडिया आदि ने भाग लिया।

राष्ट्रीय नेतृत्व शिखर सम्मेलन

राष्ट्रीय व्यापार शिखर सम्मेलन

1 अगस्त 2018 को आईआईएफटी, नई दिल्ली में राष्ट्रीय व्यापार शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया। इस आयोजन का विषय

''व्यापार जगत में डिजिटल परिवर्तनः निहितार्थ'' लिया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रतिष्ठित वक्ताओं जैसे डॉ. सुधांशु, उप महाप्रबंधक, एपीईडीए, श्री राजीव यादव, उपाध्यक्ष–अनाज और तिलहन, कोफको इंटरनेशनल, श्री प्रशांत रेड्डी, सहायक महाप्रबंधक, आर्चर डेनियल्स मिडलैंड, आदि ने भाग लिया तथा कार्यक्रम के विषय पर वक्तव्य दिए।

राष्ट्रीय वित्त शिखर सम्मेलन

नई दिल्ली स्थित आईआईएफटी में 1 अगस्त 2018 को राष्ट्रीय वित्त शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान विषय के रूप में – ''कैसे प्रौद्योगिकी वित्तीय सेवा उद्योग के भविष्य को आकार देगा?'' लिया गया। इस कार्यक्रम में प्रतिष्ठित वक्ताओं जैसे श्री श्रीराम अय्यर, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, एआर वेल्थ मैनेजमेंट ग्रुप, श्री कालेश्वरन अरुणाचलम, सीएफओ, फ्यूचर लाइफस्टाइल–फ्यूचर ग्रुप, श्री सम्राट झा, निदेशक, केपीएमजी इंडिया आदि ने कार्यक्रम के विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए तथा छात्रों के साथ संवाद किया।

राष्ट्रीय डिजिटल शिखर सम्मेलन

ट्रेड विंड्स के अंतर्गत कार्यक्रमों की कड़ी में राष्ट्रीय डिजिटल शिखर सम्मेलन 2 अगस्त 2018 को आईआईएफटी, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। इस आयोजन का विषय था – ''कैसे इंटेलिजेंट डिजिटल मेश हर व्यवसाय परत को बदल देगा''। इस कार्यक्रम में प्रतिष्ठित वक्ताओं जैसे श्री सुभाशिष घोष, निदेशक, डेलॉइट एनालिटिक्स, श्री श्रीकांत लंका, प्रोग्रामेटिक अकाउंट स्ट्रेटजी के प्रमुख, सुश्री स्मृति आहूजा, ग्लोबल एचआर और लर्निंग हेड, कॉग्निजेंट आदि ने अपने वक्तव्यों के साथ कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

राष्ट्रीय ऑपरेशन शिखर सम्मेलन

2 अगस्त 2018 को आईआईएफटी, नई दिल्ली में छात्रों के वार्षिक कार्यक्रम ''राष्ट्रीय ऑपरेशन शिखर सम्मेलन'' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर चर्चा हेतु विषय के रूप में ''स्वचालन, रोबोट और एआईः डिजिटल आपूर्ति श्रृंखला का उदय'' लिया गया। इस कार्यक्रम में प्रतिष्ठित वक्ताओं जैसे श्री आनंद मैठानी, प्रमुख–एससीएम एंड आईटी, अपोलो टायर्स, श्री प्रदीप मिश्रा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष–परचेजिंग, वोल्वो–आयशर, श्री राजीव सिंह, सीओओ, कार्वी कंप्यूटर शेयर, आदि ने कार्यक्रम के विषय पर छात्रों के साथ संवाद करते हुए अपने दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया।

टेडएक्स – आईआईएफटी

आईआईएफटी दिल्ली में मीडिया समिति ने अपने मार्की इवेंट अर्थात टेडएक्सआईआईएफटीदिल्ली 2018 को प्रस्तुत किया। टेडएक्सआईआईएफटीदिल्ली के तीसरे संस्करण का विषय था – ''एस्पायर बिलीव कांकेर''। इस कार्यक्रम का आयोजन 21 अक्टूबर 2018 को किया गया। छात्रों ने अनेक प्रसिद्ध वक्ताओं को आमंत्रित कर कार्यक्रम पूर्णरूप से सफल बनाया।

इंटरनेशनल बिजनेस कॉन्क्लेव 2018

अंतरराष्ट्रीय बिजनेस कॉन्क्लेव (आईबीसी) आईआईएफटी का एक वार्षिक कार्यक्रम है, जो आईआईएफटी एलुमनी चैप्टर के सहयोग से एक अंतरराष्ट्रीय स्थान पर आयोजित किया जाता है। वर्ष 2018 में इस कॉन्क्लेव का आयोजन 28 सितम्बर को सिंगापुर में किया गया। आईबीसी पूर्व छात्रों, छात्रों एवं संकाय के लिए एक ऐसा मंच है, जहाँ उन्हें हर वर्ष तय किए गए किसी नए विषय पर श्रेष्ठ विद्वान जनों को सुनने का अवसर मिलता है। इसके अतिरिक्त, इस सम्मेलन में भाग लेने वाले अंतरराष्ट्रीय बिजनेस के क्षेत्र से जुड़े संस्थानों की गतिविधियों की जानकारी मिलती है, परिणामस्वरूप संस्थान सदस्यों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य से अद्यतन कराने में मददगार साबित होता है। यह आईआईएफटी के लिए संभावित नियोक्ताओं के साथ एक बैठक का आधार भी है।

इंटरनेशनल बिजनेस कॉन्क्लेव 2018

कार्यक्रम की शुरुआत आईआईएफटी के निदेशक प्रो. मनोज पंत ने एक परिचयात्मक संबोधन के साथ की। विषय की शुरुआत के बाद, पैनल शुरू हुआ तथा पैनल का संचालन श्री केवी राव, रेजिडेंट डायरेक्टर–आसियान, टाटा संस लिमिटेड द्वारा किया गया।

खेलकूद गतिविधियां

आईआईएफटी में खेलकूद समिति एड्रेनालाइन ने अल्टीमेट वॉरियर्स लीग (यूडब्ल्यूएल)–'द एन्युअल स्पोर्ट्स एक्सट्रावेगंजा' का आयोजन किया। इस दौरान आईआईएफटी में 10 दिन तक खेलकूद का वातावरण रहा। मैंलांग (सांस्कृतिक समिति) की मदद से एड्रेनालाइन द्वारा ''बिग फाइट'' के अंतर्गत खेल प्रतियोगिताएं सुनिश्चित की गई। यह खेलकूद का एक ऐसा आयोजन था जिसमें एमबीए (आईबी) बैचों के भीतर विभिन्न कक्षाओं की टीमों के बीच वर्चस्व की लड़ाई थी।

खेल प्रतियोगिता

खेल प्रतियोगिता

एस्पिरेंट सिटी मीट

आईआईएफटी की संस्कृति के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए तथा प्रवेश के संबंध में किसी भी चिंता का समाधान करने के लिए, दिल्ली व कोलकाता की मीडिया कमेटियों ने विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर प्रदान की गई लगातार सहायता के अतिरिक्त आने वाले बैच के लिए सिटी चैप्टर मीट का आयोजन किया। ये सिटी मीट्स 2018 के मई महीने में दिल्ली, मुंबई, हैदराबाद, चेन्नै, बेंगलुरु और कोलकाता में आयोजित किए गए थे तथा उम्मीदवारों के सभी प्रश्नों का समाधान किया गया था।

5वीं वार्षिक आईआईएफटी मैराथन

मैराथन अक्टूबर 2018 में आयोजित किया गया पहला प्री–क्वॉ वादिस है। मैराथन मार्ग आईआईएफटी से प्रारंभ होकर आईआईएफटी पर ही समाप्त हुआ। इसमें अनुभवी पेशेवर धावक, कॉलेज के छात्रों और गैर–सरकारी संगठन के बच्चों की भागीदारी रही। आयोजन को डेकाथलॉन, एनरजल, आदि द्वारा प्रायोजित किया गया।

आईआईएफटी मैराथन

अल्युमनस ऑफ द ईयर

प्रत्येक वर्ष संस्थान अपने उस पूर्व छात्र को संस्थान द्वारा दिए जाने वाले एक प्रतिष्ठित पुरस्कार ''अल्युमनस ऑफ द ईयर'' से सम्मानित करता है जो अपने कैरियर में बेहद सफल रहा/रही है। वर्ष 2005 में इस पुरस्कार की स्थापना के बाद से, यह उद्योग के दिग्गजों यथा श्री के.वी. राव, निवासी निदेशक आसियान, टाटा पावर, श्री सिराज चौधरी, अध्यक्ष कारगिल इंडिया, श्री मोहित मल्होत्रा, सीईओ डॉबर इंटरनेशनल, आदि को प्रदान किया गया है।

वर्ष 2018 में, संस्थान के माननीय निदेशक ने ग्रैंड अल्युमनी रीयूनियन के अवसर पर 17 नवम्बर को एमवे के ग्लोबल सीईओ श्री मिलिंद पंत को ''अल्युमनस ऑफ द ईयर'' पुरस्कार प्रदान किया। श्री मिलिंद पंत वर्ष 1993 बैच के एक पूर्व छात्र हैं।

रक्तदान शिविर

रक्तदान शिविर का आयोजन 21 नवंबर 2018 को एचडीएफसी बैंक के सहयोग दिल्ली परिसर में आयोजित किया गया। शिविर के दौरान आईआईएफटी के 100 छात्रों ने इस पुनीत कार्य के लिए रक्तदान किया तथा समाज में एक जागरूकता का संदेश दिया।

ट्रेजर हंट 2019

24 जनवरी 2019 में एक पैन दिल्ली ट्रेजर हंट का आयोजन किया गया जिसमें बाइकर समूहों एवं कालेज छात्रों ने भाग लिया। इसमें प्रतिभागी रेडियो पर घोषित दिल्ली में अलग–अलग जगहों पर फैले सुरागों को हल करते देखे गए।

क्वॉ वादिस–2019

क्वॉ वादिस–2019 का आयोजन जनवरी माह में किया गया। संस्थान में इस तीन–दिवसीय कार्यक्रम के दौरान कई प्रबंधन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों के क्रम में 24 जनवरी को हिप हॉप इंटरनेशनल, रागा, द लोकल ट्रेन; 25 जनवरी को नुक्कड़ नाटक, वैटन बैंड्स व कॉमेडी कैफे का आयोजन किया गया। कॉमेडी कैफे में सुप्रसिद्ध कलाकार श्री राहुल सुब्रमणियम की गरिमामयी उपस्थिति रही तथा 26 जनवरी को नुक्कड़ नाटक फाइनल का आयोजन किया गया। इस दौरान कैम्पस प्रिंसिज व जुबिन नौटियाल की प्रस्तुति ने छात्रों के इस वार्षिक कार्यक्रम को अत्यधिक रोचक तथा सकारात्मक सामाजिक संदेशों से परिपूर्ण किया। इस आयोजन में भारत के अन्य प्रबंधन संस्थान तथा महाविद्यालयों के छात्रों की भागीदारी देखी गई।

नुक्कड़ नाटक का दृश्य

नेतृत्व कॉन्क्लेव 2019

आईआईएफटी कोलकाता केंद्र पर आयोजित नेतृत्व कॉन्क्लेव 2019 का उद्घाटन 9 मार्च 2019 किया गया। छात्रों द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम अनुभव तथा नए विचारों के संपूर्ण पुनर्रचना एवं प्रसार पर केंद्रित था। इस अवसर पर उद्योग जगत के दिग्गजों एवं अग्रणियों ने बाहरी वातावरण व वर्तमान के बिजनेस परिदृश्य में बदलावों को लागू किए जाने और इस वर्ष के थीम 10ईयरचैलेंज तथा टैलेंट, टेक्टिस, टारगेट व प्रौद्योगिकी पर इसके प्रभावों के संबंध अपनी अंतरदृष्टि एवं धारणाओं को साझा किया।

नेतृत्व कॉन्क्लेव 2019

कार्यक्रम के मुख्य सत्र में पॉलिकेब इंडिया लि. के रणनीति व मानव संसाधन के अध्यक्ष श्री सुरेश कुमार ने अपना वक्तव्य दिया। कार्यक्रमों के सभी सत्रों व पैनल चर्चा के दौरान आईआईएफटी छात्रों द्वारा पेचीदा और गूढ़ प्रश्न पूछे गए, जो सम्मेलन की सार्थकता को प्रमाणिक रूप से सिद्ध करता है।

सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम

सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम के तहत छात्रों को समाज के वंचित वर्गों की सेवा करने वाले गैर–सरकारी संगठनों के मार्गदर्शन में सामाजिक कार्य के लिए एक परियोजना करनी आवश्यक होती है। यह कार्यक्रम हमारे छात्रों को सामाजिक कार्यों के प्रति संवेदनशील बनाने और सामाजिक रूप से जिम्मेदार वैश्विक प्रबंधक बनने के लिए शुरू किया गया है।

इस कार्यक्रम से 2806 से अधिक छात्र लाभान्वित हुए हैं। छात्र सामाजिक कार्य के सभी महत्त्वपूर्ण मापदंडों पर काम करते हैं और एनजीओ द्वारा सौंपे गए कार्य पर एक परियोजना करते हैं। हमारे छात्रों द्वारा सामाजिक कार्यों के लिए किए गए प्रयासों में कुछ प्रमुख पैरामीटर का विवरण निम्न प्रकार है:

- एचआईवी/एड्स जागरूकता
- बच्चों के लिए शिक्षा – गली से स्कूल
- वंचित बुजुर्ग लोगों का कल्याण
- बच्चा गोद लेना
- पर्यावरण और सामुदायिक विकास
- जल प्रबंधन, अपशिष्ट प्रबंधन और पुनर्चक्रण
- साक्षरता, स्वच्छता और आजीविका
- महिला सशक्तिकरण और कन्या भ्रूण हत्या को रोकना
- बाल शिक्षा, कल्याण और स्वास्थ्य
- बेघरों के लिए आश्रय, सामुदायिक विकास
- विकलांगता, आदि।

छात्रों को दिल्ली और कोलकाता के विभिन्न गैर–सरकारी संगठनों के साथ जुड़ाव के लिए विभिन्न फोकस क्षेत्रों के साथ नियुक्त किया गया है। आईआईएफटी छात्रों को तीन क्रेडिट प्रदान करता है और एनजीओ गतिविधियों के लिए उनके प्रदर्शन का मूल्यांकन करता है। आईआईएफटी समाज कल्याण के प्रति छात्रों की सामाजिक प्रतिबद्धता का समर्थन करता है।

त्योहारों का आयोजन

वर्षभर के दौरान संस्थान में छात्रों की मैलांगे, सांस्कृतिक समिति द्वारा राष्ट्रीय कार्यक्रमों के साथ–साथ भारत में मनाए जाने वाले मुख्य त्योहारों जैसे होली, दिवाली, दशहरा, रक्षाबंधन, डांडिया नाइट क्रिसमस व जन्माष्टमी आदि का आयोजन किया जाता है। इन अवसरों पर छात्र व छात्राएं मिलकर समाज के वंचित वर्ग व बुजुर्ग लोगों के बीच मिठाइयां आदि वितरण कर खुशियों का इजहार करते हैं।

त्योहारों के अवसर पर खुशियां मनाते संस्थान के छात्र

त्योहारों के अवसर पर खुशियां मनाते संस्थान के छात्र

छात्र उपलब्धियां

पुरस्कारों को अन्य संस्थानों के तुलनात्मक प्रदर्शन के लिए एक बेंचमार्क माना जाता है। आईआईएफटी के छात्रों ने अग्रणी संगठनों और प्रीमियर बी–स्कूलों द्वारा आयोजित प्रमुख प्रतियोगिताओं में भाग लिया और शीर्ष पुरस्कार प्राप्त किए। आईआईएफटी के छात्रों द्वारा वर्ष 2018–19 के दौरान जीते गए उल्लेखनीय पुरस्कारों में से कुछ हैं: हिंदुस्तान यूनिलीवर द्वारा आयोजित लाइम, रेकिट बेंकिज़र द्वारा आयोजित आरबी वैश्विक चुनौती, पेप्सिको द्वारा आयोजित चेंज द गेम प्रतियोगिता, टाइटन द्वारा आयोजित टाइटेन एलिवेट, हिंदुस्तान यूनिलीवर द्वारा आयोजित कार्पेडियम, गोदरेज द्वारा आयोजित लाउड, जीईपी द्वारा आयोजित गेमप्लान, आदि।

''एचयूएल कार्पेडियम –2018''

''टाइटन एलीवेट 5.0''

जीईपी द्वारा आयोजित **''जीईपी गेमप्लान–2018''** प्रतियोगिता में संस्थान के श्री मयंक बावरी और सुश्री बरखा जैन ''राष्ट्रीय स्तर के विजेता'' रहे।

रेकिट बेंकिज़र द्वारा आयोजित **''आरबी मवेरिक्स–2018 प्रतियोगिता''** में आईआईएफटी से टीम मिनर्वाज में ऐश्वर्या जैन, सम्बित पाणिग्रही और स्वर्णिमा लभ ने प्रतिनिधित्व किया। ये उसमें ''नेशनल रनर्स–अप'' रहे और इन्हें 'पांच लाख रूपए का नकद पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

एचयूएल द्वारा **''एचयूएल कार्पेडियम–2018''** प्रतियोगिता आयोजित की गई। कार्पेडियम एक लाइव प्रोजेक्ट पर एचयूएल में चुनिंदा बी–स्कूलों के प्रतिभाशाली छात्रों के साथ तथा प्रतिष्ठित यूनिलीवर लीडर्स इंटर्नशिप प्रोग्राम (यूएलआईपी) के तहत ग्रीष्मकाल में काम करने का एक अनूठा अवसर है। यह सब एक दिलचस्प केस स्टडी प्रतियोगिता के माध्यम से होता है। जैसा कि नाम से पता चलता है। यदि आपको लगता है कि आपके पास कुछ अलग करने की प्रतिभा है तो कार्पेडियम आपको साबित करने के लिए बस वह मंच प्रदान करता है। आईआईएफटी की टीमों में अंकित शाह, कुणाल रॉय और हर्षित बड़ोलिया और अंकिता पोद्दार, आयुषी गुप्ता और बालरोहित जयराज को कैंपस विजेता घोषित किया गया और उन्होंने मुंबई में आयोजित राष्ट्रीय फाइनल में भाग लिया।

टाइटन द्वारा **''टाइटन एलीवेट 5.0''** प्रतियोगिता आयोजित की गई। टाइटन एलीवेट प्रमुख बी–स्कूलों में आयोजित की जाने वाली एक वार्षिक बिजनेस केस स्टडी चुनौती है। यह कार्यक्रम वर्ष 2014 में देश के 11 प्रमुख बी–स्कूलों में एक उद्देश्य के साथ आयोजित किया गया था ताकि युवाओं को वास्तविक जीवन की व्यावसायिक चुनौतियों पर काम करने और टाइटन को बी–स्कूल परिसरों में छात्रों के बीच सबसे आकांक्षात्मक कंपनी बनाया जा सके। इसमें एमबीए (आईबी) 2018–20 बैच के छात्र अंकुश चौधरी और मोहित ज़ाजू ने बैंगलोर में 11 जनवरी 2019 को आयोजित राष्ट्रीय फाइनल जीता।

लॉरियल द्वारा आयोजित प्रतियोगिता **''लॉरियल ब्राँडस्टोर्म–2018''** में आईआईएफटी के छात्रों ने भाग लिया और उसमें वे ''रीजनल फाइनलिस्ट'' रहे।

आरपीजी समूह द्वारा **''आरपीजी ब्लिज्जर्ड 6.0''** प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें आईआईएफटी के छात्रों ने भाग लिया तथा ''राष्ट्रीय स्तर पर शीर्ष–7'' रहे।

''बजाज ऑफरोड 2018''

''बजाज ऑफरोड 2018''

बजाज द्वारा **''बजाज ऑफरोड 2018''** प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बजाज ऑटो भारत में दुपहिया वाहनों का दूसरा सबसे बड़ा और दुनिया के तिपहिया वाहनों का सबसे बड़ा निर्माता है। कंपनी की शुरुआत राजस्थान में 1940 के दशक में हुई थी। पिछले कुछ वर्षों में इसने अपनी वृद्धि को वर्तमान उच्च स्तर तक बनाए रखा है। अतः बजाज ऑटो द्वारा देश के कई बी–स्कूलों में युवा प्रतिभाओं के साथ जुड़ने के लिए ऑफरोड चैलेंज लॉच किया गया। दिल्ली परिसर में आयोजित कार्यक्रम में अंशिका खट्टर को विजेता और आईआईएफटी के अरुण भट्टाचार्जी एवं हितार्थी वाला को फर्स्ट रनर्स–अप घोषित किया गया था।

आईआईएफटी के छात्रों ने एचयूएल द्वारा आयोजित प्रतियोगिता **''लाइम''** में भाग लिया जिसमें वे ''नेशनल सेमी फाइनलिस्ट'' रहे।

मैरिको द्वारा आयोजित प्रतियोगिता **''ओवर द वॉल''** में आईआईएफटी के छात्रों ने भाग लिया और उसमें उन्होंने ''सीएक्सओ राउंड – विशेष उल्लेख'' अर्जित किया।

आईटीसी द्वारा आयोजित प्रतियोगिता **''आईटीसी इंटरोबैंग''** में आईआईएफटी के छात्रों ने लिया और उसमें ''कैंपस विजेता'' रहे।

पेप्सीको द्वारा आयोजित प्रतियोगिता **''पेप्सीको चेंज द गेम''** में आईआईएफटी के छात्रों ने भाग लिया और उसमें ''नेशनल रनर्स–अप'' रहे।

''रिलायंस टीयूपी''

नवाचार और उद्यमशीलता के उत्साह की भावना को मनाने के लिए स्ट्रेटेजिक एलीवेटर पिच कॉन्टेस्ट के रूप में अल्टीमेट पिच का जन्म हुआ। केवल 16 बिजनेस स्कूलों के साथ शुरू की गई प्रतियोगिता ने अपने चौथे सीजन में वर्तमान में 55 प्रीमियर बिजनेस स्कूलों के लिए आधार का विस्तार किया है। शुभम कोठारे, आदित्य हेंद्रे और हिमांशु कुमार को कैंपस विजेता के रूप में सराहा गया जबकि कैंपस रनर्स–अप के रूप में अध्याशा, सोमन और राखी को चुना गया। कैंपस विजेताओं को 55 फाइनल परिसरों में से राष्ट्रीय फाइनल राउंड के लिए चुना गया।

''सीएफए रिसर्च चैलेंज 2018''

सीएफए द्वारा आयोजित **''सीएफए रिसर्च चैलेंज''** एक वार्षिक प्रतियोगिता है, जिसमें संस्थान की प्रोफेसर डॉ. शीबा कपिल के नेतृत्व में आईआईएफटी के पांच छात्रों अर्थात सिद्धार्थ अग्रवाल, सिद्धार्थ त्रिपाठी, योगेश गिदवानी, दर्शन व्यास एवं प्रियंक जैन ने भाग लिया और उसमें ''नेशनल फाइनलिस्ट'' रहे। यह 5वीं बार है जब संस्थान के छात्रों ने यह पुरस्कार जीता है। यह ग्रुप आस्ट्रेलिया में होने वाली एशिया पेसिफिक राउंड में भारत का प्रतिनिधित्व करेगा।

''गोदरेज लाउड 2018''

गोदरेज द्वारा **''गोदरेज लाउड 2018''** प्रतियोगिता आयोजित की गई। गोदरेज लाउड एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जो भारत के किसी भी मान्यताप्राप्त स्कूल के प्रथम वर्ष के पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम (पीजीपी) छात्रों के लिए स्थापित किया गया है, ताकि उन्हें अपने सबसे बड़े व्यक्तिगत सपने को पूरा करने में मदद मिल सके। अगर आपके पास एक सपना है जिसे पूरा करने के लिए इस समय आपके पास निधि नहीं है, तो गोदरेज 1.5 लाख रुपय से कम खर्च वाले ऐसे सपने को प्रायोजित करता है। सागर वेंकटेश्वर नेमानी और गुरुवर्धन सिंह को 14 विशेष आमंत्रित सदस्यों के साथ आईआईएफटी से राष्ट्रीय फाइनलिस्ट चुना गया। राष्ट्रीय फाइनल मुंबई में गोदरेज के कार्यालय में आयोजित किया गया था।

"उठो, जागो और तब तक मत रुको,
जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए"

– स्वामी विवेकानंद

मैं पत्थर में छेद करता हूँ, हिंसा से नहीं, बल्कि गिरने से

एस. बालासुब्रमणियन

बारिश हो रही थी। मैं बारिश देखकर उत्सुक था। मैंने अपनी माँ से पूछा, ''कौन आकाश से पानी डाल रहा है?'' माँ ने उत्तर दिया ''भगवान''। मैं कुछ ज्यादा ही उत्सुक था। आगे फिर पूछा, ''लेकिन माँ ..... कौन सा भगवान?'' माँ ने फिर जवाब दिया कि बारिश खुद एक भगवान है। मैंने दुबारा पूछा कि क्या मुझे बारिश से भी, भगवान गणेश और भगवान शिव की तरह प्रार्थना करने की आवश्यकता है? मेरी माँ ने कहा, ''हाँ''। उस उत्तर ने मेरी उत्सुकता बढ़ा दी थी और पूछा, "मुझे उसकी प्रार्थना करने की क्या आवश्यकता है? क्या बारिश मेरे अंग्रेजी स्पेलिंग टेस्ट में अच्छे अंक प्राप्त करने का वरदान देगी?" मेरी माँ मुस्कुराई और कहा कि वर्षा प्रकृति का उपहार है और मानव जाति के लिए एक वरदान है। मुझे कुछ समझ नहीं आया और मैंने आगे के प्रश्न पूछना बंद कर दिया। लेकिन मैं बारिश पर माँ की प्रशंसा के शब्दों से प्रभावित था। **मैं उस समय केवल पाँच साल का था और बोला, ''माँ, मैं बारिश की प्रार्थना करूँगा''।**

बाहर मूसलाधार वर्षा हो रही थी। यह दिवाली की एक रात थी। मैं अपने पसंदीदा अभिनेता की फिल्म देखना चाहता था। लेकिन मेरे पिताजी ने मुझे साथ ले जाने से इनकार कर दिया क्योंकि बारिश हो रही थी। मैं रोया और खूब रोया लेकिन मेरी सारी कोशिशें और चालें बेकार गईं। **मैं तब सात साल का था, मैं जोर से चिल्लाया, ''बारिश, मुझे तुझसे नफरत है''।**

बारिश हो रही थी। हम एक स्कूली शैक्षिक यात्रा पर थे। मैं अपनी एक महिला मित्र के साथ एक पेड़ के नीचे खड़ा था। वह मेरी पसंदीदा थी, क्योंकि उसे हमेशा पहली रैंक मिलती थी। मैं हमेशा दूसरे स्थान पर रहता था। मैंने उससे पूछा, ''आपको सबसे ज्यादा क्या पसंद है''? मुझे उम्मीद थी कि वह मेरा नाम लेगी। लेकिन, उसने बारिश की बूंदों को अपनी कोमल हथेलियों से काटते हुए उत्तर दिया, "वर्षा''! और क्या तुम भी उसे पसंद करते हो? "मैं थोड़ा परेशान हुआ, **उस समय मैं बस तेरह का साल था, लेकिन केवल उसे प्रभावित करने के लिए बिना किसी झिझक के मैंने उत्तर दिया, "हाँ, मुझे बारिश पसंद है"।**

बारिश हो रही थी। हमारी क्रिकेट टीम अच्छे प्रयासों और बेहतर खेल प्रदर्शन के कारण एक टूर्नामेंट के फाइनल में पहुँची। हमने एक छोटे स्कोर पर अपनी विरोधी टीम को आउट किया और अब हम लक्ष्य का पीछा कर रहे थे तथा जीत से कुछ ही रन दूर थे। लेकिन, तभी हमें एक झटका लगा, झमाझम भारी बारिश होने लगी। आयोजकों ने ट्रॉफी और पुरस्कार की राशि को दोनों टीमों में समान रूप से साझा करने का फैसला किया। हमारी विरोधी टीम बहुत खुश थी, लेकिन हम सभी असंतुष्ट थे। **मैं तब बीस साल का था और बहुत गुस्से में अपने साथियों से बोला, ''मुझे बारिश से नफरत है''।**

बारिश हो रही थी। अपनी सगाई के बाद मैं पहली बार भावी पत्नी से मिलने वाला था। मुझे बारिश और बेंगलुरू के रिमझिम बादल बहुत ही रोमांटिक लगे। हम दोनों ने गर्म–गर्म कॉफी पी। उसने मुझ से पूछा, "क्या आप वर्षा से प्यार करते हैं?" **मैं तब तीस साल का था, एक रोमांटिक नजर से उत्तर दिया, "हाँ जानेमन, मुझे बारिश से प्यार है"।**

अब, बारिश हो रही है। मैं, बचपन से, वर्षा के साथ मिश्रित अनुभवों का एक सेट था। मैंने बारिश से जुड़ी अपनी पिछली सभी घटनाओं को फिर से समझना शुरू कर दिया और खुद से यह सवाल पूछा, ''वर्षा किसे पसंद है''? मैं खुद को एक संत की तरह वापस जवाब दे रहा हूं, **''प्यार करो या नफरत, लेकिन हम बारिश को अनदेखा नहीं कर सकते हैं''।**

अभी भी बारिश हो रही है। मैं बालकनी में आया और अपनी हथेलियों में उन बूंदों को इकट्ठा करते हुए सीधा पूछा, **''मेरी प्यारी वर्षा तुम अच्छी हो या बुरी''?**

ठेठ मुस्कान और रोमांटिक लुक के साथ बारिश ने जवाब देना शुरू किया।

"मेरे प्यारे, आप अच्छे हैं या बुरे यह शायद ही मायने रखता है। कुछ लोग आपसे प्यार करेंगे जो आप हैं और अन्य लोग उसी कारण से आपसे नफरत करेंगे। बस तुम वही हो, जो तुम हो। दूसरों को प्रभावित करने के लिए आप खुद को बदलने की कोशिश मत करना। आप हर किसी के मानकों पर खरे नहीं उतर सकते, लेकिन कोई होगा जो आपको वैसे ही पसंद करेगा जैसे आप हैं।"

मैंने आनंदित होकर अपनी 'गुरु' वर्षा को चूमा।

मेरे प्यारे दोस्तों, क्या आप भी अपने दिलों में बारिश को महसूस करते हैं? अगर ऐसा है तो मैं आशा करता हूँ कि आपने भी मेरी तरह एक अच्छा सबक सीखा होगा।

ग्रामीण क्षेत्र ही वास्तविक बाजार है!

अतुल कुमार यादव
छात्र – एमबीए (आईबी)
2018–21

यह सर्व विदित है कि भारत मुख्य रूप से एक ग्रामीण देश है, जहां दो–तिहाई आबादी गाँवों में निवास करती है, इस प्रकार 70 प्रतिशत जनशक्ति ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। परिणामस्वरूप, ग्रामीण अर्थव्यवस्था राष्ट्रीय आय में 46 प्रतिशत की भागीदारी करती है। शहरीकरण के उदय के बावजूद, वर्ष 2050 तक आधे से अधिक भारतीय आबादी का ग्रामीण होने का अनुमान है।

आइए! भारत के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों के बारे में बात करते हैं, चाहे वह खाद्य प्रसंस्करण, इस्पात, कपड़ा, पेट्रोलियम, ऑटोमोबाइल, स्वास्थ्य सेवा, फार्मा या कोई भी अन्य क्षेत्र हो, सभी समय–समय पर तब संघर्ष करते रहते हैं जब बाजार में उतार–चढ़ाव आता है। इसका एक कारण अधिक भीड़ वाले शहरी बाजार पर उच्च निर्भरता का होना है। चलिए, फार्मा और स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र का एक उदाहरण लेते हैं। सरकार धन की कमी के कारण नए अस्पताल खोलने (विश्व स्तरीय सुविधाओं को छोड़ दें) में असमर्थ है। ऐसे परिदृश्य में, निजी स्वास्थ्य कंपनियों को अपने लाभ के हिस्से को कम रखने और ग्रामीण क्षेत्रों में एक बड़ी बाजार हिस्सेदारी पाने के लिए आगे आना चाहिए। अन्य क्षेत्रों के साथ भी ऐसा ही होगा, जो शहरी आबादी में मामूली बाजार हिस्सेदारी के लिए आमने–सामने की लड़ाई लड़ते हैं।

भारत के लिए बुनियादी ढांचा अभी भी सबसे बड़ी चुनौती बना हुआ है। जहां तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) का सवाल है, विदेशी कंपनियों के मन में कमजोर बुनियादी ढांचे और परिवहन सुविधाओं के कारण भारत में निवेश करने में डर बैठा हुआ है। यदि हम छोटे कस्बों और गांवों के साथ अपनी कनेक्टिविटी में सुधार करते हैं तो इसका सीधा असर उन कंपनियों पर पड़ेगा जो प्रमुख रूप से खाद्य प्रसंस्करण तथा अन्य एफएमसीजी में शामिल हैं।

अब बढ़ते ऑनलाइन बाजार के बारे में बात करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में, दूरसंचार क्रांति ने हर हाथ में मोबाइल फोन और सस्ती इंटरनेट दरों को देकर ऑनलाइन बाजार संरचना के लिए पहले ही एक आधार बनाने में मदद कर दी है। मोबाइल का उपयोग करने वाली यह आबादी अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और आने वाले समय में 'पाई' का वह बड़ा हिस्सा इन ऑनलाइन खिलाड़ियों तथा उनके विक्रेताओं को मिल सकता है। इस प्रकार, मेरा मानना है कि हम अधिक से अधिक कुशल कार्यबल विकसित करके और उन्हें व्यापार के इस पूरे नेटवर्क में लगाकर छोटे–छोटे कस्बों में ''भारतीय सिलिकॉन वैली'' का निर्माण कर सकते हैं। मैं समझता हूँ कि इस सब में एक राजकोषीय नीति के हस्तक्षेप की भी आवश्यकता है।

अंत में, मैं इस लेख की अपनी पहली कुछ पंक्तियों को संदर्भित करना चाहूंगा कि इतने बड़े उपभोक्ता आधार के साथ, ''ग्रामीण भारत ही वास्तविक बाजार है''।

संचार कैसा हो? वाणी का तप

डॉ. राजेंद्र प्रसाद शर्मा

संचार मनुष्य के लिए सामाजिक एवं औपचारिक जीवन में रक्त की तरह होता है। जिस प्रकार रक्त परिसंचरण हमारे शरीर के अस्तित्व और विकास के लिए जरूरी है, उसी प्रकार संवाद संचार का मुक्त प्रवाह एक संगठन और मानवीय संबंधों के लिए जरूरी है। श्रीमद भगवत गीता जिसमें 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं, मूल रूप से भगवान श्री कृष्ण और अर्जुन के बीच एक संवाद का प्रवाह ही है। प्रभावी संचार के लिए एक अचूक मार्गदर्शक के रूप में गीता के अध्याय 17 के विशेष श्लोक 15 की व्याख्या करने की यहाँ अत्यंत आवश्यकता है।

"अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चौव वाङ्मयं तप उच्यते ।। 17।15।।

अर्थात अन्यों को क्षुब्ध न करने वाले, सच्चे, भाने वाले, हितकर वाक्य बोलना और वैदिक साहित्य का नियमित पारायण करना – यही वाणी की तपस्या है।

इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य को ऐसा नहीं बोलना चाहिए कि दूसरों के मन क्षुब्ध हो जाएं। निःसंदेह, जब शिक्षक बोले तो वह अपने विद्यार्थियों को उपदेश देने के लिए सत्य बोल सकता है, लेकिन उसी शिक्षक को चाहिए कि जब वह उनसे बोले, जो उसके विद्यार्थी नहीं हैं तो उसके मन को क्षुब्ध करने वाला सत्य न बोले। यही वाणी की तपस्या है। इसके अतिरिक्त, व्यर्थ की वार्ता कभी नहीं करनी चाहिए। आध्यात्मिक क्षेत्रों में बोलने की विधि यह है कि जो भी कहा जाए वह शास्त्र–सम्मत हो। उसे तुरन्त ही अपने कथन की पुष्टि के लिए शास्त्रों का प्रमाण देना चाहिए। इसके साथ–साथ वह बात सुनने में अति प्रिय लगनी चाहिए। ऐसी विवेचना से मनुष्य का सर्वोच्च लाभ और मानव समाज का उत्थान हो सकता है। वैदिक साहित्य ज्ञान का विपुल भण्डार है और इसका अध्ययन किया जाना चाहिए। यही वाणी की तपस्या कही जाती है।

संचार में वाक्य या कथन का बड़ा महत्त्व है। स्वामी रामसुखदास जी महाराज कहा करते थे कि जो वाक्य वर्तमान में और भविष्य में कभी किसी में भी उद्वेग, विक्षेप और हलचल पैदा करने वाला न हो, वह वाक्य अनुद्वेगकर कहलाता है। जैसा पढ़ा, सुना, देखा और निश्चय किया गया हो, उसको वैसा का वैसा ही अपने स्वार्थ और अभिमान का त्याग करके दूसरों को कह देना सत्य है। जो क्रूरता, रूखेपन, तीखेपन, ताने, निन्दा, चुगली और अपमानकारक शब्दों से रहित हो और जो प्रेमयुक्त, मीठे, सरल और शान्त वचनों से कहा जाए, वह वाक्य प्रिय कहलाता है। जो हिंसा, डाह, द्वेष, वैर आदि से सर्वथा रहित हो और प्रेम, दया, क्षमा, उदारता, मंगल आदि से भरा हो तथा जो वर्तमान में और भविष्य में भी अपना और दूसरे किसी का अनिष्ट करने वाला न हो, वह वाक्य हितकर कहलाता है। पारमार्थिक उन्नति में सहायक गीता, रामायण, भागवत आदि ग्रंथों को स्वयं पढ़ना और दूसरों को पढ़ाना, भगवान् तथा भक्तों के चरित्रों को पढ़ना स्वाध्याय है। गीता आदि ग्रंथों की बार–बार आवृत्ति करना, भगवान नाम का जप करना, स्तुति–प्रार्थना करना आदि अभ्यसन हैं।

वाणी संबंधी तप की अन्य बातों को भी समझ लेना चाहिए जैसे – दूसरों की निन्दा न करना, दूसरों के दोषों को न कहना, वृथा बकवाद न करना। जिससे अपना तथा दूसरों का कोई लौकिक या पारमार्थिक हित सिद्ध न हो, ऐसे वचन नहीं बोलने चाहिएं। किस प्रकार की पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए उस पर भी भगवद गीता की सलाह है कि श्रृंगार रस के काव्य, नाटक, उपन्यास, आदि का पठन–पाठन नहीं करना चाहिए अर्थात् जिनसे काम, क्रोध, लोभ, आदि को सहायता मिले, ऐसी पुस्तकों को न पढ़ना, आदि। उपर्युक्त सभी लक्षण जिसमें होते हैं, वह मनुष्य वाणी के तप वाला कहलाता है। गीता के संचार संबंधी उपरोक्त श्लोक के अनुसार एक अच्छे संचार के लिए निम्नलिखित का होना आवश्यक है:

1. यह सुनने वाले के दिमाग को उत्तेजित नहीं करना चाहिए।
2. यह किसी भी तरह से श्रोता की भावनाओं को नहीं जगाता है।
3. यह सत्य होना चाहिए।
4. यह श्रोता के लिए फायदेमंद होना चाहिए।
5. यह सुनने में सुखद होना चाहिए।
6. इस तरह के संचार केवल स्व–अध्ययन के माध्यम से किए जाने चाहिएं।

इसके अनुसार प्रभावी संचार वह है जिसमें सत्य शामिल है, जो श्रोता के लिए लाभदायक है, सुखद है और जो स्वयं अध्ययन के बाद ही बनता है। एक कार्यकारी, जो गीता में दिए गए दिशा–निर्देशों का पालन करता है उसके लिए प्रभावी संचार दूसरों के साथ अच्छा तालमेल होना सुनिश्चित करता है।

लघु कविताएं

अदिती शर्मा
छात्रा – ईपीजीडीआईबी
(2017–19)

1. किसी शायर की गजल नहीं तुम,
खुद अपनी ही कविता हो।

किसी चित्रकार की कल्पना नहीं तुम ,
ईश्वर की संरचना हो।

मूर्ति के सामान पाषाण नहीं तुम,
जीती जगती अप्सरा हो ।

2. कुछ अपने लिए भी कर इस अफसाने में,
तेरा भी नाम हो तेरे फ़साने में।

गुम हो जाएगी यूं हीं एक दिन,
होता आया हे ये ही ज़माने में।

3. एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा,

जैसे मीरा की तान,
जैसे लक्ष्मी के बाण,
जैसे सीता की आन,
जैसे कुदरत की अपनी पहचान।

मां का पत्र बच्चों के नाम

अमिता आनंद

प्रिय बेटी,

आज तुम्हारी बातचीत व हाव–भाव में अजीब सी टेंशन दिखाई दी। नवीं कक्षा में आते ही इस प्रकार की टेंशन के आभास ने ही मुझे झकझोर दिया।

सोचा था कि जब हमने कभी तुम्हें पढ़ाई व नंबरों के कम–ज्यादा होने का तनाव नहीं दिया तो शायद तुम्हें और बच्चों के समान इस तनाव से न गुज़रना पड़े। तुम्हें लगे कि तुम्हें नंबरों की दौड़ में शामिल नहीं होना है। परंतु तुम्हारा कहना कि मम्मी अब तो भाई को अपने कमरे में रखा करिए पढ़ने नहीं देता है। अब तो वैसे ही बहुत पढ़ना है – ट्यूशन, कोचिंग, होमवर्क इत्यादि इत्यादि। अब तो स्कूल से आकर ट्यूशन भी जाना होगा, फिर कोचिंग भी लेनी है। आजकल तो बारहवीं के बाद एडमिशन की कोचिंग भी अभी से शुरू हो रही है, हमारे स्कूल में कोचिंग सेंटर वाले आए थे, जैसी बातों ने मुझे बता दिया कि आज शिक्षा का परिवेश ही बदल गया है। शिक्षा पद्धति में जमीन–आसमान का अंतर आ गया है। आज नवीं कक्षा में आते ही बच्चों के हाव–भाव ही बदल जाते हैं।

सबसे बड़ी टेंशन कि मार्क्स नहीं आए या एंटरेन्स एक्जाम अच्छा नहीं हुआ, रैंक नहीं आया तो कैसे काम चलेगा? मेरा विषय और पसंद का कालेज भी तो चाहिए। मतलब एक दिन में ही दिनचर्या बदल जाती है। वैसे ही आजकल के बच्चे शारीरिक खेलों की जगह कंप्यूटर गेम्स पर ध्यान देते हैं। ऐसे में तो स्कूल से आकर खाना खा कर पढ़ने बैठ जाना, फिर ट्यूशन जाना, थके–हारे घर आकर अगले दिन स्कूल की तैयारी। शनिवार और रविवार कोचिंग क्लास में, सिमट गई है दिनचर्या। किसी ने सही कहा है, ''जाके पैर फटे न बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई''।

अभी तक तो और बच्चों को ही देखा था तथा माता–पिता व शिक्षकों से ही सुना था कि ये चार वर्ष ही बच्चे की शिक्षा के लिए अत्यधिक मत्त्वपूर्ण होते हैं और उनके रुझान को सुनिश्चित करने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। लेकिन इतना परिवर्तन करना पड़ेगा, मैंने नहीं सोचा था। स्कूल, पास–पड़ोस, जान–पहचान जहाँ कहीं भी जाओ, एक नसीहत – ''अब बेटी नवीं में आ गई है, बहुत ध्यान देना पड़ेगा''। नवीं से बारहवीं तक अगर पढ़ाई ठीक हो गई, अच्छे मार्क्स आ गए तो बच्चा कुछ भी कर सकता है। नवीं–दसवीं के बाद उसकी स्ट्रीम सुनिश्चित होगी और बारहवीं के अच्छे अंक उसे मनचाहा कॉलेज या कोर्स दिलवाएगा। मतलब बच्चे और माता–पिता दोनों को चार साल की सजा।

इस सब ने मुझे सोचने पर विवश कर दिया कि क्या इन चार सालों की मेहनत जिंदगी को सफल बनाने का एकमात्र गुरुमंत्र है? यदि बच्चा पढ़ाई में अच्छे परिणाम नहीं ला पाता तो जिंदगी समाप्त हो जाती है? या ये मात्र एक ढकोसला है शिक्षक समाज का? शिक्षा व्यवस्था का?

मानती हूँ कि आज और कल में बहुत अंतर है। शिक्षा पद्धति में जमीन–आसमान का अंतर आ गया है। आज योग्यता को अंकों के प्रतिशत से तोला जाता है। जिस बच्चे के अधिक प्रतिशत होते हैं, वही योग्य माना जाता है। ऐसा था तो हमारे समय में भी, लेकिन अंकों की दौड़ में अधिक लोग शामिल नहीं होते थे। अंकों का प्रतिशत आज की तरह नहीं आता था। उस समय फर्स्ट डिवीजन विद डिसटिंगशन, फर्स्ट डिवीजन, गुड सेकंड डिवीजन और सेकंड डिवीजन इत्यादि इत्यादि ही होता था। फिर धीरे–धीरे डिवीजन की जगह अंकों के प्रतिशत ने ले ली। अब तो कम अंक लाने वाले विद्यार्थियों को हीन दृष्टि से देखा जाता है। आज स्कूल, माता–पिता, शिक्षक, विद्यार्थी सभी इसी की दौड़ में लगे हैं। समाज भूल बैठा है कि अंकों से विलग भी एक दुनिया है। पढ़ाई के साथ किसी और क्षेत्र में भी बच्चा योग्यता, प्रवीणता प्राप्त कर सकता है, अपने परिवार व समाज का नाम रौशन कर सकता है।

मुझे यह नहीं लगा कि अत्यधिक अंक लेने वाले ही अति विद्वान होते हैं। मानती हूँ कि विद्वत्ता व विषय के ज्ञान में बहुत अंतर होता है। मात्र चाहती हूँ कि अंकों का प्रतिशत बस इतना हो जो किसी भी प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आपको योग्य बना दे। मात्र कुछ अंकों के अंतर से अपनी योग्यता प्रमाणित न कर पाने का दुःख अवर्णनीय होता है और जिंदगी भर आपका पीछा करता है। मगर अंकों का दानव यदि सिर चढ़ कर बोले और सफलता मिले तो ठीक, नहीं तो निराशा में डूबे बच्चे कैसे समाज का निर्माण करेंगे कहना मुश्किल है।

ये हमारे आज के समाज की विडम्बना ही है कि हम आज भी लॉर्ड मैकाले द्वारा बनाई गई शिक्षा–पद्धति का पालन कर रहे हैं जिसका उद्देश्य मात्र भारत को गुलाम बनाना, उसकी आध्यात्मिक एवं

सांस्कृतिक धरोहर को समाप्त करना तथा देशवासियों को ब्रिटिश व्यवस्था को बनाए रखने योग्य शिक्षा प्रदान करना था। हम भूल गए हैं कि शिक्षा का वास्तविक अर्थ कुछ सीख कर अपने को पूर्ण बनाना, अपने पाँव पर खड़े होना है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र अथवा समाज में सामाजिक नियंत्रण, व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक व आर्थिक प्रगति का मापदंड होती है। हम सभी जानते हैं शिक्षा हमारे जीवन के लिए अति आवश्यक है शिक्षा के बगैर मनुष्य पशु के समान होता है। पहले जहाँ शिक्षा, गुरुकुल में गुरु दिया करते थे वहीं आधुनिक जमाने में स्कूल–कॉलेजों में शिक्षा, शिक्षक देते हैं।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली और प्राचीन शिक्षा प्रणाली में काफी अंतर है। पहले जहाँ बच्चे शिक्षा प्राप्त करने के लिए गुरुकुल में रहते थे जहाँ उन्हें नैतिक शिक्षा, विषय–विशेष, महापुरुषों का ज्ञान एवं संस्कृति का ज्ञान अथवा योग्यता के अनुसार शिक्षा दी जाती थी। जिससे विद्यार्थी का भविष्य उज्ज्वल होता था और वह जीवन में एक अच्छा नागरिक बनता था।

आधुनिक शिक्षा के युग में लोगों की जिंदगी में बहुत परिवर्तन आया है। आज आधुनिक शिक्षा प्रणाली स्कूल–कॉलेजों में दी जाती है। बच्चा सुबह या दोपहर के समय स्कूल जाता है और 4 या 5 घंटे पढ़ाई करने के बाद घर वापिस चला आता है। घर पर वह एक अलग माहौल में रहता है। इस आधुनिक युग की शिक्षा प्रणाली में सबसे ज्यादा प्रमुखता मशीनी ज्ञान या वैज्ञानिक ज्ञान को दी जाती है लेकिन नैतिक ज्ञान पर कोई विशेष जोर नहीं दिया जाता है।

वास्तव में नैतिक शिक्षा ही एक इंसान को इंसान बनाती है। नैतिक शिक्षा में सच्चाई, ईमानदारी, दया, धर्म एवं नैतिक ज्ञान आदि की शिक्षा दी जाती है जिससे विद्यार्थी का चारित्रिक विकास होता है। लेकिन आधुनिक शिक्षा में लोग सिर्फ पैसा कमाने पर जोर देते हैं, वह चरित्र को बनाने पर ज्यादा ध्यान नहीं देते हैं।

भारत के इतिहास पर जहाँ तक नजर जाती है हमें ज्ञात होता है कि हमारे प्राचीन विश्वविद्यालय विश्व भर में प्रसिद्ध थे और कोरिया, जापान, चीन, तिब्बत, इंडोनेशिया, फारस तथा तुर्की से भी विद्यार्थी यहाँ शिक्षा ग्रहण करने आते थे। नालंदा और तक्षशिला के अतिरिक्त अनेक विश्वविद्यालय शिक्षा प्रदान करने में अपनी अच्छी पहचान रखते थे।

लेकिन आज बच्चों को मिलने वाली इस मानसिक वेदना ने मुझे अंदर तक हिला दिया कि इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था का अंत व परिणाम क्या है? क्या सभी बच्चे डॉक्टर, इंजीनियर एवं वैज्ञानिक इत्यादि बन जाएंगे? अच्छे अंक पाने वाले सभी विद्यार्थियों को मनचाहा कालेज अथवा विषय मिल जाएगा? ऐसा हो जाने पर उनका जीवन सुगम हो जाएगा?

अगर ऐसा है तो ये मारा–मारी, तनाव व समाज से स्वयं का पृथक्कीकरण क्या उचित है? लेकिन असफलता की सूरत में उत्पन्न तनाव व कुंठा का परिणाम क्या होगा? एक कुंठित समाज? क्या हमें नवीं–दसवीं के शिक्षार्थियों को स्वयं को परखने, अपनी रुचि व योग्यता को समझने–परखने का समय नहीं देना चाहिए ताकि ग्यारहवीं–बारहवीं में वह अंकों की दौड़ में अपनी इच्छा से सम्मिलित हो और अपनी योग्यता का सर्वोत्तम प्रदर्शन करे। वह मात्र अंकों के लिए नहीं उत्तम ज्ञान प्राप्ति के लिए अध्ययन करे।

तात्पर्य यही है कि समाज में प्रतिष्ठा व सुखद जीवन–यापन करने के लिए व्यक्ति शिक्षा व ज्ञान अर्जित करे ताकि परिवार, समाज एवं देश का मान–सम्मान बढ़े और व्यक्ति स्वाभिमान से जी सके। कुंठा से भरे समाज का विकास तथा इसमें व्यक्ति का विकास संभव नहीं है।

हमें शिक्षा को रोजगार परक बनाना होगा ताकि एक स्वस्थ व शक्तिशाली समाज तथा देश का निर्माण हो सके और बच्चों में विकसित होती कुंठा को रोका जा सके। उन्हें समझाना होगा कि 'जहाँ' और भी है नंबरों के आगे। अंकों की दौड़ में भागने की जगह ज्ञान की दौड़ लगाएं।

पत्र बहुत लंबा हो गया है, फिर भी इस किस्से को सुनाए बिना मैं इसे समाप्त नहीं करना चाहती। एक जाने–माने स्पीकर ने पाँच सौ का नोट हाथ में लेकर हॉल में बैठे हुए लोगों से पूछा कि इसे कौन लेना चाहता है। हाथ उठने शुरू हो गए। फिर उसने नोट को मुट्ठी में निमोड़ना शुरू किया और पूछा? तब भी अनेकों हाथ खड़े हो गए। फिर उसने उस नोट को नीचे गिरा कर पैर से कुचला। अब वह नोट बिलकुल मैला–कुचैला हो गया था। उसे दिखा कर उसने पुनः पूछा कि अब इसे कौन लेना चाहता है? इस समय भी अनेकों हाथ खड़े हो गए, क्योंकि इतना सब हो जाने पर भी उस नोट की कीमत में कोई कमी नहीं हुई थी। उसका मूल्य अभी भी पाँच सौ ही था। बताने का तात्पर्य यह है कि जीवन भी नोट के समान ही है। जीवन में हम कई बार गिरते हैं, हारते हैं, हमारे निर्णय गलत हो जाते हैं। हमें ऐसा लगने लगता है कि हमारी कोई कीमत नहीं है। लेकिन आपके साथ जो हुआ हो या भविष्य में हो जाए, आपका मूल्य कम नहीं होता। आप समाज व परिवार के लिए विशेष हैं इस बात को कभी मत भूलिए।

इसलिए बेटा आप अंकों की अत्यधिक टेंशन न लेकर तन्मयता से पढ़ाई करो, जीवन में सफलता आपके कदम चूमेगी। थोड़े को ज्यादा समझना। शेष फिर।

शुभाशीष सहित।

तुम्हारी माँ

समझौता

डॉ. प्रतीक माहेश्वरी

कभी कहीं किसी रोज किसी पर मैं,
अपना अधिकार जमाने लगता हूँ।
उस वक्त मैं ये क्यूँ भूल जाता हूँ कि,
अधिकारी तो सबका एक ही है जग में, और...
मैं उसकी सत्ता का सिर्फ छोटा सा हिस्सा हूँ।।

जाने क्यूँ मैं ऐसा करता हूँ,
अनजाने को भी अपना कहता हूँ।
कौन अपना है, कौन पराया,
इसी कशमकश में उलझने लगता हूँ।।

एक टीस सी पैदा होती है मन में,
जब अपना कोई बिछड़ता है।
कल तक जो करीब था मेरे,
आज दूर–दूर क्यूँ लगता है।।

लेकिन यही तो दुनिया का उसूल है,
सच बोलने वाला यहाँ बबूल है।
हर कोई अपने में मशगूल है,
यहाँ खुश रहता ही वही है...
जिसे समझौता कबूल है... जिसे समझौता कबूल है।।

सस्टेनेबल लॉजिस्टिक्स

सुकृति महना
सीटीएफएल

पृथ्वी हमें वह सब कुछ देती है, जो हमें जीने के लिए चाहिए। लेकिन मानवता विलुप्त होने के खतरे में है, यदि हम पर्यावरण के लिए बेहतर देखभाल शुरू नहीं करते हैं और यथावत रहते हैं, तो अच्छे जीवन–स्तर के लिए चुनौतियां बढ़ती जाएंगी। फलस्वरूप जैव विविधता असमय जलवायु परिवर्तन का सामना करना पड़ सकता है। राष्ट्रीय स्तर पर, पर्यावरणीय गिरावट पहले से ही आर्थिक विकास को धीमा कर रही है और मानव स्वास्थ्य तथा कल्याण को नुकसान पहुंचा रही है। बढ़ते पर्यावरणीय दबावों और सरकारी हस्तक्षेपों के कारण, उद्योगों के लिए स्थिरता के उपायों को अपनाना समय की जरूरत है।

सस्टेनेबिलिटी सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं के तीन स्तंभों पर आधारित है। दुनिया भर में बहुत सी कंपनियाँ कई कारणों से इस रणनीति को अपना रही हैं, जैसे कि नियमों के खिलाफ खुद को सुरक्षित करना, अपने ब्रॉंड मूल्य और प्रतिष्ठा को बनाए रखना, संसाधनों के दुरुपयोग से बचना और हरित उपभोक्ता मांगों का जवाब देना। इससे आपूर्ति श्रृंखला में स्थिरता की अवधारणा को शामिल करने की आवश्यकता हुई। वर्तमान परिदृश्य में आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन में स्थिरता का पर्याप्त महत्त्व है। सस्टेनेबल सप्लाई चेन मैनेजमेंट अब अनुसंधान का एक स्थापित क्षेत्र है। इस प्रथा का उद्देश्य कचरे को कम करने के विचार से है, क्योंकि कचरे से आर्थिक लाभ कम हो जाता है। पर्यावरण प्रबंधन के इन शुरुआती लिंक को आर्थिक प्रदर्शन का अनुकूलन करने की इच्छा से बढ़ाया गया था, जो एससीएम के शुरुआती पड़ाव में भी पर्यावरणीय पहलू की शुरूआत का संकेत देता है। विचारों को ग्रीन एससीएम (जी. एस.सी.एम.) में विकसित किया गया और एस.सी.एम में इसका समापन किया गया। आपूर्ति श्रृंखला का सबसे महत्त्वपूर्ण घटक लॉजिस्टिक्स है। एक कुशल लॉजिस्टिक्स प्रणाली देश की वृद्धि की कुंजी है। इसलिए, लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में सस्टेनेबिलिटी को लागू करना भी महत्त्वपूर्ण है। एक उद्योग के रूप में, लॉजिस्टिक्स माल ढुलाई और बंदरगाह संचालन से लेकर कूरियर गतिविधियों, भंडारण और हैंडलिंग तक हो सकता है।

सीओ2 उत्सर्जन में लॉजिस्टिक्स सबसे अधिक योगदान देने वालों में से एक है और इसलिए, लॉजिस्टिक्स संचालन में वृद्धि के साथ पर्यावरणीय क्षति में वृद्धि जारी रहेगी। सीओ2 के अलावा, परिवहन क्षेत्र ब्लैक कार्बन का एक प्रमुख स्रोत है। परिवहन क्षेत्र ब्लैक कार्बन का लगभग 20 प्रतिशत उत्सर्जित करता है जिसके कारण प्रति वर्ष 3.2 मिलियन लोगों की समय से पहले मृत्यु होती है। इस क्षेत्र में सस्टेनेबिलिटी का समावेश न केवल पर्यावरणीय क्षति को रोकता है, बल्कि ईंधन दक्षता को बढ़ाकर, उदाहरण के लिए लागत में कटौती कर सकता है, जो लॉजिस्टिक्स लागतों का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनता है। सामाजिक और आर्थिक स्तर पर लॉजिस्टिक्स क्षेत्र को धन और रोजगार सृजन का चालक माना जाता है। भारत में लॉजिस्टिक्स सेक्टर 10.5 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ रहा है और 2022 में लगभग 215 बिलियन डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है। बाजारों में परिवहन के दौरान नुकसान को खतम कर, उपज के अपव्यय के माध्यम से लॉजिस्टिक्स दक्षता किसानों को लाभान्वित कर सकती है। वर्तमान में, भारत आपूर्ति श्रृंखला में अपव्यय के लिए 40 प्रतिशत कृषि उत्पादन खो देता है। मौद्रिक लागत और पर्यावरणीय प्रभाव का संयोजन जो लॉजिस्टिक्स को एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बनाने में योगदान देता है तथा लॉजिस्टिक्स को मजबूत करने एवं इसे और अधिक कुशल बनाने की आवश्यकता है। फर्मों के लिए उनकी आपूर्ति श्रृंखला संचालन में सस्टेनेबिलिटी की रणनीति को लागू करने के लिए, लॉजिस्टिक कार्य एक प्रमुख भूमिका निभाता है।

इस प्लेटफॉर्म पर बहुत कम अध्ययन किए गए हैं और लॉजिस्टिक्स एक बढ़ता हुआ क्षेत्र है, जिसमें आर्थिक, सामाजिक तथा पर्यावरण उत्पादकता को बनाए रखने वाली स्थिरता को शामिल करने की बहुत गुंजाइश है।

निर्यात बंधु मूक (MOOC) : नई राहें, नई मंजिलें

राकेश कुमार ओझा

'निर्यात बंधु' शब्द जब भी कहीं कभी उच्चारित होता है तो मन में एक गर्व की भावना का अहसास होता है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत अब तक संस्थान ने 30 बैचों का आयोजन करके, 1200 से ज्यादा प्रतिभागियों को प्रशिक्षित कर प्रतिभागियों के उत्कृष्ट फीडबैक प्राप्त किए हैं। आयात–निर्यात प्रबंधन पर ऑनलाइन के माध्यम से आयोजित कार्यक्रमों की इस श्रृंखला ने देश के कोने–कोने में निर्यात के प्रति जागरूकता बढ़ाने एवं प्रत्येक स्तर के उद्यमियों, निर्यातकों एवं विद्यार्थियों तक डीजीएफटी एवं संस्थान की पहुँच को सुनिश्चित किया है।

मार्च 2018 के दौरान एमडीपी विभाग द्वारा अगले वित्त वर्ष हेतु निर्यात बंधु कार्यक्रमों के लिए आवश्यक वित्तीय स्वीकृति हेतु डीजीएफटी को प्रस्ताव भेजा गया था। इस संदर्भ में डीजीएफटी द्वारा निर्यात बंधु की समीक्षा बैठक के लिए तत्कालीन एमडीपी विभाग की चेयरपर्सन डॉ. विजया कट्टी को आमंत्रित किया गया। यह डॉ. विजया कट्टी की प्रभावी प्रबंधकीय शैली का ही परिणाम था कि डीजीएफटी द्वारा लगातार तीन वर्षों से इस योजना का अनुमोदन, पर्याप्त वित्तीय स्वीकृति के साथ निर्बाध रूप से किया जाता रहा था। अगले ही दिन डॉ. विजया कट्टी ने संस्थान के निर्यात बंधु टीम के सदस्यों को शीघ्र बैठक के लिए बुलाया।

प्रस्तावित बैठक को लेकर मन में तमाम कयास लगने शुरू हो गए। क्या डीजीएफटी द्वारा इस योजना में किसी प्रकार के संशोधन का प्रस्ताव किया गया है? या फिर फंडिंग पैटर्न में किसी प्रकार का बदलाव किया गया है। बहरहाल, तमाम आशंकाओं एवं उत्सुकताओं के साथ संबंधित समस्त दस्तावेज एवं डेटा लेकर मैं बैठक के लिए पहुँचा। बैठक में निर्यात बंधु प्रोजेक्ट टीम के महत्त्वपूर्ण सदस्य, संस्थान के सहायक प्रणाली प्रबंधक श्री एस बाला जी भी उपस्थित थे। मैं बड़े हर्ष के साथ यह उल्लेख करना चाहूंगा कि जब भी एमडीपी विभाग के पास महत्त्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स आए, प्रस्तावों की योजना से लेकर अनुपालन तक में श्री बाला जी का योगदान रहा है।

तो अब बारी आ गई थी उस क्षण की जब हम निर्यात बंधु प्रोजेक्ट के भविष्य के बारे में जानने के लिए उत्सुक थे। मैडम ने हमें बताया कि डीजीएफटी ने अगले वित्त वर्ष हेतु इन कार्यक्रमों के स्वरूप में बदलाव की आवश्यकता पर बल दिया है। डीजीएफटी का मानना है कि कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित किए जाने की बजाय क्यों न संकाय सदस्यों के व्याख्यानों की वीडियो रिकॉर्डिंग कर उसे स्थायी रूप से पब्लिक डोमेन में डाल दिया जाए जो निःशुल्क रूप में सबके लिए उपलब्ध हो ताकि ज्यादा से ज्यादा प्रतिभागी विशेषकर लघु स्तर के उद्यमी व निर्यातक उससे लाभान्वित हो सकें।

कुछेक मिनट विचार करके हमने यह निष्कर्ष निकाला कि इस प्रस्ताव पर गहन विचार–विमर्श की आवश्यकता है एवं इसके लिए संकाय सदस्यों की बैठक बुलाई जानी चाहिए। अगले दिन ही एमडीपी विभाग एवं निर्यात बंधु प्रोजेक्ट से जुड़े संकाय सदस्यों की बैठक बुलाई गई। जैसा कि हमें अंदेशा था संकाय सदस्यों का रुख मिलाजुला था। वास्तव में यह संस्थान एवं संकाय सदस्यों के लिए नई बात थी। व्याख्यानों की वीडियो रिकॉर्डिंग करके उसे आम जनता के उपयोग हेतु सौंप देना किसी के गले नहीं उतर रहा था। हालाँकि लगभग सभी ने इस बात को स्वीकार किया कि मूक कार्यक्रम आने वाले समय की मांग है एवं अनेक संस्थानों द्वारा इस फॉरमैट में कार्यक्रम किए जा रहे हैं।

फिर दौर शुरू हुआ एक के बाद एक बैठकों का जिसमें इस प्रस्ताव के विभिन्न पहलुओं पर गहन चर्चा की गई। जब सैद्धांतिक रूप से थोड़ी बहुत सहमति बनती दिख रही थी तब एक नई अड़चन सामने आई। दरअसल, डीजीएफटी की तरफ से मूक फॉरमैट में कार्यक्रमों का प्रस्ताव तैयार करने हेतु औपचारिक पत्र आ गया था जिसके अंतर्गत आईआईएफटी से अपेक्षा की गयी थी कि वह यह मूक (MOOC) कार्यक्रम इग्नू के स्वयं पोर्टल के माध्यम से करे। अधिकांश सदस्यों के मतानुसार इससे संस्थान की स्वतंत्र छवि, साख एवं क्षमता पर सवालिया निशान लगना स्वाभाविक था।

यह अक्सर कहा जाता है कि किसी संगठन के पास यदि प्रभावी व कुशल नेतृत्व हो तो हर प्रकार की मुश्किल एवं दुविधापूर्ण स्थिति से निपटा जा सकता है। ऐसी चुनौतीपूर्ण स्थिति से निबटने हेतु डॉ. कट्टी ने संस्थान के निदेशक महोदय प्रोफेसर मनोज पंत से मुलाकात की एवं इस सम्पूर्ण वस्तुस्थिति से अवगत कराया। निदेशक महोदय ने स्पष्ट रुख अपनाते हुए संस्थान द्वारा स्वतंत्र रूप से इस सम्पूर्ण कार्यक्रम के संचालन का निर्देश दिया। पुनः निदेशक महोदय के निर्देशानुसार एमडीपी विभाग ने डीजीएफटी को आश्वस्त किया कि संस्थान के पास उपलब्ध कुशल बौद्धिक संसाधनों एवं प्रशासनिक क्षमता के द्वारा इस प्रोजेक्ट का बेहतर रूप में क्रियान्वयन संभव है।

नेतृत्व द्वारा दिशा मिल जाने के पश्चात अब चुनौती थी हमें खुद को साबित करने की। इसी दौरान संस्थान में हुए संगठनात्मक फेरबदल के तहत डॉ. कट्टी के डीन का कार्यभार ग्रहण करने के साथ डॉ. राम सिंह ने एमडीपी विभाग के प्रमुख का उत्तरदायित्व संभाला। डॉ. राम सिंह ने निर्यात बंधु मूक प्रोजेक्ट को प्राथमिकता के केंद्र में रखते हुए इसके कार्यकलापों में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने स्वयं इसके संभावित वेब पोर्टल एवं संबंधित सामग्री का प्रारूप तैयार किया। डॉ. सिंह के नेतृत्व में बाला सर एवं मैंने अपने निर्धारित दायित्वों का निर्वाह करते हुए इस नए प्रोजेक्ट को अमली जामा पहनाया। मसलन, जहाँ एक ओर कंप्यूटर सेंटर ने समस्त तकनीकी मामलों जैसे सम्पूर्ण वेब पोर्टल के डिजाइन एवं निर्माण में अथक परिश्रम किया, वहीं एमडीपी विभाग ने प्रोजेक्ट से जुड़े प्रशासनिक कार्यो का निर्वहन किया। डीजीएफटी की इच्छा के अनुरूप इसे बहुत ही कम समय में लांच किया जाना था। अतः इस प्रोजेक्ट से जुड़े संस्थान के प्रत्येक सदस्य ने उसे कम समय में पूरा करने हेतु अत्यंत कड़ी मेहनत की। कुलसचिव महोदय डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता के मार्गदर्शन में एवं वित्त विभाग एवं सामान्य प्रशासन विभाग के सहयोग से हमने बहुत ही कम समय में आवश्यक वित्तीय अनुमोदन एवं रिकॉर्डिंग हेतु सेवा प्रदाता की पहचान के साथ ही समस्त प्रशासनिक कार्यों को तय समय में पूरा किया। कुलसचिव महोदय ने व्यक्तिगत रूप से मुझे वीडियोज की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

तो अब इंतजार की घड़ियां खत्म हो चली थीं। दिनांक 15 फरवरी 2019 को वाणिज्य मंत्रालय में सम्पन्न हुई बोर्ड ऑफ ट्रेड की बैठक में माननीय केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री सुरेश प्रभु द्वारा निर्यात बंधु मूक प्रोजेक्ट का लोकार्पण किया गया। संस्थान की ओर से निदेशक महोदय प्रोफेसर मनोज पंत के साथ–साथ सहायक प्रोफेसर डॉ. अरीज़ आफताब सिद्दीकी एवं श्री एस. बाला ने समारोह में शिरकत की। इस सम्पूर्ण प्रोजेक्ट को सफल बनाने हेतु डॉ. विजया कट्टी, डॉ. राम सिंह के अलावा प्रो. हरकीरत सिंह, डॉ. अरीज़ आफताब सिद्दीकी, डॉ. तमन्ना चतुर्वेदी एवं कोलकाता केंद्र से डॉ. दीपांकर सिन्हा, डॉ. देबाशीष चक्रवर्ती का बहुमूल्य योगदान रहा। अतिथि संकाय सदस्यों में डॉ. एन सी साहा (निदेशक भारतीय पैकेजिंग संस्थान, मुम्बई) श्री एस पी रॉय एवं डॉ. प्रवीन कुमार ने अपना बहुमूल्य समय प्रदान किया। सुश्री अंजलि सक्सेना (रिसर्च एसोसिएट, एमडीपी) ने लगन के साथ अकादमिक समन्वय कार्य पूरा किया।

तो आइए, एक क्लिक करके देखते हैं कि क्या है ये निर्यात बंधु मूक कार्यक्रम और किस प्रकार से यह विभिन्न उद्यमियों एवं निर्यातकों के बीच इतने कम समय में लोकप्रिय हो गया है।

इस पर क्लिक करें→ http://niryatbandhu.iift.ac.in/exim/index.asp

विशेषताएं – इस कार्यक्रम की सर्वप्रमुख विशेषता है कि इसे कोई भी कहीं से भी और किसी भी समय एक्सेस कर सकता है। इसके अंतर्गत कुल 20 टॉपिक हैं एवं प्रत्येक टॉपिक से संबंधित अध्ययन सामग्री एवं वीडियो दिए गए हैं। ये अध्ययन सामग्री एवं वीडियोज संस्थान के प्रख्यात संकाय सदस्यों द्वारा तैयार किए गए हैं जो प्रतिभागियों को वास्तविक क्लासरूम प्रशिक्षण की अनुभूति कराते हैं। फीडबैक सिस्टम के साथ–साथ एक अंतरक्रिया फोरम भी विकसित किया गया है जिसके माध्यम से प्रतिभागी आपस में चर्चा, परिचर्चा कर सकते हैं। यह कार्यक्रम पूरी तरह से निःशुल्क है। प्रमाण–पत्र की चाह रखने वाले प्रतिभागी निर्धारित शुल्क (₹2000/–) देकर परीक्षा हेतु आवेदन कर सकते हैं। निर्धारित परीक्षा उत्तीर्ण करने पर उन्हें प्रमाण–पत्र दिया जाएगा।

कार्यक्रम लांच होने के 2 महीने के अंदर 7000 से ज्यादा प्रतिभागियों ने पंजीकरण कर लिया था जिसमें से लगभग 5200 सक्रिय उपयोगकर्त्ता हैं। यह कार्यक्रम की बढ़ती लोकप्रियता का प्रमाण है। सक्रिय उपयोगकर्त्ताओं द्वारा फीडबैक के अंतर्गत सभी कोर्सेज एवं विडियोज को उत्कृष्ट श्रेणी में स्थान दिया गया है।

नए सपने, बढ़ते कदम – कुछ ऐसे लोग होते हैं जो मंजिल पा कर भी नहीं रुकते, वरन् नई मंजिलें छूने को अग्रसर रहते हैं। हमारे संस्थान के सहायक प्रणाली प्रबंधक, श्री बाला सर भी उनमें से एक हैं। उनकी निर्यात बंधु मूक के लिए निकट भविष्य में एक विशेषीकृत ऐप विकसित करने की योजना है। इस ऐप के माध्यम से कोई भी अपने मोबाइल द्वारा निर्यात बंधु कार्यक्रम की अध्ययन सामग्री एवं विडियोज को एक्सैस कर सकेगा।

पुनः हिंदी भाषा में ऐसे कार्यक्रम की मांग को देखते हुए हिंदी अधिकारी श्री राजेन्द्र प्रसाद जी से हुई चर्चा के उपरांत निकट भविष्य में इस मूक कार्यक्रम को हिंदी भाषा में भी प्रारंभ किए जाने की योजना है। डीजीएफटी द्वारा भी इस बारे में सैद्धांतिक सहमति एवं आवश्यक वित्तीय मदद देने का आश्वासन प्रदान किया गया है।

इस लेख के माध्यम से मैंने आप सबको संस्थान की उपलब्धि, इसकी प्रक्रिया एवं उद्देश्य को रेखांकित करते हुए यह बताने का प्रयास किया है कि निर्यात बंधु मूक महज एक शैक्षिक प्रोजेक्ट नहीं है, वरन् एक क्रांतिकारी कदम है। इसका मुख्य उद्देश्य देश के अधिकाधिक व्यापारियों एवं निर्यातकों को सहज रूप से निःशुल्क प्रशिक्षण देने के साथ–साथ देश के निर्यात स्तर में महत्त्वपूर्ण वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों में नए रोजगार का सृजन है। तो आइए, हम सभी मिलकर अधिकाधिक लोगों को व्यापार की इस यात्रा में शामिल करते हुए बदलते भारत के निर्माण में भागीदार बनें।

जय हिंद

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की 150वीं जयंती

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की 150वीं जयंती के अवसर पर भारत सरकार ने वर्ष 2019 को उन्हें समर्पित किया है। इस अवसर पर संस्थान से कुछ सदस्यों ने गाँधी जी को समर्पित कुछ लेख भेजे हैं, जिन्हें सुधी पाठकों हेतु एक परिशिष्ट के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

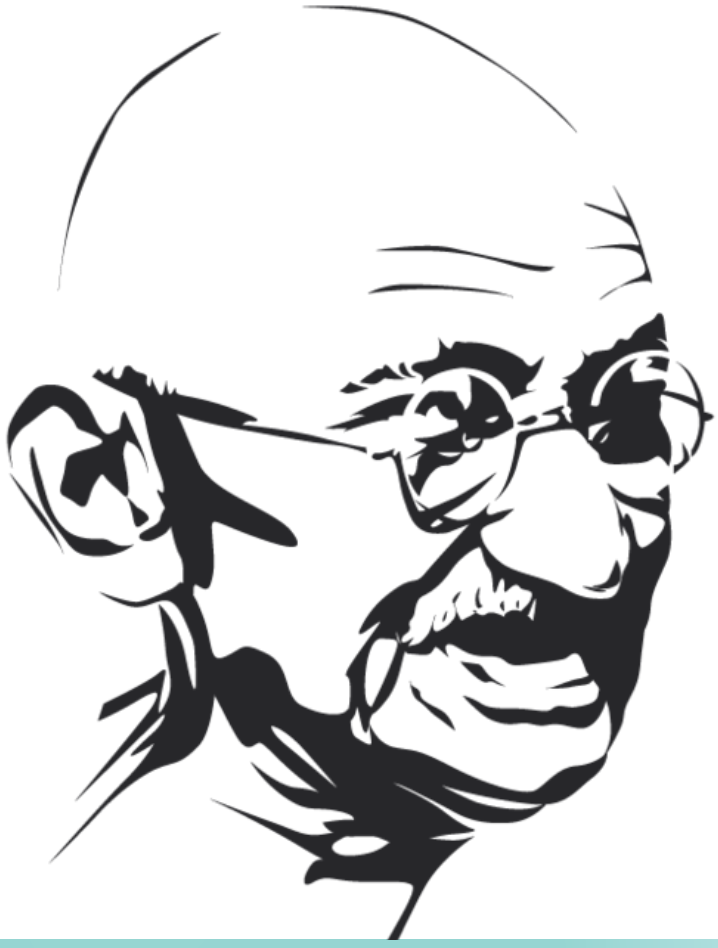

एक भुला दिया गया पैगम्बरः प्रश्न गाँधी की प्रासंगिकता का

प्रदीप
छात्र – एमबीए (आईबी)
2018–20

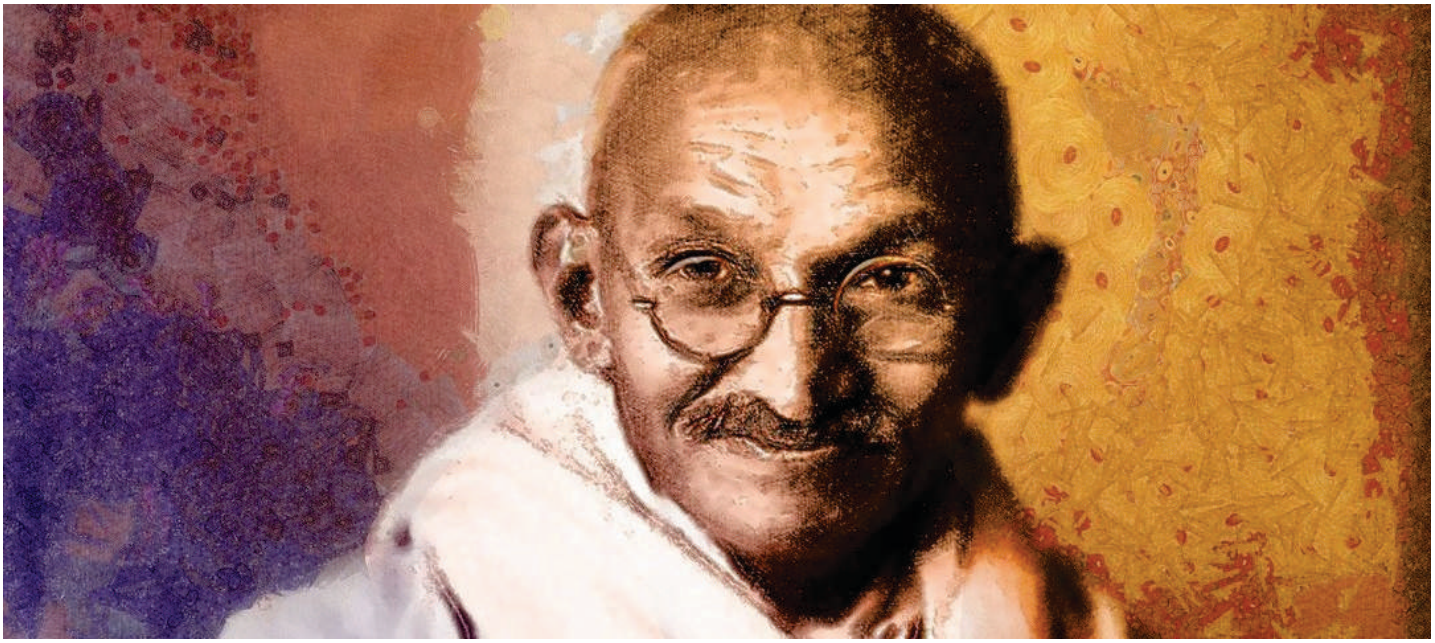

''वैष्णव जन तो तेने कहिये, जो पीर पराई जाने रे।''

यह महत्त्वपूर्ण है कि मैं, हमारे इस विमर्श की शुरुआत में यह बात स्पष्ट कर दूँ कि इस लेख की विषयवस्तु ''राजनीतिज्ञ'' गाँधी से ज्यादा ''महात्मा'' गाँधी है, हालांकि दोनों को अलग कर के देखना काफी मुश्किल है। गाँधी बीसवीं सदी के उथल–पुथल से भरे वीभत्स राजनीतिक इतिहास में एक अलग तरह के विचार के प्रतीक हैं, जिसे न केवल मानवता ने भुला दिया बल्कि अपने शांति एवं सम्पन्नता से परिपूर्ण भविष्य की कीमत पर पराजित करने का प्रयास भी किया है। नतीजा यह है कि इंसान अपनी बीसवीं सदी की गलतियों से कुछ सीखने के बजाय उससे भी बदतर इक्कीसवीं सदी के निर्माण में जुटा हुआ प्रतीत होता है। मानवता का यह दुर्भाग्य मुझे पोलैंड की नोबेल पुरुस्कार विजेता कवयित्री ''विस्लावा सिम्बोर्स्का की कविता ''टर्न ऑफ द सेंचुरी'' की याद दिलाता है, जिसमें वह जताती हैं कि कैसे बीसवीं सदी ने वह सब नहीं किया जो उस सदी में हो जाना चाहिए था। वह शिकायत करती हैं कि उन्हें लगता था कि आखिरकार ईश्वर को भी एक अच्छे और ताकतवर इंसान में भरोसा करना होगा, पर इस सदी में इंसान अच्छा और ताकतवर एक साथ नहीं हो पाया। मेरे विचार में गाँधी बीसवीं सदी के अच्छे एवं ताकतवर इंसान तो थे पर ईश्वर या यूँ कहें कि मानवता ने उनके ऊपर विश्वास करने से इंकार कर दिया।

गाँधीजी जीवन–पर्यन्त न्याय की लड़ाई लड़ते रहे मगर हम यह भूल जाते हैं कि उन्होंने मानव इतिहास में पहली बार न्याय की परिभाषा बदलने की कोशिश की और यही उनकी महानता का स्रोत है। इंसान ने जो भी नैतिक एवं सामाजिक सिद्धांत न्याय की अवधारणा के इर्द–गिर्द बुने हैं, उनका सार यह है कि न्याय की स्थापना के लिए यह जरूरी है कि अन्याय करने वाले को उसकी गलती का

अहसास दिला कर उसे सजा दी जाए ताकि उसे फिर से ऐसा करने से रोका जा सके। लेकिन समस्या इस दूसरे प्रावधान में है। यह तो आवश्यक है कि न केवल अन्याय का अपराधी बल्कि सम्पूर्ण मानवता अन्याय को पहचाने लेकिन उसके दंडस्वरुप लिया जाने वाला बदला या प्रतिकार और ज्यादा मानवीय गलतियों का कारण बनता है। द्वितीय विश्व युद्ध की शाम को अमेरिका के महान कवि 'डब्ल्यू एच ऑडेन' ने अपनी रचना ''सितम्बर 1, 1939'' में लिखा, ''मैं और जनता जानते हैं कि स्कूल के बच्चे क्या सीखते हैं? वो जिनके साथ बुरा हुआ है बदले में बुरा करते हैं। ''दस हजार सालों से इंसानों ने अपनी अगली नस्ल को यही सिखा कर बड़ा किया। उसके बाद इतिहासकार एवं विद्वान यह विश्लेषण करते रहे कि द्वितीय विश्व युद्ध का कारण मार्टिन लूथर के समय से जर्मन जाति द्वारा अर्जित किया जा रहा पागलपन था, जिसकी परिणीति लिंज़ में हिटलर के जन्म में हुई। मगर गाँधीजी 'डब्ल्यू एच ऑडेन' के तर्क को बहुत पहले समझ चुके थे। उनके अनुसार, न्याय की स्थापना के लिए अन्याय के अस्तित्व की स्वीकृति एवं तत्पश्चात अन्याय की समाप्ति तो आवश्यक है मगर उसके बाद लिया जाने वाला बदला तो अन्याय के दुष्चक्र को ही जन्म देता है। अन्याय की समूल समाप्ति में उसका कोई योगदान नहीं हो सकता। अतः गाँधीजी न केवल भारत की न्यायपूर्ण स्वतंत्रता के लिए न्यायोचित साधनों से लड़े, बल्कि अपने विरोधियों के प्रति हिंसा एवं बदले की भावना का पुरजोर विरोध भी किया। यह उनका एक खुशहाल एवं इंसाफपसन्द दुनिया के लिए सबसे बड़ा योगदान था।

परंतु भारत की स्वतंत्रता या उसके पश्चात् भारत के कुछ सामाजिक आंदोलनों, अमेरिका एवं दक्षिण अफ्रीका के अश्वेत वर्ग के संघर्षों के अलावा मानवता ने गाँधीवादी न्याय के सिद्धांत की ज्यादातर अवहेलना ही की जबकि गाँधीवादी तरीकों से अर्जित किया गया न्याय कहीं ज्यादा सतत् एवं सफल रहा है। गाँधीजी ने अपने जीवनकाल में भी भारत के जाति एवं धर्म से संबंधित सवालों का न्यायपूर्ण हल तलाशने का प्रयास किया जो राजनीतिक सत्यनिष्ठा, करुणा एवं प्रेम से प्रभावित थे। इस विषय में यह एक रोचक पहलू है कि जहाँ बाबा साहेब आंबेडकर, गाँधी के राजनीतिक विरोधी होने के बावजूद आपसी विमर्श के माध्यम से पहले पूना पैक्ट एवं बाद में संविधान प्रारूप समिति की अध्यक्षता स्वीकार कर उनके साथ सहमति के धरातल पर पहुंचने में सफल रहे वहीं जिन्ना अपनी विरोध की जिद पर अड़े रहे। डॉ. आंबेडकर के राजनीतिक संघर्ष की सफलता एवं जिन्ना के प्रयोग की विफलता आज पूरा विश्व देख रहा है। उनके राजनीतिक विरोधी भी आज 70 वर्ष बाद यह बात स्वीकार करेंगे कि गाँधी का रास्ता ही सभी के लिए सुरक्षित एवं संपन्न भविष्य की गारंटी दे सकता है।

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में जिस स्वतंत्रता की सुबह ने अंगड़ाई लेनी शुरू की थी, वह बेवक्त ही शीत युद्ध के अंधेरे में खोने लगी। शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात भी पुराना साम्राज्यवाद नए रूप में सामने आने लगा। धर्म से जुड़े वैश्विक टकराव जिसे बीसवीं सदी ने शायद दूसरी सहस्राब्दी के प्रारम्भ में हुए धर्मयुद्धों की विषयवस्तु मानकर इतिहास की अलमारी में बंद कर दिया था, वह बीसवीं सदी जाते–जाते फिर से पूरब–पश्चिम जंग का भूत बनकर हमारे सामने आ खड़ा हुआ। व्यापार जो पिछले पांच हजार सालों से मानवता को एक धागे में पिरो रहा था उसकी स्वीकार्यता बढ़ी तो सही मगर क्षणिक तौर पर ही। विश्व व्यापार के सबसे बड़े पैरोकार ही उसके सबसे बड़े विरोधी बन गए। इन सब परिस्थितियों का होना महज एक संयोग तो नहीं है, इनके पीछे वजहें भी हैं और कहीं न कहीं ये वजहें नाइंसाफी से जुड़ी हुई हैं। लेकिन उस नाइंसाफी का इक्कीसवीं सदी के मनुष्य के पास क्या इलाज है? वही, ''मैं और जनता जानते हैं कि स्कूल के बच्चे क्या सीखते हैं? वो जिनके साथ बुरा हुआ है बदले में बुरा करते हैं।'' गाँधीजी जब सबसे ज्यादा प्रासंगिक हैं तभी उनकी प्रासंगिकता पर प्रश्न चिह्न लगाए जा रहे हैं। यह मानव इतिहास की त्रासदी ही है कि उसको अपने अतीत के पैगम्बरों से सीखने में बड़ी तकलीफ होती है। उसे हर सदी में नया पैगम्बर चाहिए। वरना कृष्ण की प्रासंगिकता महाभारत के बाद, ईसा की प्रासंगिकता उनके बलिदान के बाद, पैगम्बर मुहम्मद की प्रासंगिकता अरब दुनिया के इल्हाम के बाद और गाँधीजी की प्रासंगिकता 1947 के बाद समाप्त तो नहीं हो गई है।

वर्तमान समय में गाँधी विचारधारा की प्रासंगिकता

अम्बुज गुप्ता, एमबीए
छात्र – एमबीए 2018-20

महात्मा गाँधीजी का संघर्ष भारत को स्वतंत्र कराने तक ही सीमित नहीं है बल्कि उनका योगदान सामाजिक स्तर की चुनौतियों से लड़ने के लिए सराहनीय है। वे सामाजिक स्तर पर जातिवाद, रंगभेद, नस्लवाद जैसे विभेदकारी सिद्धांतों के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने इन सारे मसलों का हिंसा से नहीं बल्कि सत्य, अहिंसा और शत्रु के प्रति प्रेम जैसे उपकरणों के माध्यम से समाधान किया। वैश्विक स्तर पर व्याप्त हिंसा, मतभेद, बेरोजगारी, महंगाई तथा तनावपूर्ण वातावरण में आज बार–बार यह प्रश्न उठाया जा रहा है कि गांधीजी के सत्य व अहिंसा पर आधारित दर्शन और विचारों की आज कितनी प्रासंगिकता महसूस की जा रही है।

चलिए, टिप्पणी करते हैं गाँधीजी के सामाजिक सुधार उपायों के आधुनिक युग में योग्यता पर। गाँधीजी का सत्याग्रह विश्व प्रसिद्ध है और विभिन्न हथियारों से उन्होंने उसका पालन किया है, जैसे दांडी पदयात्रा और अंग्रेजों के अन्याय के विरुद्ध उपोषण। आज भी लोग अनशन का उपयोग करते हैं जैसे प्रसिद्ध गाँधीवादी समाज सेवक अन्ना हजारे ने किया। वे शांतिपूर्वक लोकपाल विधेयक के लिए दिल्ली के रामलीला मैदान में आमरण अनशन पर बैठे थे, किन्तु मैं इसे ब्लैकमेल मानता हूँ। तकनीक भले ही गाँधीवादी है परन्तु कानून बनाने के लिए जब संसद है तब इस एक व्यक्ति के हठ की आवश्यकता नहीं है। वहीं जब बात किसानों की आती है तब यह हथियार अवश्य ही जरूरी मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम है। मेरा मानना यह है कि आप सिर्फ अपने ऊपर हो रहे किसी अन्याय की तरफ सरकार, मीडिया और यंत्रणा का लक्ष्य खींचने के लिए लाक्षणिक अनशन कर सकते हैं।

गाँधीजी की एक विचारधारा जो शारीरिक श्रम के महत्त्व को दर्शाती है, आज–कल के प्रौद्योगिक युग में बहुत ही मुश्किल है। कंप्यूटर के माध्यम से शिक्षा और मशीनों के माध्यम से फैक्ट्रियां चल रही हैं जो ना केवल लोगों को आलसी, साथ ही साथ बेरोजगार बनाने में पारंगत हैं। यह प्रगति गाँधीजी की सोच के विपरीत तो है लेकिन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने ''मेक इन इंडिया'' और ''स्वच्छ भारत अभियान'' जैसी पहलों से गाँधीजी के स्वदेशी एवं स्वच्छता के विचारों पर जोर डाला है।

जिस देश में गाँधीजी का जन्म 150 वर्ष पहले हुआ था वहीं लोगों में उनके विचारों को लेकर मतभेद है। देखा जाए तो इतने वर्षों में बहुत कुछ बदल चुका है। समय की कमी लोगों के धैर्य की परीक्षा लेती है। आतंकवाद एक ऐसी ही कड़ी है जो इतने वर्षों में एक बड़े भयानक रूप में हमारे सामने आई है। चाहे वह अमेरिका पर हुआ 9/11 का आतंकी आक्रमण हो या 2016 में भारत वर्ष का उड़ी हमला, दोनों ही मौकों पर देशों ने गाँधीवाद छोड़ने का निश्चय किया और ईंट का जवाब पत्थर से दिया। आतंकवादियों ने अमेरिका की समृद्धि का प्रतीक समझे जाने वाले न्यू यॉर्क शहर की प्रमुख इमारत वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमला बोल कर जिस प्रकार लगभग 5 हजार बेगुनाह लोगों को अपना निशाना बनाया, वह वास्तव में एक क्रूरतम एवं असहनीय अपराध था। इस अपराध का खामियाजा आज भी लोग भरते हैं जब अमेरिका में भेदभाव होता है। वहीं हिंदुस्तान जो अपनी सहनशीलता के लिए जाना जाता है, उड़ी हमले के 10 दिन बाद ही 'सर्जिकल स्ट्राइक' के माध्यम से ऐलान करता है कि अब वो चुप बैठने वाला नहीं है। भारतीय जवानों पर ठीक ढाई वर्ष बाद एक और आतंकी हमला होता है, जिसे इतिहास में काफी बड़ा माना जा रहा है, उस ने पूरे भारतवर्ष को आतंकियों के विरुद्ध एकजुट कर दिया है। किन्तु इस बार सब जंग की मांग कर रहे हैं। इतिहास गवाह है कि युद्ध जनहानि और अर्थहानि के अलावा कुछ नहीं देता है। यह मांग सही है या गलत, यह विचार–विमर्श का विषय है। परन्तु इससे एक बात तो तय है कि गाँधी विचारधारा को लोग अपनी इच्छा अनुसार अपनाते और त्यागते हैं।

प्रश्न अब यह उठता है कि क्या अब बातचीत से समस्याओं का समाधान हो सकता है या नहीं? क्या आज भी अहिंसा के मार्ग पर चला जा सकता है या नहीं?

शायद इन सवालों का जवाब मिल पाना मुश्किल है। परंतु निर्बल होने के बावजूद अन्याय के विरुद्ध साहस के साथ निर्भय होकर डटे रहना तथा असत्य के समक्ष नतमस्तक न होने जैसे बेशकीमती गुण गाँधीजी ने कहां से सीखे। शायद इन गुणों की कमी ही हमें उनके आदर्शों पर चलने से रोकेगी और देश–विदेश उनका गुणगान गाएंगे। अतः यह कहने में कोई हर्ज नहीं है कि गाँधीजी के विचार, सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं, किन्तु हम लोग पूर्णतः उनके मार्ग पर चलने योग्य नहीं हैं।

गाँधीवादी दर्शन और आधुनिक व्यवसाय

मिलिंद कुमार झा
रिसर्च स्कॉलर
(पीएचडी–2017 प्रोग्राम)

समकालीन विश्व, मानवीय इतिहास में सबसे उन्नत है और आज वैश्विक समाज व्यवसाय संचालित करने के आदर्श तंत्र को चुनने के लिए चौराहे पर खड़ा है। साथ ही, दुनिया आज सामाजिक और पर्यावरण के मोर्चे पर भी संकट के चरमोत्कर्ष पर पहुंची हुई है। सामाजिक अंग होने के फलस्वरूप व्यवसाय इस संदर्भ से कतिपय दूर नहीं रह सकते हैं। पश्चिमी प्रबंधन मॉडल ने भी व्यापार रणनीति के साहित्य में हितधारक सिद्धांत के माध्यम से इस संघर्ष को मान्यता दी है जहां पहले केवल शेयरधारक सिद्धांत ही इसके केंद्र में था।

भारत भी आधुनिक उच्च आर्थिक विकास के युग में इन प्रभावों से अलग नहीं है और यक्ष प्रश्न यह है कि जीडीपी विकास दर व्यावसायिक सफलता का सही पैमाना है अथवा दूसरे वैकल्पिक मापक यथा लोगों की भलाई, आनंद सूचकांक, जीवन की गुणवत्ता, आदि ज्यादा उपयोगी हैं। यही वह उद्देश्य है, जहां व्यवसाय के संचालन में गाँधीवादी दर्शन से प्रभावित सीएसआर (कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व) की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है। वर्ष 1914–1960 के काल–खण्ड में, भारत में सीएसआर मूल रूप से गाँधीजी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत से प्रभावित था, जिसका उद्देश्य सामाजिक विकास को समेकित करना था। भारत अपने विभिन्न स्वरूपों के कारण, विशेषतः सांस्कृतिक तौर पर एक अनूठा देश है, अतः पश्चिमी या विकसित देशों के मॉडल को ज्यों का त्यों लागू करने में गहरी असफलता की संभावना है।

भारत आज सस्टेनेबिलिटी के सभी आयामों में विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहा है, नामतः पारिस्थितिक (प्रदूषण, पेयजल, कृषि क्षेत्र, वन सम्पदा, शहरीकरण, अपशिष्ट प्रबंधन, आदि), सामाजिक (असमानताएं और भेद, शिक्षा क्षेत्र, आय का अंतर, बीमारियां, सामाजिक अशांति, सामाजिक सुरक्षा की कमी, ग्रामीण–शहरी क्षेत्रों में अंतर, धार्मिक संघर्ष, गरीबी, बेरोजगारी, लैंगिक विसंगति, आदि) और वित्तीय (वित्तीय सेवाओं तक कम पहुंच, अनुसंधान और विकास, कमतर उत्पादन प्रणाली, आदि)।

सतत् विकास की अवधारणा समसामयिक एवं विभिन्न पीढ़ियों के बीच न्याय के मुद्दों को परिभाषित करती है, जहां मुख्य विवाद वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के बीच संसाधनों के वितरण तथा जीवनशैली के बीच संतुलन पर है। इन मुद्दों में से कई को गाँधीवादी दर्शन में स्थान दिया गया है। इस संदर्भ में विभिन्न एसडीजी लक्ष्यों यथा ''गरीबी की पूर्ण समाप्ति'', ''भुखमरी की समाप्ति'', ''अच्छा स्वास्थ्य और जीवन स्तर'', ''गुणवत्तापूर्ण शिक्षा'', ''लैंगिक समानता'', ''स्वच्छ जल तथा स्वच्छता'', ''सस्ती एवं स्वच्छ ऊर्जा'', ''अच्छा कार्य तथा आर्थिक विकास'', ''उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचे का विकास'', ''असमानता में कमी'', ''टिकाऊ शहरी तथा सामुदायिक विकास'', ''जिम्मेदारी के साथ उपभोग तथा उत्पादन'', ''जलवायु परिवर्तन'', ''पानी के नीचे जीवन'', ''जमीन पर जीवन'', ''शांति एवं न्याय के लिए संस्थान'' और ''लक्ष्य प्राप्ति में सामूहिक साझेदारी'' को दुनिया के विभिन्न देशों द्वारा अंगीकृत किया गया है ताकि हम आज की सभ्यता में सतत् विकास की प्राप्ति कर सकें।

गाँधीजी की दूरदर्शिता ने भविष्य की इन समस्याओं को 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में ही भांप लिया था, और उन्होंने अपने विभिन्न लेखों और प्रवचनों के माध्यम से भारतीयों को समाधान देने का प्रयास किया। गाँधीवादी दर्शन का अंकुरण ब्रिटिश भारत के समय हुआ जब आर्थिक स्थिरता, बड़े पैमाने पर गरीबी, ग्रामीण बेरोजगारी, शहरी औद्योगिकीकरण, आय असमानता, आयातित प्रौद्योगिकी पर भारी निर्भरता, अंतर–क्षेत्रीय असंतुलन जैसे कई मुद्दे देश के सामने मुँह बाये खड़े थे। दुर्भाग्य से, इनमें से कई मुद्दे आधुनिक युग में भी प्रासंगिक बने हुए हैं। अर्थव्यवस्था, सामाजिक तथा पर्यावरणीय मुद्दों पर गाँधीजी के विचार प्रासंगिक हैं, जो आज के व्यावसायिक प्रबंधन को इन मुद्दों के समाधान हेतु सही दृष्टिकोण प्रदान कर सकते हैं।

गाँधीजी के विचार सस्टेनेबिलिटी के तीनों स्तंभों विवेचना मुख्यतः नैतिकता की दृष्टि से करते हैं। अर्थशास्त्र और समाज पर गाँधीवादी दर्शन और विचार स्वतंत्र नहीं हैं, बल्कि पारस्परिक तथा अन्योन्याश्रित हैं। गाँधीजी पश्चिमी सभ्यता के सख्त आलोचक रहे और उनके परिप्रेक्ष्य में जीवन का पश्चिमी तरीका टिकाऊ नहीं था। आर्थिक समानता, औद्योगिक लोकतंत्र, संगठित श्रम और सर्व–कल्याण गाँधीवादी आर्थिक दर्शन का मूल है। उनके विचार में सही आर्थिक समाज को किसी भी प्रतियोगिता, शोषण तथा हिंसा से रहित होना चाहिए, जहां धन के समान वितरण और उपभोग की परिकल्पना की गई है – एक ऐसा समाज जो आर्थिक वर्गों से रहित एवं पूर्णतः स्वतंत्र हो।

गाँधीजी का सम्पूर्ण ध्यान ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास पर था, जिसका लक्ष्य गाँवों को आत्मनिर्भर बनाना था ताकि बड़े पैमाने पर बेरोजगारी, विस्थापन, समूहबद्ध शहरीकरण, आदि मुसीबतों से उन्हें दूर रखा जा सके। उनका दृढ़ विश्वास था कि सही मायने में रोजगार सृजन ''गाँवों से लोगों के प्रवास'' की अपेक्षा ''गाँवों के विकास'' से ही संभव है। गाँधीवादी विचारों का विस्तृत रूप में अनुसंधान करने पर हम पाते हैं कि उनके विचार उद्योगों के विरूद्ध नहीं हैं, बल्कि उनसे उपजने वाले दोषों जैसे अपव्यय, प्राकृतिक संसाधनों का विनाश, श्रम का शोषण, मानवीय लालच, उपभोक्तावाद में वृद्धि, रोजगार–असंतुलन, ग्रामोद्योग और कौशल की मृत्यु के खिलाफ थे। स्वदेशी पर विश्वास यानी "अवांछित वस्तुओं के आयात पर निर्भरता" के बजाय "व्यक्तिगत जरूरतों के लिए देशी नवीनीकरण" आज के भारत के लिए भी प्रासंगिक है।

"ब्रेड–लेबर" की अवधारणा में हर व्यक्ति को अपनी आजीविका कमाने के लिए शारीरिक श्रम करना आवश्यक माना गया है। आज के दृष्टिकोण से यह गाँधीवादी विचार अतिवादी प्रतीत हो सकता है, किन्तु यह सोच भी आत्मनिर्भरता की ओर ही उन्मुख है। हालांकि, इसका मतलब यह भी है कि गाँधीवादी अर्थव्यवस्था में विशुद्ध बौद्धिक एवं मानसिक श्रम या सेवाओं के लिए कोई जगह नहीं है, जो वैश्विक और स्थानीय स्तर पर आज की अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग है। मजदूरों के लिए तय किए जाने वाले मानक वेतन की, उनकी सलाह को आज "समान काम के लिए समान वेतन" की अवधारणा के साथ जोड़ा जा सकता है। वह एक ऐसी तकनीक के पक्षधर थे जो मौजूदा संस्कृति तथा प्रकृति के बीच तालमेल बैठा सके और जिसमें जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने की क्षमता हो।

आर्थिक विकास आधुनिक दुनिया का प्राथमिक संचालक है। गाँधीजी के दृष्टिकोण में, विकास स्वयं में सम्पूर्ण नहीं बल्कि आर्थिक, राजनीतिक, मानसिक और नैतिक अवयवों का सम्मिश्रण है। गाँधीजी समाज में दार्शनिक (आर्थिक एवं नैतिक प्रगति), संरचनात्मक (ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों), पारिस्थितिक (मनुष्य तथा उनके पर्यावरण), तकनीकी (छोटे एवं बड़े पैमाने की प्रौद्योगिकियां) और वितरणात्मक (आय वितरण में समानता) तौर पर एक गतिशील संतुलन का प्रयास करते हुए आर्थिक विकास के पक्षधर थे। गाँधीजी का अहिंसा पर जोर तथा अधिकृत हड़ताल की अवधारणा के साथ अनुनय–विनय को संघर्षों से निपटने के प्राथमिक तरीके को आज के औद्योगिक संबंधों और संघर्ष प्रबंधन के क्षेत्र में सीधे उपयोग किया जा सकता है।

गाँधीवादी विचारों के परिप्रेक्ष्य में ट्रस्टीशिप के सिद्धांत की परिकल्पना आज के कॉर्पोरेट गवर्नेंस के लिए सर्वथा उपयुक्त है। ट्रस्टीशिप का दर्शन समाजवाद और पूँजीवाद के बीच की अवधारणा है, जहां धन का स्वामी स्वयं को ट्रस्टी एवं संपत्ति को सर्वसमाज का मानकर इसका उपयोग दूसरों की भलाई के लिए करे।

आधुनिक अर्थव्यवस्था पर यह मनोदृष्टि बहुत ही सरल तथा शायद अति आदर्शवादी लगती हो, परंतु इसका उद्देश्य एक सुव्यवस्थित, सामंजस्यपूर्ण और वर्गहीन समाज वाली अर्थव्यवस्था बनाना है। गाँधीजी के सामाजिक सिद्धांत देश से विश्व की ओर सद्भाव के प्रवाह पर आधारित थे। एसडीजी के विभिन्न लक्ष्य भी इनमें से कई पहलुओं से मेल खाते हैं और गाँधीजी के आदर्श वाक्य ''वैश्विक सोच और स्थानीय कार्य'' से कतिपय प्रभावित हैं।

गाँधीजी पर्यावरण संरक्षण के प्रारंभिक समर्थक रहे और उनका दृढ़ विश्वास था कि मानवमात्र को प्रकृति के समीप रहने के साथ–साथ उपलब्ध संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करना चाहिए। पेंसिल का उपयोग अंत तक करने का उपाख्यान इसी अवधारणा को स्थापित करने की कोशिश मानी जा सकती है। गाँधीजी ने विभिन्न विचारों और प्रयोगों के माध्यम से सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया कि

मानव समुदाय शारीरिक श्रम, वृक्षारोपण, कृषि, सरल जीवन और शिल्प का उपयोग कर प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकता है। पर्यावरण पर गाँधीजी के विचार सस्टेनेबिलिटी के वर्तमान मुद्दों और एसडीजी लक्ष्यों के लिए पूर्ण रूप से प्रासंगिक हैं।

गाँधीजी ने तात्कालिक विषयों जैसे वनों के विनाश, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, खतरनाक उद्योगों से निकलने वाले अपशिष्ट व कचरे जैसे कई मुद्दों को उठाया। गाँधीजी का यह विचार कि ''मानव जीवन एक सप्ताह तक बिना भोजन तथा कुछ घंटों तक बिना जल के तो रह सकता है, किन्तु शुद्ध हवा के बिना कुछ क्षण तक भी जीवन को बनाए रखने में सक्षम नहीं है'', प्राकृतिक संसाधनों के महत्त्व की ओर ध्यान आकर्षित करता है। अहिंसात्मक विरोध की उनकी तकनीक का उपयोग कई समकालीन पर्यावरणीय मुद्दों जैसे 'चिपको आंदोलन', 'नर्मदा बचाओ आंदोलन' इत्यादि में किया गया है।

सस्टेनेबिलिटी के विभिन्न आयामों पर गाँधीजी के विचारों के अलावा, आधुनिक प्रबंधन उनकी जीवनशैली एवं कार्यपद्धति से नेतृत्व और प्रबंधन के अनेक प्रभावशाली गुणों को प्राप्त कर सकता है। गाँधीजी एक करिश्माई नेता, एक महान वक्ता, प्रभावशाली व्यक्तित्व, तीव्र निर्णयकर्त्ता और परिवर्तन के पुरोधा थे, जो अपनी कमजोरियों तथा गलतियों को स्वतः स्वीकार करने के लिए तैयार थे। गाँधीजी की कार्यशैली प्रतिबिंबित करती है कि लोगों को प्रेरित करने हेतु यह आवश्यक है उनकी विचारधाराओं, परम्पराओं और संस्कृति को समझने के बाद उसके अनुकूल नीतियों पर काम किया जाए। आज का कॉर्पोरेट जगत अपने सीईओ में ये सारे गुण जरूर देखना चाहेगा।

वर्तमान अर्थव्यवस्था और मानव स्वभाव के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक अर्थव्यवस्था को गाँधीवादी दर्शन की सभी अवधारणाओं को समावेशित करने में महती कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। उपभोक्तावाद और भौतिकतावाद पर उनके विचार आध्यात्मिक रंग से सराबोर और आज के व्यावसायिक संदर्भ में अत्यधिक कठोर हैं। साथ ही, ट्रस्टीशिप सिद्धांत के अनुसार, संपत्ति के मालिक को हृदय परिवर्तन के माध्यम से ट्रस्टी की भूमिका अपनाने के लिए राजी किया जाना चाहिए ना कि कानूनी तौर पर बाध्य करके, जो इसे लागू करने के लिए अवास्तविक बनाता है। अंग्रेजी शिक्षा के प्रति उनका प्रबल विरोध भी आज के वैश्वीकरण के संदर्भ में अनुपयुक्त होगा जहां अंग्रेजी का ज्ञान भारत के विकास इंजन का एक और पहिया बना हुआ है।

अधिकांश गाँधीवादी विचार अति आदर्शवादी प्रतीत होते हैं, यहां तक कि मजबूत सस्टेनेबिलिटी के सिद्धांत भी इस कठोर रुख से परहेज करते हैं। नैतिकता आधारित अर्थव्यवस्था का उनका विचार वैश्विक रूप में स्वीकृत है, क्योंकि यह मजबूत मानवीय मूल्यों और गरिमा के स्तम्भों पर स्थापित है। भारत में विशेष रूप से, यदि हम उनके विचारों से कुछेक सूत्रों को अपना सकें तो हम वैश्विक स्तर पर आर्थिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक विकास के संतुलन को प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। आज जहां कई देश अंधाधुंध विकास के बजाय समाज के प्रसन्नता सूचकांक पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं, वहां स्थायी तरीके से व्यवसाय करने की गाँधीवादी विचारधारा आधुनिक प्रबंधन की दुनिया के लिए अच्छा मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है।

इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित,
नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं।

– राहुल सांकृत्यायन

आधुनिक युग में गाँधी विचारधारा की प्रासंगिकता

दीपांशु राय सक्सेना

भारत एक विभिन्न संस्कृति का देश है जिसमें समस्त जाति के लोग एक–दूसरे के साथ मिलजुल कर रहते हैं। महात्मा गाँधी के अथक प्रयास देश की आजादी के लिए महत्त्वपूर्ण थे। उनके आदर्श तथा अहिंसावादी गतिविधियों ने देश को उच्चतम स्तर पर ला कर खड़ा किया, जिसके कारण न केवल देश को आजादी मिली बल्कि देश को महात्मा गाँधी के रूप में एक 'राष्ट्रपिता' भी मिला।

आधुनिक समय में गाँधी विचारधारा की प्रासंगिकता पर कुछ पंक्तियां लिखने से पहले हमें गाँधी विचारधारा को जानना जरूरी होगा, क्योंकि विचार दर्शन से प्रवाह हुआ करता है। गाँधी दर्शन के मूल में आपको सत्य, अहिंसा, सादगी, अस्तेय, अपरिग्रह, श्रम और नैतिकता मिलेगी।

महात्मा गाँधी एक युग पुरुष थे। महात्मा गाँधी एक ऐसा नाम है जो आज के आधुनिक समय में किसी पहचान का मोहताज नहीं है। महात्मा गाँधी के आदर्शों और उनकी विचारधारा से आज देश–विदेश और हर तबके का इंसान बखूबी परिचित है।

गाँधीवाद, मोहनदास करमचंद गाँधी (जिन्हें ज्यादातर महात्मा गाँधी के नाम से जाना जाता है) के आदर्शों, विश्वासों एवं दर्शन से उदभूत विचारों के संग्रह को कहा जाता है, जो स्वतंत्रता संग्राम के सबसे बड़े राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेताओं में से थे। जब किसी व्यक्ति या संस्थान को गाँधीवादी कहकर संबोधित करते हैं तो उसका तात्पर्य है, गाँधी जी द्वारा स्थापित मूल्यों एवं आदर्शों का अनुपालन करने वाला।

महात्मा गाँधी ने अपने जीवन काल में सत्य और अहिंसा का दामन सदैव पकड़े रखा और अपने उन आदर्शों और विश्वास को देश के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाया। आजादी के समय लोगों ने उनके इन आदर्शों पर चल कर उनके मनोबल को बढ़ाया और आजादी के आंदोलन में 'सत्य' तथा 'अहिंसा' के पथ पर अग्रसर रहे जिससे देश के सभी नागरिकों ने आजादी का मुँह देखा। इसके फलस्वरूप, महात्मा गाँधी को 'राष्ट्रपिता' से सम्मानित किया।

आधुनिक समय में गाँधी विचारधारा की प्रासंगिकता में जैसे–जैसे दुनिया बदल रही है, महात्मा गाँधी उतने ही ज्यादा प्रासंगिक होते जा रहे हैं। सरकार स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत करे तो उसे गाँधी याद आते हैं। देश में राजनीतिक स्वार्थ के लिए जिस साम्प्रदायिक हिंसा की आग में घी डाला जा रहा है, उसे रोकने के लिए गाँधी के आदर्श याद आते हैं।

विदेश में किसी भी नेता को उपहार देने की बात आती है तो भारत सरकार की तलाश गाँधी की लेखनी पर जाकर ही खत्म होती है। गाँधीजी, 2 अक्टूबर के अलावा भी दुनिया भर में याद किए जा रहे हैं। यह प्रमाण है कि वे आज भी विश्व नेता हैं। आज गाँधी हमारे बीच नहीं है किन्तु एक प्रेरणा और प्रकाश के रूप में लगभग उन सभी मुद्दों पर उनके मार्गदर्शन निरंतर हमारे साथ हैं जिसका सामना किसी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र को करना पड़ता है। इक्कीसवीं सदी में गाँधी की सार्थकता प्रत्येक क्षेत्र में है।

गाँधीजी के चार सिद्धांत आज भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में प्रासंगिक है:

1) जनविरोधी सरकार या कानून के खिलाफ अहिंसक प्रदर्शन।
2) एक–दूसरे के धर्म को समझना और उसका सम्मान करना।
3) ऐसी आर्थिक नीति बनाना जिससे सभी का विकास हो और प्रकृति को कम से कम नुकसान पहुँचे।
4) व्यवहार में शिष्टाचार और जनता से जुड़े कार्यों में पारदर्शिता।

ये चारों सिद्धांत आज सबसे अधिक प्रासंगिक हैं। इन्हें आजमा लिया जाए तो किसी देश में हिंसक प्रदर्शन नहीं होंगे, आईएसआईएस जैसे आतंकी संगठन समाज में जहर नहीं घोल सकेंगे, दुनिया

विकास करेगी लेकिन प्रकृति का पूरा ख्याल रखा जाएगा और कोई सरकार भ्रष्टाचार नहीं करेगी।

गाँधीजी की नजर में आधुनिकता का मतलब गलाकाट स्पर्धा से नहीं था। एक बार एक ब्रिटिश पत्रकार ने महात्मा गाँधी से पूछा था कि आधुनिक सभ्यता पर आपकी सोच क्या है? गाँधीजी का जवाब था, मेरी नजर में यह एक अच्छा विचार है। इस सोच के साथ गाँधीजी ने पश्चिमी देशों के प्रति कभी द्वेष भाव नहीं रखा। उन्होंने अपने आदर्श के रूप में हेनरी साल्ट, जॉन रस्किन और लिओ टाल्सटॉय का कई बार जिक्र किया। ये तीनों श्वेत थे। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जब लंदन पर बम गिराए गए थे, तब गाँधीजी रोए थे। उन्होंने अपने जीवन के दो दशक (वर्ष 1893 से 1914 तक) दक्षिण अफ्रीका में बिताए, लेकिन वहां भी वकालत से ज्यादा समाजसेवा की।

किसी से भी गाँधीजी के बारे में सवाल पूछने पर सबसे पहले यही सुनने को मिलता है कि गाँधीजी को सत्याग्रह के लिए जाना जाता है। दरअसल गाँधी जी के सत्याग्रह का व्यापक अर्थ है – अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न, दमन करने वाली जनद्रोही भ्रष्ट और शोषण व्यवस्थाओं से असहयोग तथा समाज में शुभ चिंतन और कर्म करने वाले लोगों और संगठनों के बीच समन्वय सहकार। जहां तक आज के समय में इसकी प्रासंगिकता का सवाल है तो आज जरूरत है कि हम अपने ढंग से ईमानदारी के साथ सत्याग्रह का सम्यक प्रयोग करें। मूल बात यह है कि हम सत्य पर अडिग हों, साधन शुद्धि पर हमारा भरोसा हो और व्यापक लोकहित पर हमारा बराबर ध्यान लगा रहे। वास्तव में सत्याग्रह होना चाहिए समाज को बेहतर बनाने के लिए, निरंकुश राजसत्ता पर जनता के प्रभावी अंकुश के लिए, नया समाज गढ़ने के लिए, जड़ीभूत मूल्यों और ढांचे के ध्वंस के लिए और स्वयं अपने भीतर के कलुषों को भगाने के लिए।

सांप्रदायिक कट्टरता और आतंकवाद के इस दौर में गाँधीवाद तब और प्रासंगिक हो जाता है, जब सांप्रदायिक सद्भावना बनाए रखने के लिए गाँधीजी सभी धर्मों के प्रति समान आदर भाव रखने को कहते हैं। आज भी, भारत में सांप्रदायिक तनाव के शमन के प्रभावी उपाय के रूप में 'सर्वधर्म प्रार्थना सभा' एवं 'प्रभात फेरी' जैसी गाँधीवादी तकनीक का प्रयोग सामान्य है। गाँधीवाद, अहिंसा और सत्याग्रह पर टिका है जो चार उपसिद्धांतों 1) सत्य, 2) प्रेम, 3) अनुशासन, एवं 4) न्याय पर आधारित है, जिनकी उपादेयता एवं प्रासंगिकता, वैश्वीकरण के वर्तमान हिंसक दौर में और बढ़ जाती है। इसी कारण, संयुक्त राष्ट्र संघ ने गाँधीजी की जन्म तिथि 2 अक्तूबर को 'विश्व अहिंसा दिवस' के रूप में स्वीकार कर मान्यता प्रदान की है। गाँधीजी का यह कथन आज भी समीचीन है कि 'इस संसार में हमारी जरूरत के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हैं, परंतु हमारे लालच के लिए नहीं'।

दरअसल सर्वधर्म समभाव की जीती–जागती तस्वीर समझे जाने वाले गाँधीजी मानते थे कि हिंसा की बात चाहे किसी भी स्तर पर क्यों न की जाए, परन्तु वास्तविकता यही है कि हिंसा किसी भी समस्या का सम्पूर्ण एवं स्थायी समाधान कतई नहीं है। जिस प्रकार, आज के दौर में आतंकवाद व हिंसा, विश्व स्तर पर अपने चरम पर दिखाई दे रही है तथा चारों ओर गाँधी के आदर्शों की प्रासंगिकता की चर्चा छिड़ी हुई है, ठीक उसी प्रकार, गाँधीजी भी अहिंसा की बात उस समय करते थे जबकि हिंसा अपने चरम पर होती थी।

अहिंसा से हिंसा को पराजित करने की सारी दुनिया को सीख देने वाले गाँधीजी स्वयं ''गीता'' से प्रेरणा लेते थे। हालांकि, वे ''गीता'' को एक आध्यात्मिक ग्रंथ स्वीकार करते थे। परन्तु श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए संदेश में कर्म के सिद्धांत का जो उल्लेख किया गया है, उससे वे अत्यधिक प्रभावित थे। गाँधीजी जिस ढंग से ''गीता'' के इस अति प्रचलित श्लोक –'कर्म किए जा, फल की चिंता मत कर' की व्याख्या करते थे, वास्तव में आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसी व्याख्या की प्रासंगिकता महसूस की जा रही है।

आज दुनिया के किसी भी देश में शांति मार्च का निकलना हो अथवा अत्याचार व हिंसा का विरोध किया जाना हो या हिंसा का जवाब अहिंसा से दिया जाना हो, ऐसे सभी अवसरों पर पूरी दुनिया को गाँधीजी की याद आज भी आती है और हमेशा आती रहेगी। अतः यह कहने में कोई हर्ज नहीं कि गाँधीजी, उनके विचार, उनके दर्शन तथा उनके सिद्धांत कल भी प्रासंगिक थे, आज भी हैं तथा रहती दुनिया तक सदैव प्रासंगिक रहेंगे।

गाँधी जिन्दा है

राम सिंह मीना

एक कहावत है, व्यक्ति मरता है, विचार कभी नहीं मरता। इसलिए हम कर्मचंद गाँधी महात्मा को तीन तरह से पहचानने की औकात रखते हैं। उसे हम बीड़ी के ठूंठ उठा कर धूम्रपान करने वाला, अपने पिता की जेब से पैसे चुराने वाला जानते हैं, वो कर्मचंद था। जिसे हम बैरिस्टर, एक गाल पर थप्पड़ पड़ने पर दूसरा गाल आगे कर देने वाला, नमक बना कर अवज्ञा आन्दोलन चलाने वाला, असहयोग आंदोलन को चलाने वाला, अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ जन आंदोलन करने वाला जानते हैं, वह इंसान गाँधी था। लेकिन जिसे हम असहयोग आंदोलन को वापस लेने वाला जानते हैं, अंग्रेजों के खिलाफ हथियार न उठाने वाला जानते हैं, थप्पड़ के बदले थप्पड़ न मारने वाला जानते हैं, वो महात्मा है। इसके अलावा, गाँधीजी को एक विचार, एक मानवतावादी आंदोलन, एक गाँधीवादी दर्शन के रूप में जानते हैं, वह गाँधी दर्शन की अमर–अजर आत्मा हैं। यहाँ मैं गाँधी दर्शन को ही विषय–वस्तु बनाऊंगा।

यहाँ पर मैं गाँधीजी की उन अमूल्य मानवीय एवं दार्शनिक धरोहरों पर विमर्श करना चाहूँगा जिन्होंने गाँधी दर्शन को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित कर दिया। गाँधीजी को अमर करने वाले उनके सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, सहजता, समर्पण, सहयोग, समदृष्टि, समानता, सर्वोदय, मानवीय मूल्यों की अहमता, श्रम, सृजन, सहकारिता, शिक्षा, स्वावलम्बन, स्वराज, प्रजातंत्र, भेदभाव रहित, नैतिक मूल्यों आदि पर विचार अद्‌भुत हैं एवं हजारों साल तक मानव का पथ प्रदर्शित करते रहेंगे। इस लेख में हम गाँधीजी के जीवंत दार्शनिक विवेचन को मूलतः रेखांकित करेंगे।

सत्य को सभी जानते हैं। लेकिन गाँधीजी के सत्य को केवल मन (आत्मा) जानता है। सच्चा मन (आत्मा) ईश्वर की प्रतिमूर्ति होता है, इसलिए सत्य व्यक्तिगत आभास के साथ ईश्वर की सार्वभौमिक प्रतिलिपि है। भौतिक सत्य प्रयोगात्मक होता है। सूरज पूर्व से निकलेगा, ये प्रयोगात्मक सत्य है। कोई इसे असत्य नहीं कह सकता है क्योंकि सुबह होते ही सत्य की प्रमाणिकता का प्रयोग हो जाएगा। गाँधीजी के सत्य का कोई नकारात्मक पर्याय नहीं है। गाँधीजी का सत्य प्रत्यात्मक है और सार्वभौमिक है अर्थात मन (आत्मा) की पुकार है, जिसके पीछे शारीरिक दृढ़ता का आग्रह भी निहित है। मनुष्य स्वतंत्र पैदा हुआ है इसलिए उसकी इच्छा के बिना उस पर किसी को शासन का अधिकार नहीं है। जीवन के सफल संचालन के लिए धर्म की आवश्यकता होती है। ऐसे ही हजारों सत्य हमारे आत्मविश्वास के पोषक हैं जो कि गाँधीजी का सत्य है।

गाँधीजी की अहिंसा, सत्य को जिन्दा रखने के साथ प्रकृति एवं जीवन–जगत को सुरक्षा प्रदान करने का वचन है। अहिंसा एक करार है जो हम प्रकृति की प्रत्येक देन के साथ, जीव–जगत के साथ निभाते हैं। जल, वायु, पृथ्वी को प्रदूषित करना भी हिंसा है। अहिंसा, सभी जीवों (दृश्य एवं अदृश्य) के प्रति आदर, समानता व सह–अस्तित्व की भावना से ओत–प्रोत है। गाँधीजी का अहिंसा भाव कानूनी न हो कर नैतिक जिम्मेदारी है। जंगल के युद्ध में जीतने वाला प्रकृति के साथ न्याय करता है इसलिए यहाँ गाँधीजी का अहिंसा का सिद्धांत चुप रहता है। दूसरी तरफ, मानवीय हिंसा को सह–अस्तित्व के सिद्धांत के लिए घातक माना गया है क्योंकि सह–अस्तित्व प्रजातंत्र का मूल मंत्र है।

गाँधीजी ने अहिंसा को राजनैतिक हथियार के रूप में प्रयोग किया था। गाँधीजी ने इतिहास से सीखा कि शासक जितना हिंसक होगा उसका अंत उतनी ही जल्दी निश्चित होता है। गाँधीजी के इस राजनैतिक हथियार की दुनिया के सभी चिंतकों ने प्रशंसा की है। अहिंसा को सभी धर्मों ने प्राथमिकता से स्थापित किया है। जैन धर्म में तो मन, कर्म और वचन से किसी को कष्ट पहुँचाना भी हिंसा माना गया है।

गाँधीजी का 'सर्वोदय' मानवतावादी विचारधारा का भारतीय संस्करण था। मानवतावादी विचारधारा का मूल मंत्र है, मानव से मानवीय व्यवहार किया जाए। हर प्रकार के भेदभाव, दुर्व्यवहार एवं पाशविकता को जड़ से समाप्त किया जाए। प्रत्येक व्यक्ति की

भलाई में सभी की भलाई निहित है। शिक्षक, अधिकारी, किसान, मजदूर एवं सफाई कर्मचारी के काम का महत्त्व बराबर है। श्रम के जीवन और कलम के जीवन का भेदभाव अमानवीय है। गाँधीजी ने देखा कि भारत में, ऊँच–नीच एवं छुआछूत हर स्तर पर व्याप्त हैं। इससे निजात पाने के लिए समाज के सम्पूर्ण 'सर्वोदय' की परिकल्पना की। विलासिता से मुक्ति के बिना 'सर्वोदय' समाज बनाना संभव नहीं है, अर्थात मानवीय व्यवस्था आदमी के लालच के लिए न होकर मानवीय जरूरतों को पूरा करने के लिए हो। लोगों की आय उनकी प्रतिभा, क्षमता और प्रयास के आधार पर भिन्न हो सकती है। अधिक आय वाले लोग अधिक समाज सेवा करेंगे। बेरोजगारी इंसान को हीनता ग्रस्त कर देती है, इसलिए बेरोजगारी से निजात पाने के लिए मशीनों का प्रयोग कम से कम हो।

'सर्वोदय' आंदोलन स्व–सहायता, कृषि, कुटीर उद्योग के आधार पर चलाया जाएगा। 'सर्वोदय' समाज समानता और स्वतंत्रता पर आधारित है। कुछ प्रतियोगिता होगी। शोषण और वर्ग–घृणा के लिए इसमें कोई जगह नहीं है। 'सर्वोदय' सभी की प्रगति के लिए खड़ा है। राजनीति सत्ता का साधन नहीं होगी, बल्कि सेवा और राजत्व की एक एजेंसी होगी। लोकतांत्रिकता मानवीय भावनाओं का प्रतिरूपण है। 'सर्वोदय समाज' शब्द सही अर्थों में समाजवादी है। सभी लोगों को प्रेम, बंधुत्व, सत्य, अहिंसा और आत्म–बलिदान की भावना से प्रेरित किया जाएगा। 'सर्वोदय समाज' अहिंसा के आधार पर कार्य करेगा।

जिस गाँधी को दुनिया से गए 72 वर्ष हो गए हैं, अभी वह गाँधी, उनकी विचारधारा के कारण करोड़ों लोगों के दिल–दिमाग में जिंदा है। शरीर मरता है, मगर विचार कभी नहीं मरते। 'गाँधी क्रान्ति जिंदाबाद'।

आधुनिक युग में गाँधी विचारधारा की प्रासंगिकता

नीरू वर्मा

जैसे–जैसे दुनिया बदल रही है महात्मा गाँधी उतने ही प्रासंगिक होते जा रहे हैं। सरकार स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत करे तो उसे गाँधी जी याद आते हैं। देश में राजनीतिक स्वार्थ के लिए जिस साम्प्रदायिक हिंसा की आग में घी डाला जा रहा है उसे रोकने के लिए गाँधी जी के आदर्श याद आते हैं। वैश्विक स्तर पर फैली हुई हिंसा, मतभेद, बेरोजगारी, महंगाई तथा तनावपूर्ण वातावरण में आज यह प्रश्न उठाया जा रहा है कि गाँधी जी के सत्य एवं अहिंसा पर आधारित दर्शन और विचारों की आज कितनी प्रासंगिता महसूस की जा रही है। यूं तो गाँधी जी के विचारों का विरोध करने वाले दुर्भाग्यवश किसी और देश के नहीं वरन् अपने भारतवासी ही हैं। उन्होंने गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता को तब भी महसूस नहीं किया था जब वे जीवित थे। आज पूरे विश्व में हिंसा, आर्थिक मंदी, भूख, बेरोजगारी अधिक बढ़ती जा रही है और इससे छुटकारा पाने के लिए हम न केवल गाँधीवाद का अनुसरण कर रहे हैं बल्कि गाँधी विचार/दर्शन को आत्मसात करने की आवश्यकता बड़ी ही शिद्दत के साथ महसूस की जाने लगी है।

महात्मा गाँधी की सबसे बड़ी खासियत यह थी कि उन्होंने धार्मिक नियमों का पालन करते हुए राजनीतिक जीवन को एक नई दिशा दी। राजनीति में रहते हुए भी उन्होंने अपना संतत्व जीवन नहीं छोड़ा जबकि अगर हम आज को देखें तो कुछ संत धार्मिक मठों में रहते हुए भी राजनीति करने में लगे हुए हैं। यह एक सबसे बड़ा उदाहरण है। गाँधी जी के विचारों का और आज के संतों के विचारों का, जो संतत्व की आड़ में राजनीति का खेल खेल रहे हैं।

अहिंसा से हिंसा को पराजित करने की सीख सारी दुनिया को देने वाले गाँधी जी स्वयं ''गीता'' से प्रेरणा लेते थे। श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए संदेश ''कर्म के सिद्धांत'' से वे अत्यधिक प्रभावित थे। गाँधी जी जिस ढंग से ''गीता'' की इस अति प्रचलित सूक्ति – ''कर्म किए जा फल की चिंता मत कर'' की व्याख्या करते थे, वास्तव में आज जीवन के हर क्षेत्र में इस व्याख्या की प्रासंगिकता महसूस की जा सकती है। गाँधी जी का कथन है – ''मैं यह नहीं चाहता कि मेरे घर को ऊँची चारदीवारों से घेर दिया जाए, खिड़कियों को मजबूती से बंद कर दिया जाए, मैं यह चाहता हूँ कि सभी संस्कृतियों का प्रवाह मुक्त रूप से मेरे घर में हो''। गाँधीवादी दर्शन जीवन के विभिन्न पहलुओं के लिए शक्ति एवं प्रेरणा का निरंतर बहने वाला एक ऐसा स्त्रोत है जो शताब्दियों तक प्रकाश स्तंभ के रूप में बना रहेगा। गाँधी जी का जन्म भारत में, उच्च शिक्षा इंगलैंड में तथा राजनीतिक संघर्ष की दीक्षा दक्षिण अफ्रीका में हुई और उन्होंने अपने सभी अनुभवों का प्रयोग भारत को आजाद कराने के लिए किया और वह भी बिना किसी हथियार एवं सेना के।

दुनिया के करोड़ों दिलों पर राज करने वाले बापू की मोहनदास कर्मचन्द से राष्ट्रपिता बनने की यात्रा बेहद दिलचस्प है। ईश्वर तथा प्रार्थना पर उनका गहरा विश्वास था। उनकी व्यक्तिगत मान्यता थी कि सच्ची प्रार्थना और ईश्वर भक्ति से हम अपने लक्ष्य को जरूर प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि सच्ची प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती है। मूर्ति पूजा में उनका विश्वास था मगर वह पाखण्ड और अंधविश्वास से कोसों दूर थे। गाँधी जी ने अपने जीवन में सदा सत्य और अहिंसा को ही सर्वोपरि माना है। उनका कहना था कि ''मरने के लिए मेरे पास बहुत से कारण हैं, किन्तु किसी को मारने का मेरे पास कोई कारण नहीं है''। आज गाँधी जी हमारे बीच में नहीं हैं किन्तु एक प्रेरणा और प्रकाश के रूप में उनका मार्गदर्शन एवं सिद्धांत आज भी हमारे साथ है। इन्हीं सिद्धांतों के महत्त्व को समझकर संयुक्त राष्ट्र ने 2 अक्टूबर को ''विश्व अहिंसा दिवस'' के रूप में मनाने की घोषणा की। आज भी भारत में साम्प्रदायिक तनाव को नष्ट करने के प्रभावी उपायों के रूप में सर्वधर्म प्रार्थना सभा एवं प्रभात–फेरी जैसी गाँधीवादी तकनीक का प्रयोग किया जाता है। सत्य एवं अहिंसा पर टिका गाँधीवाद चार सिद्धांतों – 1) सत्य, 2) प्रेम, 3) अनुशासन एवं 4) न्याय पर आधारित है जिसकी उपयोगिता आज के हिंसक युग में तेजी से बढ़ गई है।

आज गाँधी जी न सरल हैं, न जटिल। आस्थाओं का यह युगपुरूष अपने ही देश में तलाशा जा रहा है। आतंक के साये में जी रहे सभी लोग सत्य, प्रेम और अहिंसा से कोई सरोकार नहीं रखते हैं। यही हमारी कमजोरी है और यही हमारी विवशता है। लोग लालच और भूख के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार हैं। गाँधी जी का यह कथन बिलकुल सही है – ''इस संसार में हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं परन्तु हमारे लालच के लिए नहीं''।

गाँधी जी के चार सिद्धांत – 1) कानून के खिलाफ अहिंसक प्रदर्शन, 2) दूसरे धर्म को महत्त्व देना, 3) ऐसी आर्थिक नीति अपनाना जिससे सबका भला हो और 4) व्यवहार में शिष्टाचार तथा जनता से जुड़े कार्यों में पारदर्शिताय इनको यदि कोई अपना ले तो शायद किसी भी देश में हिंसक प्रदर्शन या वारदात नहीं होगी। दुनिया विकास करेगी और कोई सरकार भ्रष्टाचार नहीं करेगी। केवल भारतवर्ष में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में गाँधीवाद का सबसे अधिक असर देखने को मिलता है। बीसवीं सदी के जाने–माने नेता दलाई लामा, मार्टिन लूथर जैसे धर्मध्वजी योद्धा भी बापू से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने गाँधी जी के जीवन से प्रभावित होकर कहा है कि ''आने वाली पीढ़ियों को यकीन ही नहीं होगा कि गाँधी जैसा व्यक्ति भी कभी धरती पर जन्मा था''।

अंत में यह कहने में कोई हर्ज नहीं है कि गाँधी जी, उनके विचार, उनके आदर्श, उनके सिद्धांत कल भी प्रासंगिक थे तथा आज भी हैं और तब तक रहेंगे जब तक आतंक एवं भ्रष्टाचार विश्व में पूरी तरह से समाप्त नहीं हो जाता है। आज भी वह विश्व नेता के रूप में जाने जाते हैं क्योंकि 2 अक्टूबर के अलावा भी गाँधी जी दुनिया भर में याद किए जाते हैं।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में गाँधीवादी आंदोलनों की प्रासंगिकता

सुश्री श्रावणी मंडल

महात्मा गाँधी का कथन है– ''मैं यह नहीं चाहता कि मेरे घर को ऊँची चारदीवारी से घेर दिया जाए और खिड़कियों को मजबूती से बंद कर दिया जाए। मैं चाहता हूँ कि सभी संस्कृतियों का प्रवाह, मुक्त रूप से मेरे घर में हो परंतु मैं उस प्रवाह में उखड़ने से इनकार करता हूँ।'' गाँधीवादी दर्शन, जीवन के विभिन्न पहलुओं के लिए शक्ति एवं प्रेरणा का निरंतर बहने वाला एक ऐसा स्रोत है जो शताब्दियों तक प्रकाश स्तंभ के रूप में बना रहेगा। बल्कि वैश्विक गाँव एवं बाजार आधारित अर्थव्यवस्था के इस दौर में गाँधीवाद की प्रासंगिकता और बढ़ गई है।

गाँधीजी का जन्म भारत में, उच्च शिक्षा इंगलैंड में तथा राजनैतिक संघर्ष की दीक्षा दक्षिण अफ्रीका में हुई और उन्होंने अपने समस्त अनुभवों का प्रयोग भारत को आजाद कराने में किया। वैश्वीकरण की उपज होने के कारण, गाँधीजी स्वयं इसके नफे–नुकसान से भली भांति परिचित थे। वैश्वीकरण को प्राचीन घटना मानते हुए वे आश्वस्त थे कि विभिन्न संस्कृतियों के संश्लेषण से भारतीय संस्कृति को कोई खतरा नहीं है। सांप्रदायिक कट्टरता और आतंकवाद के इस दौर में गाँधीवाद तब और प्रासंगिक हो जाता है, जब सांप्रदायिक सद्भावना बनाए रखने के लिए गाँधीजी सभी धर्मों के प्रति समान आदर भाव रखने को कहते हैं। आज भी भारत में सांप्रदायिक तनाव के शमन के प्रभावी उपाय के रूप में सर्वधर्म प्रार्थना सभा एवं प्रभात फेरी जैसी गाँधीवादी तकनीक का प्रयोग सामान्य सी बात है। गाँधीवाद, अहिंसा और सत्याग्रह पर टिका है जो चार उप सिद्धांतों – सत्य, प्रेम, अनुशासन एवं न्याय पर आधारित है, जिनकी उपादेयता एवं प्रासंगिकता, वैश्वीकरण के वर्तमान हिंसक दौर में और बढ़ जाती है। इसी कारण, संयुक्त राष्ट्र संघ ने गाँधीजी की जन्मतिथि अर्थात 2 अक्टूबर को ''विश्व अहिंसा दिवस'' के रूप में स्वीकार कर मान्यता प्रदान की है। अनैतिकता के फैलने से, समाज में चोरी, हत्या, भय, हिंसा, बलात्कार, गरीबी, शोषण, कामचोरी, धार्मिक एवं जातिगत विद्वेष, आदि आज समाज में अपनी जड़ें जमा चुके हैं।

ये उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू थे। लेकिन सबसे बढ़कर बात यह है कि गाँधीजी समग्र जीवन के व्यवहर्ता थे। उनके लिए समूचा जीवन एक इकाई था। राज्य, समाज, अर्थ, परिवार, शिक्षा ये सब उस इकाई के विभिन्न अंग थे।

गाँधीजी विश्व इतिहास में अहिंसा के सबसे बड़े शिक्षक और प्रचारक हुए हैं। राजनीति में तो विकार आने की गुंजाइश भी रहती है क्योंकि वह सत्ता का खेल है। परंतु अब तो जीवन के हर क्षेत्र में ईमानदारी एवं सत्यता का लोप हो रहा है और भ्रष्टाचार की जड़ें गहरी होती जा रही हैं। जो नैतिकता गाँधीजी के लिए आचरण का एक गुण थी, वह अब दिखावे की वस्तु और मुखौटा मात्र बन चुकी है। झूठ बोलना, छल करना, रिश्वतखोरी, मिलावट, भ्रष्टाचार, अनाचार जैसी प्रवृत्तियां सामान्य जीवन का अंग बन गई हैं।

गाँधीजी अहिंसा को सत्य का और सत्य को अहिंसा का पूरक मानते थे। उनके अनुसार, एक के अभाव में दूसरे की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। उनका कहना था कि अहिंसा केवल कर्म द्वारा ही सम्पादित नहीं होती, अपितु इसका संबंध वाणी और विचारों से भी है।

यात्रा संस्मरण

आर.एस. पटवाल

मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह जहाँ भी निवास करता है वहाँ पर अपने लिए और भावी पीढ़ी के लिए सर्वश्रेष्ठ चीजें निर्माण करने का प्रयास करता है। मानव जिज्ञासु प्रवृत्ति का होने के कारण, उसके मन में अपने देश और विदेश को जानने, समझने एवं घूमने की इच्छा बलवती होती रहती है। मन में जिज्ञासा की लहरें उठती रहती हैं कि फलां प्रदेश या देश में किस प्रकार के लोग होंगे, उनकी बोली–भाषा कैसी होगी, उनका आहार–विचार कैसे होंगे, वहाँ पर क्या–क्या चीजें देखने को मिलेंगी, वहाँ पर मौसम कैसा होगा, आदि आदि।

मेरी विदेश भ्रमण की योजना गत वर्ष वीजा किन्हीं कारणों से न मिलने से असफल रही। कंबोडिया और वियतनाम घूमने की योजना बनी। 4–5 माह पूर्व ही हवाई जहाज की टिकटें तथा गंतव्य स्थलों पर होटल की बुकिंग भी कर ली गई। इसके पश्चात ई–वीजा के संबंध में आवेदन कर दिया गया। इसके साथ–साथ संबंधित देशों के भिन्न–भिन्न राज्यों के मौसम के अनुकूल वस्त्रादि की खरीदारी भी कर ली गई। इसके अलावा, परिवार के सभी सदस्यों की पर्याप्त संख्या में फोटो की प्रतियां भी तैयार करवा ली गईं। परिवार के सेवारत सदस्यों ने अपने कार्यालयों को इस भ्रमण के बारे में समय पर सूचित करते हुए अनुमति लेने के साथ ही यथासमय छुट्टी के लिए आवेदन भी कर लिया।

प्रस्थान से एक–दो सप्ताह पूर्व विदेश भ्रमण के लिए पैकिंग करने का काम शुरू किया गया। इसमें परिवार के सभी सदस्यों का ध्यान लोकेश एवं प्रिया ने रखा। उन्होंने सामान की सूची बनानी शुरू की और सभी से उन्हें एक स्थान पर इकट्ठा करने का अनुरोध किया। जो सामान उपलब्ध न होता उसे तुरंत ही खरीद लिया जाता और उसे संबंधित सदस्य को सौंप दिया जाता। हमें विमान में 40 किलो लगेज़ ले जाने की अनुमति थी इसलिए लगभग 20–20 किलो के दो बड़े लगेज बैग वजन कर तैयार किए गए। शेष 4 हैंड बैग 7 किलो से कम वजन के तैयार किए गए ताकि उन्हें विमान के अंदर ले जाया जा सके। हमें रविवार 7 जनवरी को रात्रि 11 बजे एयर एशिया की फ्लाइट टर्मिनल–3 'इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे' से लेनी थी।

रविवार संध्या को मैंने पूजा–अर्चना की और ईश्वर से सुखद एवं सुरक्षित यात्रा की प्रार्थना की। तत्पश्चात, पहले से तैयार सामान के बैग निकालकर एक स्थान पर रखे। पासपोर्ट आदि का फोल्डर चैक कर एक चिह्नित बैग में रखा। चूँकि द्वारका सेक्टर–12 से हवाई अड्डा मेट्रो रेल से जुड़ा होने के साथ ही निर्बाध मार्ग और निकट है, अतः यह निर्णय लिया गया कि हवाई अड्डे तक का सफर टैक्सी के बजाए मेट्रो रेल से किया जाए। हम एयरपोर्ट मेट्रो से अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा टर्मिनल–3 पर लगभग 9 बजे पहुँच गए। यह मेरी प्रथम विदेश यात्रा थी। अतः मैं उत्साहित और थोड़ा बेचैन भी था।

जल्दी–जल्दी एयर एशिया के काउंटर पर गए और वहाँ से सामान का वजन करवाकर बोर्डिंग पास लेकर आव्रजन काउंटर की तरफ बढ़े। वहाँ पर लोगों की लंबी कतारें दिखाई दे रही थीं। आव्रजन फॉर्म भरकर हम सभी एक पंक्ति में खड़े हो गए।

पंक्ति में 35–40 लोग थे जिससे काउंटर तक पहुंचने में काफी समय लग गया। आवश्यक जांच के पश्चात एवं पासपोर्ट पर आव्रजन अधिकारी द्वारा प्रविष्टि दर्ज करने के पश्चात हम प्रस्थान लाउंज की तरफ बढ़े। इस बीच थॉमस कुक के काउंटर पर भारतीय मुद्रा को यूएस डॉलर में बदलवाने के लिए रुके, जहाँ पर औपचारिकताएं पूर्ण करने में समय लग गया। इतने में एयर एशिया का कर्मचारी वहाँ पर आकर जल्दी पहुंचने के लिए कहने लगा। खैर, सभी दौड़कर प्रस्थान लाउंज की ओर बढ़े। कुछ ही क्षणों बाद हम सभी विमान के अंदर पहुंचकर सामान केबिन में रखकर अपनी–अपनी सीटों पर बैठ गए। मैंने ईश्वर का समय पर सकुशल विमान में सवार होने के लिए धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया और आगे की सुखद यात्रा के लिए प्रार्थना की।

शीघ्र ही विमान संबंधी उद्घोषणा होने लगी और विमान परिचारिकाएं सुरक्षा निर्देश घोषणा के साथ–साथ संकेत से बताने लगीं। तत्पश्चात विमान पट्टी पर विमान धीरे–धीरे आगे बढ़ने लगा

और फिर गति पकड़ने के साथ एकदम से ऊपर की ओर बढ़कर उड़ान भरने लगा। ऊपर से दृश्य बहुत ही मनोहारी था। हवाई अड्डे के आसपास का इलाका बिजली की रोशनी में चमचमा रहा था। सड़कों पर वाहन खिलौनों की तरह लग रहे थे। हमारा गंतव्य स्थान मलेशिया था जहाँ की यात्रा लगभग 6 घंटे की थी। वहाँ से हमें हनोई, वियतनाम के लिए और फिर हनोई से कंबोडिया के सिएम रीप शहर के लिए कनेक्टिंग फ्लाइट पकड़नी थी। रात का समय होने के कारण खिड़की से विभिन्न शहरों की रोशनियां जगमग करती दिख रही थीं। बीच–बीच में उनींदी आखें नींद से बोझिल होकर बंद हो जातीं और दिमाग स्वप्नों में विचरण करने लगता।

इसी दौरान पायलट की ओर से अचानक सुखद घोषणा हुई कि हम लोग कुछ ही समय बाद मलेशिया अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर लैंड करने वाले हैं, इसलिए सभी यात्री अपनी विमान पेटी बांध लें और सीट सीधी कर लें। साथ ही खिड़की पर से विंडो शेड खुला रखने के लिए कहा गया। विमान सकुशल एयर एशिया के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतर गया। उस समय सुबह के 7 बजे थे। कुछ समय पश्चात, हम फिर से आव्रजन काउंटर पर पहुँचे। फिर से लंबी लाइनें और अधिकारी हर किसी के पासपोर्ट की जांच कर रहे थे और कुछ सामान्य प्रश्न पूछ रहे थे।

यहाँ पर हमारा लगेज कनेक्टिंग फ्लाइट में स्वमेव ही स्थानांतरित कर दिया जाना था। औपचारिकताएं पूर्ण कर हमने नाश्ता किया निर्धारित समय पर प्रस्थान लाउंज की ओर गेट की तरफ बढ़े और फ्लाइट की स्थिति स्क्रीन पर देखी तो पता चला कि उड़ान में विलंब है। लगभग एक घंटे बाद विमान में प्रवेश के लिए घोषणा हुई। इस प्रकार फ्लाइट में लगभग डेढ घंटे की देरी हुई। हम एक बजे हनोई एयरपोर्ट पहुँचे। वहाँ पहुँच कर हमने आव्रजन अधिकारी को बताया कि हमारी 2 बजे की फ्लाइट है पिछली फ्लाइट डेढ घंटे देरी से थी। तत्काल संबंधित अधिकारी ने बिन बारी के हमारे पासपोर्ट और कागजात जांच कर वीजा फीस लेकर हमें वीजा जारी किया और अविलंब निर्धारित गेट पर जाने के लिए निर्देशित किया। हम ईश्वर का धन्यवाद करते हुए प्रस्थान लाउंज के निर्धारित गेट पर पहुंचे। हम भी अपने कागजात जांच करवाकर वायुयान में प्रवेश कर अपनी सीटों पर बैठ गए। लगभग सवा घंटे में हम सिएम रीप एयरपोर्ट पर थे।

एयरपोर्ट से होटल की कार द्वारा हम लोग 20–25 मिनट में होटल पहुँच गए। वहाँ हमारा स्वागत स्थानीय पेय से हुआ। मौसम हल्का गर्म लगभग 30 डिग्री तापमान का था। स्वागत काउंटर पर औपचारिकताएं पूर्ण कर हमें भूतल पर ही दो अलग–अलग कमरे दिए गए। कमरों के सामने ही स्वीमिंग पूल और डायनिंग हाल था। कमरों में बांस से बनी चटाई और पेंटिंग एवं वाल हैंगिंग कमरे को एक अलग सजावट दे रहे थे। कमरों में सामान व्यवस्थित करने के पश्चात हमने कमरे में ही ब्रेड–मक्खन आदि कॉफी के साथ लिया। इसके पश्चात, अगले दिन भ्रमण के लिए स्वागत काउंटर पर वाहन की व्यवस्था करने के लिए बता दिया। शाम को हम लोग बाजार से पिज्जा और नूडल्स लाए और एक साथ बैठकर भोजन किया। तत्पश्चात, कुछ ही देर में सभी थके होने के कारण अपने कमरों में सोने चले गए।

अगले दिन चालक समय पर होटल पहुँच गया और हम भ्रमण के लिए चल पड़े। वहाँ पर टैक्सी के अलावा, पर्यटक छोटी दूरी के लिए ई–रिक्शा भी किराए पर लेते हैं जिसे स्थानीय भाषा में ''टुकटुक'' कहते हैं। सर्वप्रथम दर्शनीय स्थलों के लिए एक कॉमन प्रवेश टिकट खरीदा जो तीन दिन के लिए वैध था। तीन दिन सिएम रीप में विभिन्न मंदिरों में भ्रमण किया। वास्तव में यह शहर मंदिरों का शहर है। परंतु अधिकांश मंदिर युद्ध की विभीषिका में जीर्ण–शीर्ण अवस्था में थे। जो अवशेष थे उन्हें देखकर लगता था कि अपने समय में ये वास्तुकला के उत्कृष्ट नमूने रहे होंगे। कुछ मंदिरों का जीर्णोधार भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के सहयोग से किया जा रहा था। गौतम बुद्ध की विभिन्न अवस्थाओं की प्रतिमाएं अलग–अलग स्थानों पर देखने को मिलीं। कुछ मंदिरों में गौतम बुद्ध के जीवन को प्रतिमाओं के माध्यम से चित्रण किया गया है।

भ्रमण किए गए मंदिरों में प्रथम ''बेयोन मंदिर'' विशालकाय मूर्तियों के लिए आज भी जाना जाता है जो इसके सैंतीस टॉवरों को सुशोभित करते हैं। बेयोन जयवर्मन सप्तम 13वीं शताब्दी के अंत में एक शक्तिशाली शासक का राज्य मंदिर था। मंदिर अंगकोर थॉम के केंद्र में स्थित है व दीवारों से घिरा शहर है जो खमेर साम्राज्य की राजधानी था। शहर की दीवारें खमेर मंदिरों में आमतौर पर पाए जाने वाले बाड़े की दीवारों के लिए प्रतिस्थापित की जाती हैं। मंदिर की योजना एक 'यन्त्र' पर आधारित है, जो कि तांत्रिक बौद्धों द्वारा प्रयुक्त एक प्रतीक है। इसके केंद्रीय तीर्थस्थल में जयवर्मन सप्तम की एक छवि थी, जो शायद बुद्ध के नाम पर खुद को एक देव–राजा के रूप में मानते थे।

द्वितीय, ''बैंतेय स्नेई'' या ''बैंटेई स्रे'' एक 10वीं शताब्दी का कंबोडियन मंदिर है जो भगवान शिव को समर्पित है। अंगकोर के क्षेत्र में स्थित, यह मंदिरों के मुख्य समूह से 25 किमी उत्तर–पूर्व में नोम देई की पहाड़ी के पास स्थित है। इस एकमात्र प्रमुख मंदिर का निर्माण किसी राजा द्वारा न करके इसे विष्णुकुमार और यज्ञवारा नामक दरबारियों द्वारा निर्मित किया गया था। मूल रूप से, मंदिर ईश्वरापुरा नामक एक शहर से घिरा हुआ था। बैंतेय स्नेई को अपनी बेहतरीन नक्काशी के लिए जाना जाता है। अनुमान है कि मंदिर का आधुनिक नाम, बैतेय स्नेई, लाल बलुआ पत्थर की दीवारों में देवताओं की नक्काशी के कारण है।

तृतीय, ''बैंतेय समरे'' विशिष्ट अंगकोर वाट–शैली की वास्तुकला और कला को प्रदर्शित करने वाला एक बड़ा, तुलनात्मक रूप से सपाट मंदिर है। टावरों की शैली और बालुस्ट्रैड्स अंगकोर वाट के टावरों से अधिक समानता रखते हैं। मंदिर का नाम खमेर से संबंधित एक प्राचीन इंडोचाइनीज जनजाति समरे के नाम पर रखा गया है। बैंतेय, गढ़ के लिए एक खमेर शब्द है। इतिहासकारों में आम तौर पर सहमति है कि यह अंगकोर वाट के समय ही बनाया गया होगा क्योंकि वास्तुकला उसी काल की है। इसकी अधिकतर नक्काशियां उत्कृष्ट स्थिति में हैं। इस सदी में पुरातत्वविदों द्वारा व्यापक पुनर्स्थापना की गई।

चतुर्थ, ''ता प्रोहम'' एक बौद्ध मंदिर है जिसका निर्माण 1186 से हुआ और यह मूल रूप से राजविहार (राजा का मठ) के रूप में जाना जाता है। यह अंगकोर क्षेत्र के कुछ मंदिरों में से एक है जिसमें पत्थर पर एक संस्कृत शिलालेख, मंदिर के आश्रितों और निवासियों के बारे में जानकारी देता है। ता प्रोहम टॉवर, बंद प्रांगण और संकीर्ण गलियारों का मंदिर है। गलियारों में पेड़ों की जड़ों से उखाड़े गए नाजुक नक्काशीदार पत्थरों के ढेर लगे होने के कारण उनमें जाना संभव नहीं है। दीवारों पर काई और रेंगने वाले पौधे जमें हुए हैं और स्मारकीय पोर्च की छतों से झाड़ियाँ उग आई हैं। केंद्रीय बाड़े के सबसे पूर्वी गोपुर (प्रवेश द्वार मंडप) के अंदर गला घोंटने वाली कई जड़ संरचनाओं में सबसे लोकप्रिय 'क्रोकोडाइल ट्री' है। वर्तमान में, ता प्रोहम में भारतीय सर्वेक्षण विभाग के पुरातत्त्वविदों की एक टीम अपने कंबोडियाई समकक्षों के साथ उसकी मरम्मत और पूर्व आकार में लाने के लिए काम कर रही।

पांचवा, ''प्री रूप'' राजा राजेंद्र वर्मन द्वितीय का राज्य मंदिर था। यह एक पर्वत मंदिर है जिसका निर्माण वर्ष 961 में हुआ था। पूरी तरह जंगल से दबे और मिट्टी से ढके मंदिर का उत्खनन 1930 के दौरान फ्रांसीसी संरक्षकों द्वारा किया गया था। इसकी स्थापत्य शैली पहले के पूर्वी मेबॉन से बहुत मिलती–जुलती है । मंदिर के एक शिलालेख में उल्लेख किया गया है कि पांचों प्रांग शिव (केंद्रीय टॉवर और आसपास के टावरों में से एक), विष्णु, पार्वती और लक्ष्मी को समर्पित थे। मंदिर खाइयों से घिरा हुआ है। दो बाड़े हैं, जिनमें से प्रत्येक के केंद्र में एक गोपुर प्रवेश द्वार है। प्री रूप मंदिर की मुख्य विशेषता पूर्वी प्रवेश द्वार के दोनों ओर तीन बड़े टॉवर हैं, जो मंदिर का मुख्य द्वार है।

तीसरे दिन और अंतिम दिन ''अंगकोर वाट'' के भ्रमण के लिए निकले। यह कंबोडिया में एक मंदिर परिसर है, जिसे राजा सूर्यवर्मन द्वितीय ने 12वीं शताब्दी की शुरुआत में अपने राज्य के मंदिर और राजधानी शहर के रूप में बनवाया था। यहां पर सबसे अधिक संरक्षित मंदिर के रूप में, यह एकमात्र महत्त्वपूर्ण धार्मिक केंद्र बना हुआ है – पहले हिंदू, भगवान विष्णु, फिर बौद्ध को समर्पित। यह दुनिया की सबसे बड़ी धार्मिक इमारत है। यह कंबोडिया का प्रतीक बन गया है, जो अपने राष्ट्रीय ध्वज पर दिखाई देता है। ''अंगकोर वाट मंदिर'', खमेर मंदिर वास्तुकला की दो बुनियादी योजनाओं को जोड़ता है, जो प्रारंभिक भारतीय हिंदू वास्तुकला पर आधारित है। एक खंदक और एक बाहरी दीवार के साथ 3.6 किलोमीटर (2.2 मील) लंबी तीन आयताकार दीर्घाएं हैं, प्रत्येक को अगले से ऊपर उठाया गया है। मंदिर के केंद्र में मीनारों का एक समूह है। इसकी व्यापक नक्काशी है और कई देवता (संरक्षक आत्माएं) इसकी दीवारों को सुशोभित करते हैं।

आधुनिक नाम, अंगकोर वाट का अर्थ है 'सिटी टेम्पल'। वाट मंदिर के लिए खमेर शब्द है। मंदिर का प्रारंभिक डिजाइन और निर्माण 12वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुआ। विष्णु को समर्पित, इसे राजा के राज्य मंदिर और राजधानी शहर के रूप में बनाया गया था। 13वीं शताब्दी के अंत में, अंगकोर वाट धीरे–धीरे हिंदू से थेरवाद बौद्ध उपयोग के लिए चला गया, जो आज भी जारी है। अंगकोर वाट अंगकोर मंदिरों में असाधारण है।

अंगकोर वाट के वास्तविक इतिहास को पूरे अंगकोर स्थल पर किए गए बाद के सफाई और जीर्णोद्धार कार्य के दौरान संचित शैलीगत और उत्कीर्ण साक्ष्यों से ही जोड़ा गया था। यहां प्राचीन स्थलों पर पाए जाने वाले सामान नहीं मिले हैं बल्कि स्मारकों के साक्ष्य मिले हैं। अंगकोर वाट खमेर वास्तुकला की शास्त्रीय शैली का प्रमुख उदाहरण है। अधिकांश दृश्य क्षेत्र बलुआ पत्थर के ब्लॉक के हैं, जबकि लेटराइट का उपयोग बाहरी दीवार और छिपे हुए संरचनात्मक भागों के लिए किया गया है। मंदिर 1992 में स्थापित अंगकोर वर्ल्ड हेरिटेज साइट का हिस्सा है, जिसने कुछ फंडिंग

प्रदान की है और इस साइट की सुरक्षा के लिए कंबोडिया सरकार को प्रोत्साहित किया है। जर्मन 'अप्सरा संरक्षण परियोजना (जीएसीपी)' मंदिरों को नुकसान से बचाने वाले देवता और अन्य बेस–रिलीफ की रक्षा के लिए काम कर रही है। संगठन के सर्वेक्षण में पाया गया कि लगभग 20 प्रतिशत देवता बहुत खराब स्थिति में थे। पर्यटन ने यहां रखरखाव कार्य के लिए कुछ अतिरिक्त धनराशि प्रदान की है।

इस मंदिर के भ्रमण एवं मार्गदर्शन के लिए हमने 'री' नामक गाइड को 20 डॉलर के भुगतान पर लिया था। वह काफी हंसमुख और बातूनी था। जब उससे 'री' का अर्थ पूछा तो उसने बताया 'शोर करने वाला कीट' तो उसके साथ हम सभी भी हँस पड़े। उसके साथ हमने मंदिर के सामने ग्रुप फोटो भी यादगार के तौर पर लिया। विभिन्न मंदिर स्थलों में भ्रमण के दौरान मैंने पाया कि कोई भी स्त्री–पुरूष या बच्चा भीख मांगता दिखाई नहीं दिया। यहां तक कि मंदिर परिसरों के आस–पास सामान बेचने के लिए पीछे–पीछे सामान बेचने वाले भी आते नहीं दिखाई दिए जबकि वहाँ पर ज्यादातर विदेशी पर्यटक ही थे। यह एक सुखद अनुभव था। अंगकोर वाट के भ्रमण के पश्चात हम थोड़ा थक गए थे अतः सिएम रीप के वैभवशाली मंदिरों की याद संजोए हम वापिस होटल जाने के लिए कार में बैठ गए। हमें कल होटल से प्रस्थान कर दोपहर दो बजे अपने नए गंतव्य हनोई के लिए फ्लाइट भी लेनी थी।

....शेष अगले अंक में

कंबोडिया का विश्व प्रसिद्ध मन्दिर 'अंगकोर वाट' के समक्ष लेखक अपने परिवार के साथ

एक परी की कहानी

दीपक यादव
छात्र एमबीए(आईबी)
2016-19

एक दास्ताँ सुनाता हूँ, एक परी की कहानी बताता हूँ,
जब लिया उस परी ने जन्म, आँगन में किलकारियां खिल गईं,
मानो उस माँ को, दुनिया की सारी खुशियाँ मिल गईं,
गोद में जब वो, पहली बार माँ कहकर मुस्कुराई,
खुशी से माँ की, आँखें भर आईं।

जब नन्हें हाथों से, परी ने माँ की थामी कलाई,
तब माँ उसे अपने सीने से लगाई,
रोते–रोते माँ ने कहा, परी कभी तुम दूर न जाना,
हरदम मुझे अपने पास ही पाना।

पर तकदीर को, ये मंजूर न था,
भारत माँ को अपने सपूतों पे, इतना गुरूर भी न था,
कुछ भेड़िये घूम रहे थे, शराब के नशे में झूम रहे थे,
उस परी के सपने टूट गए,
जब दरिंदे उसकी इज्जत लूट गए।

रोई, चिल्लाई, दर्द से भी कराही,
फिर भी उन जालिमों को, रहम क्यों न आई,
क्या दिल न था उनका, क्या माँ न थी उनकी,
क्यों इस बार किसी कृष्ण ने,
इस द्रोपदी की लाज न बचाई।

इन मोमबत्तियों और पोस्टरों में, नहीं मुझे जीना है,
किसी की दया की, नहीं भीख लेना है,
मैं तो निर्भया हूँ, निर्भय बनकर ही जियूँगी,
चिंगारी नहीं शोला बनकर, दिलों में रहूंगी,
जला दूंगी उनको माँ, जिन्होंने सब कुछ छीना है।

जाते–जाते माँ, बस तुझसे यह कहना है,
माँ मुझे और जीना है, माँ मुझे और जीना है,
फिर से परियों की कहानी सुनना है,
तेरे आँचल में मुझे सोना है,
माँ! मेरी रूह तो तेरे साथ ही है,
उन दरिंदों ने तो बस शरीर छीना है।

राधा बोली

अतुल कुमार

वसंत ऋतु की मधुर बेला और प्रेम का गहरा संबंध है। यदि इसका परिप्रेक्ष्य भारतवर्ष हो तो राधा–कृष्ण के मिलन का क्षण ही इसका पूर्ण पर्याय हो सकता है। प्रेमियों के युगातीत आदर्श राधा– कृष्ण सदियों से प्रेम एवं अनुराग का अनूठा उदाहरण बनकर हमारी संस्कृति की गाथा यात्रा का अभिन्न अंग रहे हैं। उनके द्वारा प्रस्तुत प्रेम, केवल प्रेम न होकर एक अद्‌भुत किस्म की भक्ति एवं भाव भरे स्नेहिल संबंध को दर्शाता है जो अनुसरणीय एवं अनुकरणीय है। उनके इसी अद्‌भुत अनुराग की झलक नीचे प्रस्तुत पंक्तियों में दर्शाई गई है:

प्रेम के झकोरों में झूमते हुए डोली,
कान्हा की बंसी ले छीन राधिका बोली।

प्रीत की नगरी के बनते जो वासी हो,
नैनों की भाषा के अद्‌भुत अभ्यासी हो,
ऐसी विचित्र रीत किसने सिखाई है,
राधा को त्याग अधर मुरली लगाई है,
जाओ रूठ गए हम, न बात करो हमसे,
अब की बरस न खेलेंगे होली तुमसे।

मोहन की आँखों में बिजली सी चमकी है,
राधा ने दे डाली कैसी ये धमकी है,
हम ने तो बरस भर इसी में बिताया है,
सदियों के बाद लगे फागुन अब आया है,
राधा न मानी तो रंग अर्थहीन हैं,
कितने दिवस पूर्व राखी साज के टोली है।

कमल, मोरपंख और मोती की माला,
कान्हा ने सभी कुछ अर्पण कर डाला,
राधा जो रूठी हों तब तो वे मानें,
किन्तु यह भेद भला कान्हा क्या जानें,
प्रेम में रिक्तकोष त्रिभुवन के स्वामी,
नटवर से कर रही राधा ठिठोली।

लाख किये जतन पर राधा न मानी,
गिरिधर भी भर लाये आँखों में पानी,
नागर की लीला से प्रेमघन बरस दिए,
राधा ने रोका पर अधर उनके हँस दिए,
बोलती न दिखीं पर साँसों से राधा ने,
कान्हा के कानों में मिसरी सी घोली।

नयनों से नयन मिले हाथों में हाथ हैं,
ज्यों चन्द्र ने चकोर का पाया साथ है,
बंसी की तान छिड़ी हृदय–पुष्प खिल गए,
राधा और कान्हा एक–दूसरे में मिल गए,
खींच कर कलाई अपने उर से लगाया
हुए एक दोनों ज्यों चन्दन और रोली।

प्रेम के झकोरों में झूमते हुए डोली,
कान्हा की बंसी ले छीन राधिका बोली।

मरना तो पड़ेगा

राम सिंह मीना

बहुत दिनों तक चकमा देने के बाद आज मौत ने पकड़ लिया।
इतने दिन तक प्राणी कैसे बचे, मौत ने पूछ लिया।।

मैंने कहा, चलता रहा, तू पीछे–पीछे आती रही, मै आगे–आगे चलता रहा।
मेरे और मौत तेरे बीच, हमेशा मेरा परम् कर्तव्य आता रहा।।

ऐ मौत! मेरे ज्ञान अर्जन ने तुम्हें पंगु बना दिया।
और कुशलता ने मेरा जीना आसान कर दिया।।

मैं अपनी जिम्मेदारी निभाता रहा।
माँता–पिता, बड़े–बूढ़ों का, लम्बी उम्र का आशीष पाता रहा।।

मैं सीना तान कर चलता रहा, उदयमान सपनों को बुनता रहा।
सृष्टि के सृजन में, खून पसीना बहाता रहा।।

ऐ मौत! तू कई बार मेरी ओर लपकी, मगर कभी दुआ, कभी दिल बीच में आता रहा।
और मैं मजबूती से, बहादुरी से, न्याय पथ पर चलता रहा, बढ़ता रहा।।

काम पूरे हो गए, अरमान पूरे करने चला हूँ।
अब मैं तुझ से डरता नहीं मौत, जंग के लिए मैदान में खड़ा हूँ।।

अब नहीं रहे लम्बी उम्र का आशीष देने वाले।
अब नहीं रहे मेरे अजीज, दिल से चाहने वाले।।

अब नहीं रहा हड्डियों में तूफान उठाने का दम।
अब नहीं रहा थाली से निवाला उठाने का श्रम।।

रह गए हैं थोथे अरमान, पूरे नहीं होने वाले।
ऐ मौत महबूबा तू आ, इस राजा को गले लगा ले।।

पैदा हुआ उसी दिन तय था, मरना तो पड़ेगा।
जिंदगी की जंग हार गया हूँ, जाना तो पड़ेगा।।

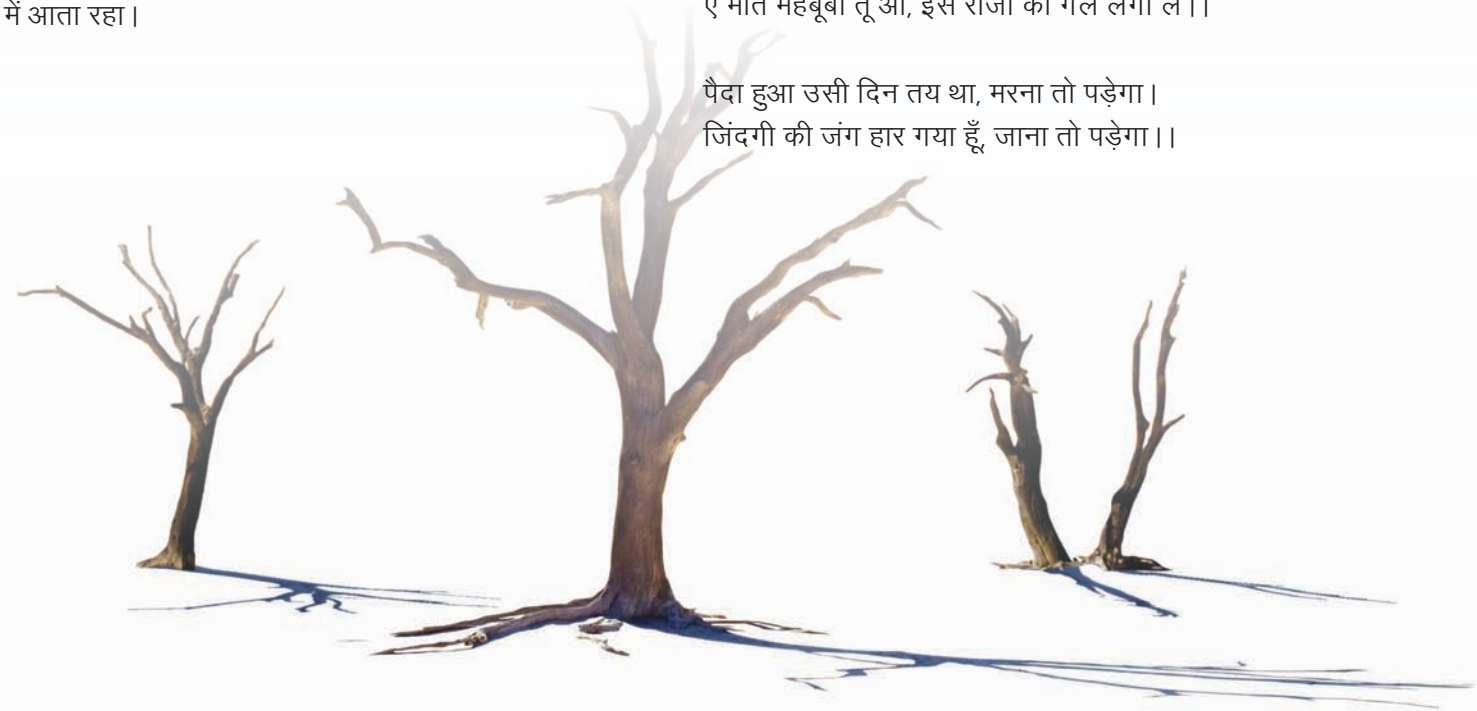

जीने की कला

संजय गाँधी

यह एक बहुत पुरानी बात है। किसी प्रदेश में एक राजा राज्य करता था। वह बात–बात पर फाँसी की सजा का हुक्म दिया करता था। राजा के इस व्यवहार से लोग बहुत परेशान थे और उसके नाम से भयभीत रहते थे। लेकिन उस राजा की एक विशेषता भी थी कि वह मरने वाले की अंतिम इच्छा को जरूर पूरा करता था।

एक बार उसके एक मंत्री से राज–काज के दौरान कोई गलती हो गई। इस गलती पर राजा ने उसे फाँसी पर लटकाने का हुक्म दे दिया। मंत्री के घरवालों को जब इस सजा का पता चला तो उनके घर में मातम छा गया। जब फाँसी का दिन नजदीक आ गया तो राजा ने मंत्री से पूछा कि उसकी अंतिम इच्छा क्या है? तब मंत्री ने कहा, ''महाराज, मुझे एक वर्ष के लिए आप अपना घोड़ा दे दीजिए।''

राजा को इस बात पर बहुत गुस्सा आया। उसने कहा कि तुम्हें अभी फाँसी पर लटकाना है और तुम हो कि एक वर्ष के लिए मेरा घोड़ा मांग रहे हो। इस पर मंत्री बोला, ''महाराज, मेरे पास एक ऐसी अनोखी कला है जिसके सहारे मैं घोड़े को 'उड़ने वाला घोड़ा' बना सकता हूँ, लेकिन मैं मर गया तो यह गुप्त कला भी मेरे साथ ही समाप्त हो जाएगी।'' तब राजा ने सोचा कि सिर्फ एक वर्ष की ही तो बात है, यदि घोड़ा उड़ने लगा तो मुझे काफी प्रसिद्धि मिलेगी और नहीं उड़ा तो सजा तो बरकरार है ही। राजा ने मंत्री की बात मान कर उसे एक वर्ष का समय दे दिया।

जब मंत्री घर पहुंचा तो उसके परिवार वाले उसे जीवित देख कर अत्यंत प्रसन्न एवं आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने उसके जीवित होने के चमत्कार की जानकारी मांगी। इस पर मंत्री ने दरबार में घटित हुए पूरे घटनाक्रम का ब्योरा प्रस्तुत किया। तत्पश्चात कहा कि ''एक वर्ष एक लंबी अवधि होती है, इतना लंबा समय किसने देखा है – 'हो सकता है कि घोड़ा मर जाए' या 'हो सकता है कि राजा अपना पूरा राज–पाट ही किसी अन्य राजा से हार जाए।'

उक्त कहानी के संदर्भ में शिक्षा:

''जो आज है, उसे जियो'', जीने की कला का सबसे बड़ा रहस्य यही है।

संस्थान में राजभाषा हिंदी

संस्थान में राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार दिन–प्रतिदिन उन्नयनता की ओर अग्रसर है। राजभाषा हिंदी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए संस्थान को समय–समय पर माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रदान किए गए **''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार''** इसका प्रमाण हैं। संस्थान में कार्यालयीन कामकाज के साथ–साथ शिक्षण एवं प्रशिक्षण में भी हिंदी की उपयोगिता को बढ़ावा दिया गया है। संस्थान संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति पूरी तरह सचेत एवं कटिबद्ध है। वर्ष 2018–19 के दौरान हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित किए गए कार्यों का विवरण निम्न प्रकार हैः–

1. **राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) का अनुपालन** – राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत दर्शाए गए सभी कागजात अर्थात कार्यालय आदेश, परिपत्र, कार्यालय ज्ञापन, अधिसूचनाएं, संविदाएं, करार, टेंडर के फार्म और नोटिस, नियम, दोनों सदनों में प्रस्तुत किए जाने वाले सभी सरकारी कागज व प्रशासनिक रिपोर्ट आदि द्विभाषी रूप में जारी की गईं।

2. **राजभाषा नियम, 1976 के नियम 11 का अनुपालन** – संस्थान के कोड, भर्ती नियम, संविधान, पुस्तकालय नियम व विनियम, अंशदायी भविष्य निधि नियम, सेवाओं की हस्तपुस्तिका, नागरिक प्राधिकार, परामर्श नियम, पुस्तकालय नियम व विनियम, आदि को समय–समय पर संशोधित करते हुए द्विभाषी रूप से संस्थान की वेबसाइट पर अपलोड किया गया।

   (क) सभी साइनेज, रबड़ की मोहरें, नामपट्ट, लोगो, सीलें, पत्र शीर्ष, विजिटिंग कार्ड आदि द्विभाषी रूप में उपयोग में लाए जाते हैं।

   (ख) संस्थान में कर्मचारियों द्वारा सभी प्रपत्र जैसे अवकाश आवेदन, चिकित्सा प्रतिपूर्ति बिल, यात्रा रियायत बिल, वाहन व्यय, ट्यूशन फीस प्रतिपूर्ति इत्यादि पूरी तरह द्विभाषी रूप में उपयोग में लाए गए।

   (ग) संस्थान में आयोजित होने वाले सभी शिक्षण व प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रवेश पत्रों तथा बैनर आदि को द्विभाषी रूप में तैयार किया गया।

3. **राजभाषा नियम, 1976 के नियम–5 का अनुपालन** – संस्थान के सभी अनुभागों/विभागों में प्राप्त हिंदी पत्रों का उत्तर पूर्ण रूप से हिंदी में ही दिया गया।

4. **पत्राचार की स्थिति** – संस्थान 'क' क्षेत्र में स्थित है, अतः "क" और "ख" क्षेत्र में अधिक से अधिक पत्राचार हिंदी/द्विभाषी रूप में किया गया। वर्ष के दौरान हिंदी पत्राचार की स्थिति लगभग वार्षिक कार्यक्रम 2018–19 के अनुरूप रही।

5. **संस्थान की द्विभाषी वेबसाइट** – संस्थान की वेबसाइट हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में है तथा अंग्रेजी वेबसाइट के साथ–साथ हिंदी वेबसाइट को समय–समय पर अद्यतन किया गया।

6. **शिक्षण कार्यक्रम** – संस्थान में शिक्षण–प्रशिक्षण के अंतर्गत कुल 33 प्रबंधन विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में विभिन्न सरकारी, सार्वजनिक, निजी संस्थाओं से आए अधिकारियों को हिंदी व अंग्रेजी की मिली–जुली भाषा के माध्यम से प्रबंधन व अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय पर सघन शिक्षण/प्रशिक्षण दिया गया।

7. **प्रशिक्षण कार्यक्रम** – कोलकाता केंद्र पर राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार को गति प्रदान करने को ध्यान में रखते हुए केंद्र से सहायक, श्री सुमित साहा को 22 अक्तूबर 2018 से 5 दिसम्बर 2018 के दौरान ''केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो'' द्वारा आयोजित ''अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम'' में भेजा गया। श्री सुमित साहा ने सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूरा करते हुए प्रमाण–पत्र प्राप्त किया।

श्री सुमित साहा, सहायक, कोलकाता केंद
''अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम'' का प्रमाण–पत्र प्राप्त करते हुए

8. **छमाही प्रोत्साहन योजना** – राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए प्रोत्साहन योजनाओं का प्रावधान किया गया है। वाणिज्य मंत्रालय के निर्देशानुसार संस्थान में छमाही प्रोत्साहन योजना लागू की गई है। इस योजना के अंतर्गत वर्ष 2018–19 के दौरान हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने वाले 7 कर्मचारियों को नकद पुरस्कार के रूप में प्रति कर्मचारी राशि ₹1000/– प्रदान की गई।

9. **वार्षिक प्रोत्साहन योजना** – राजकीय कार्यों में हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष के दौरान वार्षिक प्रोत्साहन योजना चलाई गई है जिसके अंतर्गत पूर्ण रूप से हिंदी में कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को नकद पुरस्कार के रूप में राशि ₹5000/– देने का प्रावधान किया गया है।

10. **नराकास की बैठक** – संस्थान **'क' क्षेत्र** में स्थित होने के कारण माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा गठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) का सदस्य कार्यालय है। संस्थान ने वर्ष के दौरान नराकास द्वारा समय–समय पर आयोजित सभी बैठकों में अपनी भागीदारी दर्ज की। वर्ष के दौरान नराकास सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भी संस्थान के कर्मचारियों ने भाग लिया।

नराकास की बैठक (30.05.2018)

11. **तिमाही बैठक** – वर्ष 2018–19 के दौरान राजभाषा नियमों के अनुपालनार्थ प्रत्येक तिमाही में निदेशक महोदय की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया। इन बैठकों के दौरान संस्थान में राजभाषा कार्यों की समीक्षा व प्रगामी प्रयोग संबंधी निर्णय लिए गए। बैठकों की तिथियां निम्न प्रकार हैं:–

तिमाही	आयोजन की तिथि
जनवरी–मार्च 2019	12 अप्रैल 2019
अक्तूबर–दिसम्बर 2018	15 जनवरी 2019
जुलाई–सितम्बर 2018	23 अक्तूबर 2018
अप्रैल–जून 2018	11 जुलाई 2018

तिमाही विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक (12.04.2019)

12. हिंदी कार्यशाला – संस्थान में हिंदी कार्यशालाओं का नियमित आयोजन किया गया। ये कार्यशालाएं अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित एवं प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से आयोजित की गईं। वर्ष 2018–19 में आयोजित हिंदी कार्यशालाओं की तिथियां इस प्रकार हैं:–

तिमाही	आयोजन की तिथि
जनवरी–मार्च 2019	28 मार्च 2019
अक्तूबर–दिसम्बर 2018	28 दिसम्बर 2018
जुलाई–सितम्बर 2018	4–5 सितम्बर 2018
अप्रैल–जून 2018	29 मई 2018

कोलकाता केंद्र पर तिमाही हिंदी कार्यशाला (18.03.2019)

28 मार्च 2019 को कोलकाता केंद्र द्वारा ''देवनागरी लिपि तथा इसका मानकीकरण व प्रतिदिन के कार्यों में हिंदी की उपयोगिता बढ़ाने के उपाय'' विषय पर तिमाही हिंदी कार्यशाला का आयोजन कराया गया। इस कार्यशाला में दिल्ली परिसर के सदस्यों ने भी वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से भाग लिया। उक्त विषय की जानकारी देने के लिए युनाईटेड बैंक ऑफ इंडिया से मुख्य प्रबंधक (सेवानिवृत्त) श्रीमती रीता भट्टाचार्यजी को आमंत्रित किया गया।

13. हिंदी में प्रकाशन – संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट वर्ष 2017–18 का हिंदी में प्रकाशन किया गया। हर वर्ष की भांति, हिंदी कक्ष द्वारा गृह–पत्रिका **'यज्ञ' अंक–11, वर्ष 2018** का प्रकाशन किया गया। पत्रिका में संस्थान की मुख्य गतिविधियां तथा राजभाषा नियमों के अतिरिक्त, आईआईएफटी परिवार अपने मन की बात कविता, कहानी, नाटक, निबंध, आदि के माध्यम से व्यक्त करता रहा है। इससे सृजनात्मकता को बढ़ावा मिलता है एवं विचारों का आदान–प्रदान होता है।

आज अंग्रेजी का प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए दक्षिण के
भाई-बहन जितना श्रम करते हैं,
उसका आठवाँ हिस्सा भी हिंदी सीखने में करें तो हिंदुस्तान
के बाकी दरवाजे जो उनके लिए बंद हैं,
खुल जाएँ और वे हमारे साथ इस तरह एक
हो जाएँ जैसे पहले कभी न थे।

– महात्मा गांधी

स्वागत

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) की रैंकिंग लगातार देश के शीर्ष बी–स्कूलों के बीच रही है। इस प्रकार, संस्थान अपने शिखर को बनाए रखने व समग्र रूप से इसकी उत्तरोत्तर उन्नति को ध्यान में रखते हुए समय–समय पर शिक्षण–प्रशिक्षण व अनुसंधान के क्षेत्र में विषय विशेष के विशेषज्ञों (संकाय सदस्यों) तथा प्रशासनिक कार्यों के लिए कर्मचारियों/अधिकारियों की भर्ती करता रहा है। इसी क्रम में, वर्ष 2018–19 के दौरान कोलकाता केंद्र सहित दिल्ली स्थित संस्थान में निम्न संकाय सदस्यों ने विभिन्न क्षेत्रों में अपना कार्यभार संभाला है:–

डॉ. पार्था सेन
प्रोफेसर – ईसीजीसी चेयर
अभिरुचि का क्षेत्र – अर्थशास्त्र

डॉ. कविता वाधवा
सहायक प्रोफेसर
अभिरुचि का क्षेत्र – वित्तीय प्रबंधन

डॉ. दिव्या टुटेजा
सहायक प्रोफेसर
अभिरुचि का क्षेत्र – वित्तीय बाजार

डॉ. अरूणिमा राना
सहायक प्रोफेसर
अभिरुचि का क्षेत्र – विपणन प्रबंधन

डॉ. प्रतीक माहेश्वरी
सहायक प्रोफेसर
अभिरुचि का क्षेत्र – विपणन प्रबंधन

डॉ. पापिया घोष
सहायक प्रोफेसर
अभिरुचि का क्षेत्र – कानून एवं अर्थशास्त्र

स्वागत

डॉ. ए.के. श्रुस्तिधर चंद
सहायक प्रोफेसर
अभिरुचि का क्षेत्र

डॉ. प्रियंका जायसवाल
सहायक प्रोफेसर
अभिरुचि का क्षेत्र – मानव संसाधन प्रबंधन एवं संगठनात्मक व्यवहार

डॉ. तुहीना मुखर्जी
सहायक प्रोफेसर
अभिरुचि का क्षेत्र – संगठनात्मक व्यवहार/मानव संसाधन प्रबंधन

आप सभी का संस्थान में

है

संस्थान में हिंदी सप्ताह

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता तथा उसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से संस्थान में 07 से 14 सितम्बर 2018 के दौरान ''हिंदी सप्ताह'' का आयोजन किया गया। हिंदी सप्ताह के दौरान हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने तथा प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं का निर्धारण संस्थान के अंतिम सदस्य की सहभागिता को ध्यान में रखते हुए किया गया। इस दौरान ''हिंदी निबंध लेखन'', ''हिंदी श्रुतलेखन'', ''प्रश्नोत्तरी'' तथा ''कथा–कहानीः कहो अपनी जुबानी'' प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। संस्थान के अधिकांश अधिकारियों व कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में अपनी सहभागिता दर्ज की।

''हिंदी दिवस'' के अवसर पर 14 सितम्बर 2018 को सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ हिंदी सप्ताह के समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के प्रमुख प्रोफेसर मनोज पंत, निदेशक ने हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में योगदान देने वाले सदस्यों के कार्यों को उजागर किया तथा भाषा के सरलीकरण पर बल देते हुए सभी स्तर के कर्मचारियों एवं अधिकारियों से हिंदी के काम–काज को बढ़ावा देने के लिए आह्वान किया। कार्यक्रम के अंत में निदेशक महोदय ने प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता सदस्यों को प्रमाण–पत्र व पुरस्कार राशि प्रदान करते हुए सम्मानित किया।

''हिंदी सप्ताह'' के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता सदस्य निम्न प्रकार हैं:–

क) हिंदी श्रुतलेखन प्रतियोगिता के प्रथम चार पुरस्कार विजेता		
आशिष त्रिपाठी	–	प्रथम पुरस्कार
दीपा पी.जी.	–	प्रथम पुरस्कार (हिंदीतर भाषी)
सीमा शर्मा	–	द्वितीय पुरस्कार
रश्मि	–	द्वितीय पुरस्कार
ख) हिंदी निबंध प्रतियोगिता के प्रथम चार पुरस्कार विजेता		
नीरू वर्मा	–	प्रथम पुरस्कार
करिश्मा खान	–	प्रथम पुरस्कार
दुष्यंत प्रताप	–	द्वितीय पुरस्कार
रंजन कुमार	–	द्वितीय पुरस्कार
ग) प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता		
शीलेश कुमार	–	प्रथम पुरस्कार
आशिष त्रिपाठी	–	द्वितीय पुरस्कार
डॉ. प्रीति टाक	–	तृतीय पुरस्कार

घ) कथा–कहानीः कहो अपनी जुबानी प्रतियोगिता के प्रथम चार विजेता

तनुश्री अरोड़ा	–	प्रथम पुरस्कार
एस. बालासुब्रामणियन	–	प्रथम पुरस्कार (हिंदीतर भाषी)
राकेश कुमार ओझा	–	द्वितीय पुरस्कार
सते सिंह	–	द्वितीय पुरस्कार

कोलकाता परिसर

संस्थान के कोलकाता केंद्र पर भी 12 से 14 सितम्बर 2018 की अवधि को ''हिंदी सप्ताह'' के रूप में मनाया गया। कोलकाता केंद्र ''ग'' क्षेत्र में स्थित होने के कारण अधिकांश कर्मचारी एवं अधिकारी हिंदीतर भाषी हैं, परंतु संविधान के नियम व विनियमों के अनुपालन के अंतर्गत संघ की राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार, के लिए कटिबद्ध हैं। हर वर्ष की भांति, हिंदी सप्ताह के दौरान केंद्र के सभी सदस्यों की अभिरूचि को ध्यान में रखते हुए अनेक हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं के विषय के रूप में ''हिंदी तात्क्षणिक भाषण'', ''हिंदी निबंध लेखन'', ''प्रश्नोत्तरी और ''हिंदी कविता पाठ'' का चयन किया गया। इन सभी प्रतियोगिताओं में संकाय सदस्यों सहित कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया और हिंदी सप्ताह के कार्यक्रमों के माध्यम से पूरे वातावरण को हिंदीमय बनाने का प्रयास किया गया।

14 सितम्बर 2018 को ''हिंदी दिवस'' के अवसर पर कोलकाता परिसर के प्रमुख डॉ. के. रंगराजन, प्रोफेसर की उपस्थिति में विधिवत ''हिंदी सप्ताह'' के समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रोफेसर डॉ. रंगराजन जी ने नराकास के सदस्य कार्यालय के रूप में कोलकाता केंद्र की गतिविधियों का उल्लेख किया। राजभाषा हिंदी के प्रति सभी सदस्यों की निष्ठा की सराहना की तथा प्रशासनिक कार्यों में हिंदी की अधिकाधिक उपयोगिता पर बल दिया। कार्यक्रम के अंत में हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता सदस्यों को प्रमाण–पत्र व पुरस्कार राशि प्रदान करते हुए प्रोत्साहित किया गया।

कोलकाता केंद्र पर हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएं व पुरस्कार विजेता निम्न प्रकार हैं:–

1) हिंदी तात्क्षणिक भाषण प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता		
अतुल कुमार	–	प्रथम पुरस्कार
रामकृष्ण दास	–	द्वितीय पुरस्कार
द्वैपायन आश	–	तृतीय पुरस्कार
2) हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता		
अतुल कुमार	–	प्रथम पुरस्कार
अनुष्का श्रीमानी	–	द्वितीय पुरस्कार
शाहिद अनवर	–	तृतीय पुरस्कार
3) प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता		
अयन कुमार सेठ	–	प्रथम पुरस्कार
डॉ. टी.पी. घोष	–	द्वितीय पुरस्कार
डॉ. आर.पी. शर्मा	–	तृतीय पुरस्कार
सुमना दास भट्टाचार्य	–	चतुर्थ पुरस्कार
4) कविता पाठ प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता		
डॉ. कविता वाधवा	–	प्रथम पुरस्कार
शिबु मंडल	–	द्वितीय पुरस्कार
श्राबनी मंडल	–	तृतीय पुरस्कार
उमामा नसरीन हक	–	चतुर्थ पुरस्कार

कोलकाता परिसर
हिन्दी हैं हम

हिन्दी पखवाड़ा
भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
कोलकाता परिसर

हिन्दी पखवाड़ा
दिनांक : 12 से 14 सितंबर
भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
कोलकाता परिसर
हिन्दी हैं हम

हिन्दी पखवाड़ा
दिनांक : 12 से 14 सितंबर
भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
कोलकाता परिसर
1583 मादुरदह, चौबागा रोड, वार्ड नंबर 108,
बरो XII कोलकाता 700107
हिन्दी हैं हम

दिनांक : 12 से 14 सितंबर
भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
कोलकाता परिसर
1583 मादुरदह, चौबागा रोड, वार्ड नंबर 108,
बरो XII कोलकाता 700107
हिन्दी हैं हम

सेवानिवृत्ति पर संस्थान से विदाई

संस्थान को जब समग्र रूप से परिभाषित करने का प्रयास करते हैं तो पाते हैं कि उसके समस्त सदस्य जो उसकी गतिविधियों को मूर्त रूप देने में अपना योगदान देते हैं, उसके साझीदार, उसकी इमारत, स्थान आदि सब मिलाकर इसकी पहचान है। एक इकाई के रूप में परिवार की उन्नति की परिधि में उस परिवार के सदस्यों की मुख्य भूमिका रहती है। आज आईआईएफटी अग्रणी बिजनेस स्कूलों में से एक है जिसका श्रेय इसके परिवार के पूर्व एवं वर्तमान सदस्यों अर्थात छात्र, संकाय सदस्य, अधिकारियों व कर्मचारियों को जाता है। वर्ष 2018–19 के दौरान इस परिवार के कुछ सदस्य अपना सेवाकाल पूरा करते हुए सेवानिवृत्त हुए हैं, जिन्होंने अपने जीवन का अमूल्य समय देकर संस्थान की उत्तरोत्तर उन्नति में अपना योगदान दिया है। हम सभी इन सदस्यों के समृद्ध व मंगलमय जीवन की कामना करते हुए अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

सेवानिवृत्त संस्थान सदस्य

श्री रामसिंह मीना
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
24.01.1983 – 31.07.2018

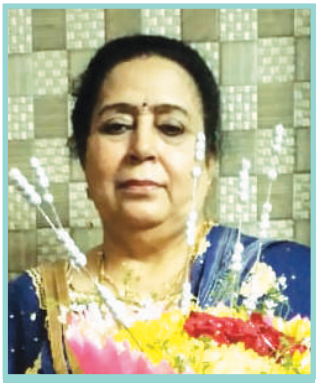

श्रीमती जसबीर ऑबराय
सहायक
29.11.1983–30.11.2018

श्रीमती शकुंतला अरोड़ा
वरिष्ठ निजी सहायक
07.11.1981 – 31.12.2018

श्रीमती राज रानी
वरिष्ठ निजी सहायक
01.12.1981 – 28.02.2018

भारत सरकार
गृह मंत्रालय

भारत के संविधान में राजभाषा से संबंधित प्रावधान

अध्याय–1: संघ की भाषा

अनुच्छेद 120:	**संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा –**
1.	भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा परंतु, यथास्थिति, राज्य सभा का सभापति या लोक सभा का अध्यक्ष अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो हिंदी में या अंग्रेजी में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृ–भाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा।
2.	जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो "या अंग्रेजी में" शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो।
अनुच्छेद 210:	**विधान–मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा –**
1.	भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, राज्य के विधान–मंडल में कार्य राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं में या हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा परंतु, यथास्थिति, विधान सभा का अध्यक्ष या विधान परिषद का सभापति अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो पूर्वोक्त भाषाओं में से किसी भाषा में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा।
2.	जब तक राज्य का विधान–मंडल विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो "या अंग्रेजी में" शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो : परंतु हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय और त्रिपुरा राज्यों के विधान–मंडलों के संबंध में, यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा, मानो इसमें आने वाले "पंद्रह वर्ष" शब्दों के स्थान पर "पच्चीस वर्ष" शब्द रख दिए गए हों: परंतु यह और कि अरूणाचल प्रदेश, गोवा और मिजोरम राज्यों के विधान–मंडलों के संबंध में यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले "पंद्रह वर्ष" शब्दों के स्थान पर "चालीस वर्ष" शब्द रख दिए गए हों ।
अनुच्छेद 343:	**संघ की राजभाषा –**
1.	संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा।
2.	खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था: परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

3.	इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात, विधि द्वारा
	क) अंग्रेजी भाषा का, या ख) अंकों के देवनागरी रूप का, ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।
अनुच्छेद 344:	**राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति –**
1.	राष्ट्रपति, इस संविधान के प्रारंभ से पांच वर्ष की समाप्ति पर और तत्पश्चात ऐसे प्रारंभ से दस वर्ष की समाप्ति पर, आदेश द्वारा, एक आयोग गठित करेगा जो एक अध्यक्ष और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे अन्य सदस्यों से मिलकर बनेगा जिनको राष्ट्रपति नियुक्त करे और आदेश में आयोग द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया परिनिश्चित की जाएगी।
2.	आयोग का यह कर्तव्य होगा कि वह राष्ट्रपति को–– क) संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग, ख) संघ के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग पर निर्बंधनों, ग) अनुच्छेद 348 में उल्लिखित सभी या किन्हीं प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा, घ) संघ के किसी एक या अधिक विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने वाले अंकों के रूप, ड.) संघ की राजभाषा तथा संघ और किसी राज्य के बीच या एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच पत्रादि की भाषा और उनके प्रयोग के संबंध में राष्ट्रपति द्वारा आयोग को निर्देशित किए गए किसी अन्य विषय, के बारे में सिफारिश करे।
3.	खंड (2) के अधीन अपनी सिफारिशें करने में, आयोग भारत की औद्योगिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नति का और लोक सेवाओं के संबंध में अहिंदी भाषी क्षेत्रों के व्यक्तियों के न्यायसंगत दावों और हितों का सम्यक ध्यान रखेगा।
4.	एक समिति गठित की जाएगी जो तीस सदस्यों से मिलकर बनेगी जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे और दस राज्य सभा के सदस्य होंगे जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों और राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।
5.	समिति का यह कर्तव्य होगा कि वह खंड (1) के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों की परीक्षा करे और राष्ट्रपति को उन पर अपनी राय के बारे में प्रतिवेदन दे।
6.	अनुच्छेद 343 में किसी बात के होते हुए भी, राष्ट्रपति खंड (5) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात उस संपूर्ण प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश दे सकेगा।
अध्याय–2:	**प्रादेशिक भाषाएं**
अनुच्छेद 345:	**राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं –**
	अनुच्छेद 346 और अनुच्छेद 347 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, किसी राज्य का विधान–मंडल, विधि द्वारा, उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से किसी एक या अधिक भाषाओं को या हिंदी को उस राज्य के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा या भाषाओं के रूप में अंगीकार कर सकेगा: परंतु जब तक राज्य का विधान–मंडल, विधि द्वारा, अन्यथा उपबंध न करे तब तक राज्य के भीतर उन शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका इस संविधान के प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था।

अनुच्छेद 346:	**एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा –**
	संघ में शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने के लिए तत्समय प्राधिकृत भाषा, एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच तथा किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा होगी : परंतु यदि दो या अधिक राज्य यह करार करते हैं कि उन राज्यों के बीच पत्रादि की राजभाषा हिंदी भाषा होगी तो ऐसे पत्रादि के लिए उस भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।
अनुच्छेद 347:	**किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध –**
	यदि इस निमित्त मांग किए जाने पर राष्ट्रपति का यह समाधान हो जाता है कि किसी राज्य की जनसंख्या का पर्याप्त भाग यह चाहता है कि उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राज्य द्वारा मान्यता दी जाए तो वह निदेश दे सकेगा कि ऐसी भाषा को भी उस राज्य में सर्वत्र या उसके किसी भाग में ऐसे प्रयोजन के लिए, जो वह विनिर्दिष्ट करे, शासकीय मान्यता दी जाए।
अध्याय–3:	**उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि की भाषा**
अनुच्छेद 348:	**उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा–**
1.	इस भाग के पूर्वगामी उपबंधों में किसी बात के होते हुए भी, जब तक संसद् विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक–– क) उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियां अंग्रेजी भाषा में होंगी, ख) i. संसद के प्रत्येक सदन या किसी राज्य के विधान–मंडल के सदन या प्रत्येक सदन में पुरःस्थापित किए जाने वाले सभी विधेयकों या प्रस्तावित किए जाने वाले उनके संशोधनों के, ii. संसद या किसी राज्य के विधान–मंडल द्वारा पारित सभी अधिनियमों के और राष्ट्रपति या किसी राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित सभी अध्यादेशों के, और iii. इस संविधान के अधीन अथवा संसद या किसी राज्य के विधान–मंडल द्वारा बनाई गई किसी विधि के अधीन निकाले गए बनाए गए सभी आदेशों, नियमों, विनियमों और उपविधियों के, प्राधिकृत पाठ अंग्रेजी भाषा में होंगे।
2.	खंड (1) के उपखंड (क) में किसी बात के होते हुए भी, किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से उस उच्च न्यायालय की कार्यवाहियों में, जिसका मुख्य स्थान उस राज्य में है, हिन्दी भाषा का या उस राज्य के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाली किसी अन्य भाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगाः परंतु इस खंड की कोई बात ऐसे उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए किसी निर्णय, डिक्री या आदेश को लागू नहीं होगी।
3.	खंड (1) के उपखंड (ख) में किसी बात के होते हुए भी, जहां किसी राज्य के विधान–मंडल ने, उस विधान–मंडल में पुरःस्थापित विधेयकों या उसके द्वारा पारित अधिनियमों में अथवा उस राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित अध्यादेशों में अथवा उस उपखंड के पैरा (iv) में निर्दिष्ट किसी आदेश, नियम, विनियम या उपविधि में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा से भिन्न कोई भाषा विहित की है वहां उस राज्य के राजपत्र में उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से प्रकाशित अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद इस अनुच्छेद के अधीन उसका अंग्रेजी भाषा में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

अनुच्छेद 349:	**भाषा से संबंधित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया –**
	इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि के दौरान, अनुच्छेद 348 के खंड (1) में उल्लिखित किसी प्रयोजन के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा के लिए उपबंध करने वाला कोई विधेयक या संशोधन संसद के किसी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी के बिना पुरःस्थापित या प्रस्तावित नहीं किया जाएगा और राष्ट्रपति किसी ऐसे विधेयक को पुरःस्थापित या किसी ऐसे संशोधन को प्रस्तावित किए जाने की मंजूरी अनुच्छेद 344 के खंड (1) के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों पर और उस अनुच्छेद के खंड (4) के अधीन गठित समिति के प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात ही देगा, अन्यथा नहीं।
अध्याय–4:	**विशेष निदेश**
अनुच्छेद 350:	**व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा –**
	प्रत्येक व्यक्ति किसी व्यथा के निवारण के लिए संघ या राज्य के किसी अधिकारी या प्राधिकारी को, यथास्थिति, संघ में या राज्य में प्रयोग होने वाली किसी भाषा में अभ्यावेदन देने का हकदार होगा।
अनुच्छेद 350	**(क) : प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएं –**
	प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषाई अल्पसंख्यक–वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा और राष्ट्रपति किसी राज्य को ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह ऐसी सुविधाओं का उपबंध सुनिश्चित कराने के लिए आवश्यक या उचित समझता है।
अनुच्छेद 350	**(ख) : भाषाई अल्पसंख्यक–वर्गों के लिए विशेष अधिकारी –**
1.	भाषाई अल्पसंख्यक–वर्गों के लिए एक विशेष अधिकारी होगा जिसे राष्ट्रपति नियुक्त करेगा।
2.	विशेष अधिकारी का यह कर्त्तव्य होगा कि वह इस संविधान के अधीन भाषाई अल्पसंख्यक–वर्गों के लिए उपबंधित रक्षोपायों से संबंधित सभी विषयों का अन्वेषण करे और उन विषयों के संबंध में ऐसे अंतरालों पर जो राष्ट्रपति निर्दिष्ट करे, राष्ट्रपति को प्रतिवेदन दे और राष्ट्रपति ऐसे सभी प्रतिवेदनों को संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाएगा और संबंधित राज्यों की सरकारों को भिजवाएगा।
अनुच्छेद 351:	**हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश –**
	संघ का यह कर्त्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द–भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति सदस्य

1	प्रोफेसर मनोज पंत, निदेशक एवं अध्यक्ष, वि.रा.भा.का. समिति	अध्यक्ष
2	डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता, कुलसचिव	सदस्य
3	श्री गौरव गुलाटी, उप–कुलसचिव	सदस्य
4	डॉ. नितिन सेठ, आचार्य	सदस्य
5	श्री बिमल पंडा, प्रणाली प्रबंधक	सदस्य
6	डॉ. आर.पी. शर्मा, सह–आचार्य – कोलकाता सेंटर	सदस्य
7	श्री हरकीरत सिंह, कॉर्पोरेट नियोजन सलाहकार	सदस्य
8	श्री पीताम्बर बेहेरा, वरिष्ठ वित्त अधिकारी	सदस्य
9	श्री भुवन चन्द्र, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी	सदस्य
10	श्री देशराज, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी	सदस्य
11	प्रतिनिधि, वाणिज्य मंत्रालय	सदस्य
12	प्रतिनिधि, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय	सदस्य
13	श्रीमती दीपा पी.जी., वित्त अधिकारी	सदस्य
14	श्रीमती नलिनी मेशराम, प्रशासनिक अधिकारी	सदस्य
15	श्री बी. प्रसन्नाकुमार, प्रशासनिक अधिकारी	सदस्य
16	श्रीमती मीनाक्षी सक्सेना, प्रशासनिक अधिकारी	सदस्य
17	श्रीमती अमीता आनंद, सहायक पुस्तकालयाध्यक्षा	सदस्य
18	श्रीमती कविता शर्मा, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
19	श्रीमती सुमीता मारवाह, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
20	श्री अनिल कुमार मीणा, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
21	श्रीमती ललिता गुप्ता, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
22	श्री प्रदीप कुमार खन्ना, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
23	श्री द्वैपायन ऐश, अनुभाग अधिकारी – कोलकाता सेंटर	सदस्य
24	श्री चिरंजी लाल, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
25	श्रीमती मोहनी मदान, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
26	श्री गौरव गुप्ता, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
27	श्री करूण दुग्गल, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
28	श्री जितेन्द्र सक्सेना, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
29	श्री राकेश कुमार ओझा, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
30	श्री राहुल कपूर, अनुभाग प्रभारी	सदस्य
31	श्री राजेन्द्र प्रसाद, हिंदी अधिकारी	सदस्य सचिव

www.iift.edu

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)
बी–21, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली–110016
फोन : +91-11-39147200, 201, 202, 203, 204, 205

कोलकाता परिसर :
1583 **मदुराहा, चौबघा रोड, वार्ड नंबर 108, बरो XII कोलकाता** 700 107
फोन : 033-24195700, 24195900, 24432453
वेबसाइट : www.iift.edu

डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता, कुलसचिव, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, नई दिल्ली
के लिए I'M WORLD द्वारा मुद्रित व प्रकाशित